मासिक

शिविरा

पत्रिका

वर्ष : 55 | अंक : 9 | मार्च, 2015 | पृष्ठ : 52 | मूल्य : ₹10

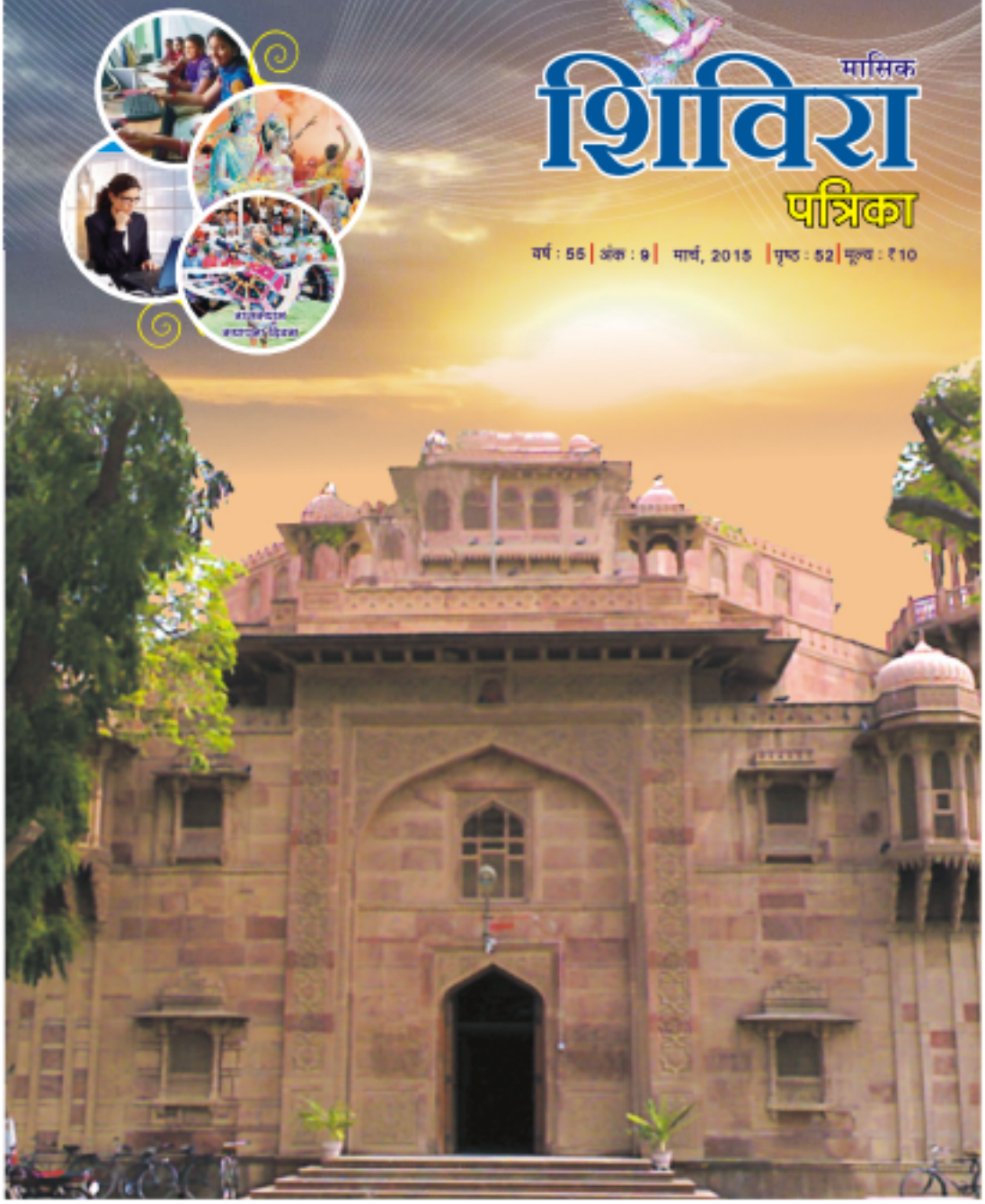

मासिक

शिविरा पत्रिका

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते –श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

वर्ष : 55 | अंक : 9 | फाल्गुन-चैत्र २०७१-७२ | मार्च, 2015

प्रधान सम्पादक
सुवालाल

वरिष्ठ सम्पादक
सन्तोष कुमार

सह सम्पादक
मुकेश व्यास
गोमाराम जीनगर

प्रकाशन सहायक
रमेश व्यास

मूल्य : ₹ 10

वार्षिक चंदा दर व शर्तें

- शिक्षकों/लिपिकों के लिए ₹ 50
- संस्थाओं/विद्यालयों/अन्य व्यक्तियों के लिए ₹ 100
- मनीऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट/पोस्टलऑर्डर **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय हैं।
- चैक स्वीकार्य नहीं है।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।
- नवीनीकरण हेतु चंदा राशि कृपया दो माह पूर्व भिजवाएं।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक
शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
फैक्स : 0151-2201861
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से **शिक्षा विभाग राजस्थान** का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **–वरिष्ठ संपादक**

इस अंक में

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

- लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हों 5

आलेख

- मन की बात 6
  (माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विशेष प्रसारण का अविकल रूप)
- लोक आस्था का लोकप्रिय त्योंहार:रामनवमी 10
  शुभम जादौन
- रंगों का पर्व : होली 12
  विजय शंकर आचार्य
- महिला केरियर में सफलताओं के कई रंग 14
  रामगोपाल राही
- विकास यात्रा : वैदिक युग से अब तक 17
  डॉ. सुदेश शर्मा
- अजन्मी पुत्री का माँ के नाम पत्र 19
  शुभलक्ष्मी माहेश्वरी
- बड़े व्यक्तियों के काम करने का तरीका 19
  सांवलाराम 'नामा'
- ध्यान और अभ्यास की जननी है एकाग्रता 20
  संग्राम सिंह सोढ़ा
- स्वस्थ जीवन के सरल नियम 21
  बिग्रेडियर करणसिंह चौहान
- सुधार हेतु सजा प्रभावी हल नहीं है 32
  रूपनारायण काबरा
- विद्यालयी शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय आईसीटी पुरस्कार 33
  हरि कृष्ण आर्य
- सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 35
  संजय सेंगर

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

- मत्स्यांचल की काशी अलवर 41
  नरेश शर्मा

स्तम्भ

- शिविरा पंचांग 18
- आदेश-परिपत्र 23-31
- विद्यालय प्रसारण 37
- शाला प्रांगण से 40
- चतुर्दिक समाचार 48
- हमारे भामाशाह 49

इस माह का गीत

- चले निरन्तर साधना 34

लेखा स्तम्भ

- नियुक्तियों का संयोजन-दोहरा प्रबन्ध 38
- कार्मिकों से सम्बन्धित अवकाश 39

पुस्तक समीक्षा 45-47

- रचना का पहला चरण : हरीश भादाणी
  समीक्षक : सुमन सिंह
- प्रणय गाथा : डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर
  समीक्षक : सतीश चन्द्र श्रीमाली
- थारी-म्हारी अर उणां री बातां : पुष्पलता कश्यप
  समीक्षक : डॉ. चांदकौर जोशी
- आखर री रूह : श्रीलाल जोशी
  समीक्षक : डॉ. आईदान सिंह भाटी

प्रतिध्वनि

- हीरा जनम अमोल है, कौड़ी बदले जाए 50

आवरण :
अविनाश कुमावत, जयपुर
मो. 09261355185

▼ चिन्तन

''जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें वही वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है।''

–स्वामी विवेकानन्द

पाठकों की बात

- 'दिशाकल्प' के तहत श्रीमान निदेशक महोदय हर मास महत्वपूर्ण बात कहकर शिविरा के उद्देश्य को सार्थक करते हैं। फरवरी अंक में विज्ञान विषय की सुविधा बढ़ाने का जिक्र करते हुए विषय लेने की जो मूक प्रेरणा दी है वह प्रेरणास्पद है। 'दृष्टि-संयम के चरितार्थ' डॉ. दाऊदयाल गुप्ता के आलेख में वर्तमान परिवेश की आवश्यकता को इंगित कर अनेक उदाहरणों के माध्यम से छात्रों की मानसिकता परिवर्तित करने का श्रेष्ठतम प्रयास किया है। 'आनन्द महल बनावे' हिन्दी व्याकरण के तहत श्री बालकृष्ण शर्मा ने छात्र ही नहीं अध्यापकों को भी लाभप्रद सामग्री दी है, जो सराहनीय है। पत्रिका आगामी अंकों में त्यौहार और पर्व पर श्रेष्ठ सामग्री प्रकाशित कर लाभान्वित करती रहेगी, यही हमारी चिर अभिलाषा है।

–स्नेहलता, भरतपुर
राज.एस.बी.के.बा.उ.मा. वि., भरतपुर

- शिविरा पत्रिका का फरवरी 2015 अंक प्राप्त हुआ। वरिष्ठ सम्पादक श्री ओम प्रकाश सारस्वत का 'गाँधी का रामराज्य और राम का चरित्र' में शिक्षा और जीवन निर्वाह दोनों महत्वपूर्ण हैं तथा दोनों पवित्र होने चाहिए। राम उपदेशक नहीं शिक्षक हैं उनके आदर्शों का अनुसरण करना चाहिए। श्री सुभाष चन्द्र कस्वां का लेख 'विज्ञान और अध्यात्म' में विज्ञान व धर्म दोनों में सन्तुलन व सहयोग बना रहेगा तथा विज्ञान हमेशा धर्म का उन्नायक रहा है, दी गई जानकारी मनन योग्य है। हमारी सांस्कृतिक धरोहर श्री खाटूश्याम जी मन्दिर, सीकर राष्ट्रीय स्तर पर विशेष पहचान रखता है, अच्छा लगा। सीकर जिले के दर्शनीय स्थलों की जानकारी प्रशंसनीय है। सम्पादक मण्डल को साधुवाद।

–मानसिंह कस्वां, से.नि. प्रधानाचार्य
दोबड़ा (झुन्झुनूं)

- शिविरा फरवरी 2015 के अंक में दिशाकल्प 'जय विज्ञान जय-जय विज्ञान' में निदेशक महोदय ने विज्ञान विषय की प्रासंगिकता एवं वर्तमान युग में विज्ञान की हमारे जीवन में उपयोगिता बतलाई है। राष्ट्रीय विज्ञान दिवस भारत के स्वर्णिम दिवस के रूप में याद किया जाता है। जब भारत माँ के महान सपूत डॉ. सी.वी. रमन ने अपने रमन प्रभाव की खोज कर विज्ञान के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की श्रेष्ठता स्थापित की थी। डॉ. रमन के समर्पण एवं प्रतिबद्धता को याद करके भारत के विद्यार्थियों को विज्ञान के क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता स्थापित कर पूरे विश्व में इसका डंका बजवाना चाहिए। विज्ञान के माध्यम से ही भारत विश्व के विकसित देशों में शुमार हो सकेगा। कुल मिलाकर शिविरा का यह अंक विज्ञान को समर्पित रहा।

–देवकीनन्दन शर्मा, भगेगा (सीकर)

- शिविरा का फरवरी 2015 का अंक 28 फरवरी-राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के सन्दर्भ में निदेशक महोदय के 'दिशाकल्प' ''जय विज्ञान जय-जय विज्ञान'' व आवरण पृष्ठ विज्ञान सन्दर्भित चित्रों से सुशोभित अंक को चार चाँद लगा रहा है। विज्ञान सम्बन्धी आलेख भी इसे विज्ञान विशेषांक के रूप में प्रदर्शित कर रहे हैं। भारत रत्न डॉ. चन्द्रशेखर वेंकटरमन, सन्तों में वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी के प्रेरक जीवन प्रसंग छात्रों व शिक्षकों में वैज्ञानिक सोच व रुझान सृजित करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होंगे। प्रार्थना के स्वर देवी सरस्वती की प्रार्थना बसन्त पंचमी से पूर्णतः सम्बद्ध है। सीकर स्थित श्री खाटूश्यामजी के मन्दिर का संक्षिप्त विवरण व छाया चित्र अत्यन्त आकर्षक लगा। सुन्दरतम चयन के लिए सम्पादक मण्डल को साधुवाद।

–लियाकल अली खाँ, पूर्व जि.शि.अ.
भीमसर (झुन्झुनूं)

- शिविरा पत्रिका फरवरी 2015 का अंक पढ़ने को प्राप्त हुआ। निदेशक महोदय के दिशाकल्प में वर्णित विचार सराहनीय हैं। वर्तमान युग में विज्ञान ही ज्ञान का महत्वपूर्ण आधार है। वर्तमान जीवन एवं शिक्षा के विकास में विज्ञान के योगदान पर निदेशक महादेय के विचार अत्यन्त प्रासंगिक लगे। 'नशा नाश का कारण' लेख मर्मस्पर्शी लगा। युवा वर्ग का नशे के प्रति झुकाव निश्चय ही गम्भीर और सोचनीय विषय है। ''विद्यालय जिसने रचा नूतन इतिहास'' लेख के माध्यम से विदित हुआ कि ग्रामीण अंचल के राजकीय विद्यालय ढाढंण (सीकर) ने प्रधानाचार्य श्री भागीरथ सिंह माहिच के सान्निध्य में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने की एक नूतन मिशाल पेश की है। सभी संस्था प्रधान एवं विद्यालयों को इसका अनुसरण करना चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश में सत्य और भारत रत्न वेंकटरमन पर आधारित लेख प्रेरणास्पद है। शिविरा के इस अंक ने अपनी विशिष्टता एवं सारगर्भिता को बनाये रखने का पूरा प्रयास किया है।

–विकास चौहान, व. अध्यापक
रा.मा.विद्यालय, छापाँवाली (श्रीगंगानगर)

सत्यमेव जयते

सुवालाल
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

दिशाकल्प : मेरा पृष्ठ

लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हों

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की वर्ष 2015 की परीक्षाएं इस माह शुरू होने जा रही हैं। बोर्ड परीक्षाओं के सुव्यवस्थित संचालन एवं व्यवस्थाओं के लिए सभी मण्डल एवं जिला शिक्षा अधिकारियों को दिशा-निर्देश जारी कर दिये गये हैं। मैं चाहूँगा कि सभी अध्यापक शत-प्रतिशत बोर्ड परीक्षा परिणाम के लक्ष्य प्राप्ति के उद्देश्य से विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ायेंगे।

मेरी अपेक्षा है कि बोर्ड परीक्षाओं से पूर्व बोर्ड परीक्षार्थियों के विदाई समारोह कार्यक्रम के साथ-साथ विद्यालयों में एस.डी.एम.सी./एस.एम.सी. की मीटिंग बुलाई जानी सुनिश्चित की जावे। मुझे खुशी होगी कि विद्यालयों के अध्यापक अपने विद्यालय, विषय अध्यापन एवं छात्रों के हित हेतु अब तक किये गये एवं आगामी समय में किये जाने वाले कार्यों के सम्बन्ध में मुझे अवगत करायेंगे। अध्यापकों की प्राथमिकताओं में 'शिक्षार्थ प्रवेश एवं सेवार्थ प्रस्थान' को प्रथम स्थान पर रखना है। **प्रत्येक अध्यापक को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ढांढण (सीकर) के प्रधानाचार्य श्री भागीरथसिंह माहिच बनकर ग्रामवासियों का दिल जीतकर विद्यार्थियों को शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में अग्रसर होकर कार्य करना है।**

रंगों का पर्व होली तथा रामनवमी व अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस भी इसी माह है। नारी एवं मातृ शक्ति की महिमा गान का दिन महिला दिवस एवं इसी माह मनाये जाने वाले राजस्थान दिवस के अवसर पर राजस्थान प्रदेश की शिक्षा, संस्कृति की गुणात्मक अभिवृद्धि एवं गौरवमयी इतिहास की अनुपम धरोहर के संरक्षण हेतु हर पल चिन्तन, मनन कर शिक्षक संवाद को शिक्षकों के लिए क्रियान्वित किया जायेगा।

भारतीय नववर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (तदनुसार 21 मार्च) विक्रम सम्वत् 2072 की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं!

(सुवालाल)

"प्रत्येक अध्यापक को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ढांढण (सीकर) के प्रधानाचार्य श्री भागीरथसिंह माहिच बनकर ग्रामवासियों का दिल जीतकर विद्यार्थियों को शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में अग्रसर होकर कार्य करना है।"

विशेष...

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विशेष प्रसारण का अविकल रूप

मन की बात

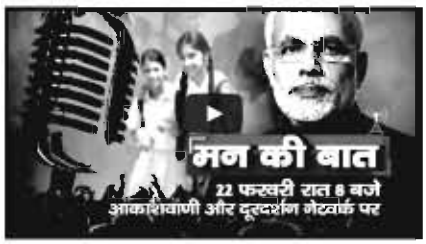

विद्यार्थी सकारात्मक चिन्तन के साथ अपनी श्रेष्ठतम उपलब्धि हासिल करें यह भाव प्रत्येक माता-पिता, अभिभावक और सच्चे शिक्षक का रहता है। आगे बढ़ने के लिए विद्यार्थी सत्रपर्यंत अध्ययन करते हुए परीक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण पड़ाव को पार कर निरन्तर प्रयासरत रहते हैं। इन्हीं प्रयासों को तब पंख लग जाते हैं जब कोई आत्मीय आगे आकर अपना वरद हस्त उन पर रखता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 22 फरवरी, 2015 को रात 8 बजे आकाशवाणी और दूरदर्शन से प्रसारित 'मन की बात' प्रसारण में बहुत ही आत्मीय, प्रेरक और मार्गदर्शक उद्बोधन देकर विद्यार्थियों को परीक्षा के डर से मुक्त कर अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए सरल, छोटे परन्तु अचूक सूत्र दिए हैं जो कि गुरुमंत्र की तरह हैं।

शिविरा को अपने पाठकों-शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रसारण का अविकल रूप प्रकाशित करने में अतीव प्रसन्नता हो रही है। -व.सं.

नमस्ते, युवा दोस्तो।

आज तो पूरा दिन भर शायद आपका मन क्रिकेट मैच में लगा होगा, एक तरफ परीक्षा की चिंता और दूसरी तरफ वर्ल्ड कप हो सकता है। आप छोटी बहन को कहते होंगे कि बीच-बीच में आकर स्कोर बता दे। कभी आपको ये भी लगता होगा, चलो यार छोड़ो, कुछ दिन के बाद होली आ रही है और फिर सर पर हाथ पटककर बैठे होंगे कि देखिये होली भी बेकार गयी, क्यों? एग्जाम आ गयी। होता है न! बिलकुल होता होगा, मैं जानता हूँ। खैर दोस्तो, आपकी मुसीबत के समय मैं आपके साथ आया हूँ। आपके लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। उस समय मैं आया हूँ। और मैं आपको कोई उपदेश देने नहीं आया हूँ। ऐसे ही हलकी-फुलकी बातें करने आया हूँ।

बहुत पढ़ लिया न, बहुत थक गए न! और माँ डांटती है, पापा डांटते है, टीचर डांटते हैं, पता नहीं क्या क्या सुनना पड़ता है। टेलीफोन रख दो, टीवी बंद कर दो, कंप्यूटर पर बैठे रहते हो, छोड़ो सबकुछ, चलो पढ़ो यही चलता है न घर में? साल भर यही सुना होगा, दसवीं में हो या बारहवीं में। और आप भी सोचते होंगे कि जल्द एग्जाम खत्म हो जाए तो अच्छा होगा, यही सोचते हो न? मैं जानता हूँ आपके मन की स्थिति को और इसीलिये मैं आपसे आज 'मन की बात' करने आया हूँ। वैसे ये विषय थोड़ा कठिन है।

आज के विषय पर माँ बाप चाहते होंगे कि मैं उन बातों को करूं, जो अपने बेटे को या बेटी को कह नहीं पाते हैं। आपके टीचर चाहते होंगे कि मैं वो बातें करूँ, ताकि उनके विद्यार्थी को वो सही बात पहुँच जाए और विद्यार्थी चाहता होगा कि मैं कुछ ऐसी बातें करूँ कि मेरे घर में जो प्रेशर है, वो प्रेशर कम हो जाए। मैं नहीं जानता हूँ, मेरी बातें किसको कितनी काम आयेंगी, लेकिन मुझे संतोष होगा कि चलिये मेरे युवा दोस्तों के जीवन के महत्वपूर्ण पल पर मैं उनके बीच था। अपने मन की बातें उनके साथ गुनगुना रहा था। बस इतना सा ही मेरा इरादा है और वैसे भी मुझे ये तो अधिकार नहीं है कि मैं आपको अच्छे एग्जाम कैसे जाएँ, पेपर कैसे लिखें, पेपर लिखने का तरीका क्या हो? ज्यादा से ज्यादा मार्क्स पाने की लिए कौन-कौन सी तरकीबें होती हैं? क्योंकि मैं इसमें एक प्रकार से बहुत ही सामान्य स्तर का विद्यार्थी हूँ। क्योंकि मैंने मेरे जीवन में किसी भी एग्जाम में अच्छे परिणाम प्राप्त नहीं किये थे। ऐसे ही मामूली जैसे लोग पढ़ते हैं वैसे ही मैं था और ऊपर से मेरी तो हैण्डराइटिंग भी बहुत ख़राब थी। तो शायद कभी-कभी तो मैं इसलिए भी पास हो जाता था, क्योंकि मेरे टीचर मेरा पेपर पढ़ ही नहीं पाते होंगे। खैर वो तो अलग बातें हो गयी, हलकी-फुलकी बातें हैं।

लेकिन मैं आज एक बात जरुर आपसे कहना चाहूँगा कि आप परीक्षा को कैसे लेते हैं, इस पर आपकी परीक्षा कैसी जायेगी, ये निर्भर करती है। अधिकतम लोगों को मैंने देखा है कि वो इसे अपने जीवन की एक बहुत बड़ी महत्वपूर्ण घटना मानते हैं और उनको लगता है कि नहीं, ये गया तो सारी दुनिया डूब जायेगी। दोस्तो, दुनिया ऐसी नहीं है। और इसलिए कभी भी इतना तनाव मत पालिये। हाँ, अच्छा परिणाम लाने का इरादा होना चाहिये। पक्का इरादा होना चाहिये, हौसला भी बुलंद होना

चाहिये। लेकिन परीक्षा बोझ नहीं होनी चाहिये, और न ही परीक्षा कोई आपके जीवन की कसौटी कर रही है। ऐसा सोचने की जरुरत नहीं है।

कभी-कभार ऐसा नहीं लगता कि हम ही परीक्षा को एक बोझ बना देते हैं घर में और बोझ बनाने का एक कारण जो होता है, ये होता है कि हमारे जो रिश्तेदार हैं, हमारे जो यार - दोस्त हैं, उनका बेटा या बेटी हमारे बेटे की बराबरी में पढ़ते हैं, अगर आपका बेटा दसवीं में है, और आपके रिश्तेदारों का बेटा दसवीं में है तो आपका मन हमेशा इस बात को कम्पेयर करता रहता है कि मेरा बेटा उनसे आगे जाना चाहिये, आपके दोस्त के बेटे से आगे होना चाहिये। बस यही आपके मन में जो कीड़ा है न, वो आपके बेटे पर प्रेशर पैदा करवा देता है। आपको लगता है कि मेरे अपनों के बीच में मेरे बेटे का नाम रोशन हो जाये और बेटे का नाम तो ठीक है, आप खुद का नाम रोशन करना चाहते हैं। क्या आपको नहीं लगता है कि आपके बेटे को इस सामान्य स्पर्धा में लाकर के आपने खड़ा कर दिया है? जिंदगी की एक बहुत बड़ी ऊँचाई, जीवन की बहुत बड़ी व्यापकता, क्या उसके साथ नहीं जोड़ सकते हैं? अड़ोस-पड़ोस के यार दोस्तों के बच्चों की बराबरी वो कैसी करता है! और यही क्या आपका संतोष होगा क्या? आप सोचिये? एक बार दिमाग में से ये बराबरी के लोगों के साथ मुकाबला और उसी के कारण अपने ही बेटे की जिंदगी को छोटी बना देना, ये कितना उचित है? बच्चों से बातें करें तो भव्य सपनों की बातें करें। ऊंची उड़ान की बातें करें। आप देखिए, बदलाव शुरू हो जाएगा।

दोस्तों एक बात है जो हमें बहुत परेशान करती है। हम हमेशा अपनी प्रगति किसी और की तुलना में ही नापने के आदी होते हैं। हमारी पूरी शक्ति प्रतिस्पर्धा में खप जाती है। जीवन के बहुत क्षेत्र होंगे, जिनमें शायद प्रतिस्पर्धा जरूरी होगी, लेकिन स्वयं के विकास के लिए तो प्रतिस्पर्धा उतनी प्रेरणा नहीं देती है, जितनी कि खुद के साथ हर दिन स्पर्धा करते रहना। खुद के साथ ही स्पर्धा कीजिये, अच्छा करने की स्पर्धा, तेज गति से करने की स्पर्धा, और ज्यादा करने की स्पर्धा, और नयी ऊंचाइयों पर पहुँचने की स्पर्धा आप खुद से कीजिये, बीते हुए कल से आज ज्यादा अच्छा हो इस पर मन लगाइए। और आप देखिये ये स्पर्धा की ताकत आपको इतना संतोष देगी, इतना आनंद देगी जिसकी आप कल्पना नहीं कर सकते। हम लोग बड़े गर्व के साथ एथलीट सेरगेई बूबका का स्मरण करते हैं। इस एथलीट ने पैंतीस बार खुद का ही रिकॉर्ड तोड़ा था। वह खुद ही अपने एग्जाम लेता था। खुद ही अपने आप को कसौटी पर कसता था और नए संकल्पों को सिद्ध करता था। आप भी उसी लिहाज से आगे बढ़ें तो आप देखिये आपको प्रगति के रास्ते पर कोई नहीं रोक सकता है।

युवा दोस्तो, विद्यार्थियों में भी कई प्रकार होते हैं। कुछ लोग कितनी ही परीक्षाएं क्यों न आए बड़े ही बिंदास होते हैं। उनको कोई परवाह ही नहीं होती और कुछ होते हैं जो परीक्षा के बोझ में दब जाते हैं। और कुछ लोग मुँह छुपा करके घर के कोने में किताबों में फंसे रहते हैं। इन सबके बावजूद भी परीक्षा परीक्षा है और परीक्षा में सफल होना भी बहुत आवश्यक है और मैं भी चाहता हूँ कि आप भी सफल हों लेकिन कभी-कभी आपने देखा होगा कि हम बाहरी कारण बहुत ढूँढ़ते हैं। ये बाहरी कारण हम तब ढूँढ़ते हैं, जब खुद ही कन्फ्यूज्ड हों। खुद पर भरोसा न हो, जैसे जीवन में पहली बार परीक्षा दे रहे हों। घर में कोई टीवी जोर से चालू कर देगा, आवाज आएगी, तो भी हम चिड़चिड़ापन करते होंगे, माँ खाने पर बुलाती होगी तो भी चिड़चिड़ापन करते होंगे। दूसरी तरफ अपने किसी यार-दोस्त का फ़ोन आ गया तो घंटे भर बातें भी करते होंगे । आप को नहीं लगता है आप स्वयं ही अपने विषय में ही कन्फ्यूज्ड हैं।

दोस्तो खुद को पहचानना ही बहुत जरुरी होता है। आप एक काम कीजिए बहुत दूर का देखने की जरुरत नहीं है। आपकी अगर कोई बहन हो, या आपके मित्र की बहन हो जिसने दसवीं या बारहवीं के एग्जाम दे रही हो, या देने वाली हो। आपने देखा होगा, दसवीं के एग्जाम हों बारहवीं के एग्जाम हों तो भी घर में लड़कियां माँ को मदद करती ही हैं। कभी सोचा है, उनके अंदर ये कौन सी ऐसी ताकत है कि वे माँ के साथ घर काम में मदद भी करती हैं और परीक्षा में लड़कों से लड़कियां आजकल बहुत आगे निकल जाती हैं। थोड़ा आप ओबजर्व कीजिये अपने अगल-बगल में। आपको ध्यान में आ जाएगा कि बाहरी कारणों से परेशान होने की जरुरत नहीं है। कभी-कभी कारण भीतर का होता है। खुद पर अविश्वास होता है न तो फिर आत्मविश्वास क्या काम करेगा? और इसलिए मैं हमेशा कहता हूँ जैसे-जैसे आत्मविश्वास का अभाव होता है, वैसे वैसे अंधविश्वास का प्रभाव बढ़ जाता है। और फिर हम अन्धविश्वास में बाहरी कारण ढूंढते रहते हैं। बाहरी कारणों के रास्ते खोजते रहते हैं। कुछ तो विद्यार्थी ऐसे होते हैं जिनके लिए हम कहते हैं आरम्भीशुरा। हर दिन एक नया विचार, हर दिन एक नई इच्छा, हर दिन एक नया संकल्प और फिर उस संकल्प की बाल मृत्यु हो जाती है, और हम वहीं के वहीं रह जाते हैं। मेरा तो साफ़ मानना है दोस्तो बदलती हुई इच्छाओं को लोग तरंग कहते हैं। हमारे साथी यार-दोस्त, अड़ोसी-पड़ोसी, माता-पिता मजाक उड़ाते हैं और इसलिए मैं कहूँगा, इच्छाएं स्थिर होनी चाहिये और जब इच्छाएं स्थिर होती हैं, तभी तो संकल्प बनती हैं और संकल्प बाँझ नहीं हो सकते। संकल्प के साथ पुरुषार्थ जुड़ता है। और जब पुरुषार्थ जुड़ता है तब संकल्प सिद्धि बन जाता है। और इसीलिए तो मैं कहता हूँ कि **इच्छा प्लस स्थिरता इज़-इक्वल टू संकल्प। संकल्प प्लस पुरुषार्थ इज-इक्वल टू सिद्धि।** मुझे विश्वास है कि आपके जीवन यात्रा में भी सिद्धि आपके चरण चूमने आ जायेगी। अपने आप को खपा दीजिये। अपने संकल्प के लिए खपा दीजिये और संकल्प सकारात्मक रखिये। किसी से आगे जाने की मत सोचिये। खुद जहां थे वहां से आगे जाने के लिए सोचिये। और इसलिए रोज अपनी जिंदगी को कसौटी पर कसता रहना है उसके लिए कितनी ही बड़ी कसौटी क्यों न आ जाए कभी कोई संकट नहीं आता है और दोस्तो कोई अपनी कसौटी क्यों करे? कोई हमारे एग्जाम क्यों ले? आदत डालो न। हम खुद ही हमारे एग्जाम लेंगे। हर दिन हमारी परीक्षा लेंगे। देखेंगे, मैं कल था वहां से आज आगे गया कि नहीं गया। मैं कल था वहां से आज ऊपर गया कि नहीं। मैंने कल जो पाया था उससे ज्यादा आज पाया कि नहीं पाया। हर दिन हर पल अपने आपको कसौटी पर कसते रहिये। फिर कभी जिन्दगी में कसौटी, कसौटी लगेगी ही नहीं। हर कसौटी आपको खुद को कसने का अवसर बन जायेगी और जो खुद को कसना जानता वो कसौटियों को भी पार कर जाता है और इसलिए जो जिन्दगी की परीक्षा से जुड़ता है उसके लिए क्लासरूम की परीक्षा बहुत मामूली होती है।

कभी आपने भी कल्पना नहीं कि होगी कि इतने अच्छे अच्छे काम

कर दिए होंगे। जरा उसको याद करो, अपने आप विश्वास पैदा हो जाएगा। अरे वाह! आपने वो भी किया था, ये भी किया था? पिछले साल बीमार थी तब भी इतने अच्छे मार्क्स लाये थे। पिछली बार मामा के घर में शादी थी, वहां सप्ताह भर ख़राब हो गया था, तब भी इतने अच्छे मार्क्स लाये थे। अरे पहले तो आप छः घंटे सोते थे और पिछले साल आपने तय किया था कि नहीं नहीं अब की बार पांच घंटे सोऊंगा और आपने कर के दिखाया था। अरे यही तो है मोदी आपको क्या उपदेश देगा। आप अपने मार्गदर्शक बन जाइए। और भगवान् बुद्ध तो कहते थे अप्पःदीपो भवः।

मैं मानता हूँ, आपके भीतर जो प्रकाश है न उसको पहचानिए आपके भीतर जो सामर्थ्य है, उसको पहचानिए और जो खुद को बार-बार कसौटी पर कसता है वो नई-नई ऊंचाइयों को पार करता ही जाता है। दूसरा कभी-कभी हम बहुत दूर का सोचते रहते हैं। कभी-कभी भूतकाल में सोये रहते हैं। दोस्तो परीक्षा के समय ऐसा मत कीजिये। परीक्षा समय तो आप को वर्तमान में ही जीना अच्छा रहेगा। क्या कोई बैट्समैन पिछली बार कितनी बार जीरो में आऊट हो गया, इसके गीत गुनगुनाता है क्या? या ये पूरी सीरीज जीतूँगा या नहीं जीतूँगा, यही सोचता है क्या? मैच में उतरने के बाद बैटिंग करते समय सेंचुरी करके ही बाहर आऊँगा कि नहीं आऊँगा, ये सोचता है क्या? जी नहीं, मेरा मत है, अच्छा बैट्समैन उस बॉल पर ही ध्यान केन्द्रित करता है, जो बॉल उसके सामने आ रहा है। वो न अगले बॉल की सोचता है, न पूरे मैच की सोचता है, न पूरी सीरीज की सोचता है। आप भी अपना मन वर्तमान से लगा दीजिये। जीतना है तो उसकी एक ही जड़ी-बूटी है। वर्तमान में जियें, वर्तमान से जुड़ें, वर्तमान से जूझें। जीत आपके साथ साथ चलेगी।

मेरे युवा दोस्तो, क्या आप ये सोचते हैं कि परीक्षा आपकी क्षमता का प्रदर्शन करने के लिए होती है। अगर ये आपकी सोच है तो गलत है। आपको किसको अपनी क्षमता दिखानी है? ये प्रदर्शन किसके सामने करना है? अगर आप ये सोचें कि परीक्षा क्षमता प्रदर्शन के लिए नहीं, खुद की क्षमता पहचानने के लिए है। जिस पल आप अपने मन्त्र मानने लग जायेंगे आप पकड़ लेंगें न, आपके भीतर का विश्वास बढ़ता चला जाएगा और एक बार आपने खुद को जाना, अपनी ताकत को जाना तो आप हमेशा अपनी ताकत को ही खाद पानी डालते रहेंगे और वो ताकत एक नए सामर्थ्य में परिवर्तित हो जायेगी और इसलिए परीक्षा को आप दुनिया को दिखाने के लिए एक चुनौती के रूप में मत लीजिये, उसे एक अवसर के रूप में लीजिये। खुद को जानने का, खुद को पहचानने का, खुद के साथ जीने का यह एक अवसर है। जी लीजिये न दोस्तो।

दोस्तो मैंने देखा है कि बहुत विद्यार्थी ऐसे होते हैं जो परीक्षाओं के दिनों में नर्वस हो जाते हैं। कुछ लोगों का तो कथन इस बात का होता है कि देखो मेरी आज एग्जाम थी और मामा ने मुझे विश नहीं किया। चाचा ने विश नहीं किया, बड़े भाई ने विश नहीं किया। और पता नहीं उसका घंटा दो घंटा परिवार में यही डिबेट होता है, देखो उसने विश किया, उसका फ़ोन आया क्या, उसने बताया क्या, उसने गुलदस्ता भेजा क्या? दोस्तो इससे परे हो जाइए, इन सारी चीजों में मत उलझिए। ये सारा परीक्षा के बाद सोचना किसने विश किये किसने नहीं किया। अपने आप पर विश्वास होगा न तो ये सारी चीजें आयेंगी ही नहीं। दोस्तों मैंने देखा है कि ज्यादातर विद्यार्थी नर्वस हो जाते हैं। मैं मानता हूँ कि नर्वस होना कुछ लोगों के स्वभाव में होता है। कुछ परिवार का वातावरण ही ऐसा है। नर्वस होने का मूल कारण होता है अपने आप पर भरोसा नहीं है। ये अपने आप पर भरोसा कब होगा, एक अगर विषय पर आपकी अच्छी पकड़ होगी, हर प्रकार से मेहनत की होगी, बार-बार रिवीजन किया होगा। आपको पूरा विश्वास है हाँ हाँ इस विषय में तो मेरी मास्टरी है और आपने भी देखा होगा, पांच और सात सब्जेक्ट्स में दो तीन तो एजेंडा तो ऐसे होंगे जिसमें आपको कभी चिंता नहीं रहती होगी। नर्वसनेस कभी एक आध दो में आती होगी। अगर विषय में आपकी मास्टरी है तो नर्वसनेस कभी नहीं आयेगी।

आपने साल भर जो मेहनत की है न, उन किताबों को वो रात-रात आपने पढ़ाई की है आप विश्वास कीजिये वो बेकार नहीं जायेगी। वो आपके दिल-दिमाग में कहीं न कहीं बैठी है, परीक्षा की टेबल पर पहुँचते ही वो आयेगी। आप अपने ज्ञान पर भरोसा करो, अपनी जानकारियों पर भरोसा करो, आप विश्वास रखो कि आपने जो मेहनत की है वो रंग लायेगी और दूसरी बात है आप अपनी क्षमताओं के बारे में बड़े कॉंफिडेंट होने चाहिये। आपको पूरी क्षमता होनी चाहिये कि वो पेपर कितना ही कठिन क्यों न हो मैं तो अच्छा कर लूँगा। आपको कॉन्फिडेंस होना चाहिये कि पेपर कितना ही लम्बा क्यों न होगा में तो सफल रहूँगा या रहूँगी। कॉन्फिडेंस रहना चाहिये कि मैं तीन घंटे का समय है तो तीन घंटे में, दो घंटे का समय है तो दो घंटे में, समय से पहले मैं अपना काम कर लूँगा और हमें तो याद है शायद आपको भी बताते होंगे हम तो छोटे थे तो हमारे टीचर बताते थे जो सरल क्वेश्चन है उसको सबसे पहले ले लीजिये, कठिन को आखिर में लीजिये। आपको भी किसी न किसी ने बताया होगा और मैं मानता हूँ इसको तो आप ज़रूर पालन करते होंगे।

दोस्तो माई गोव पर मुझे कई सुझाव, कई अनुभव आए हैं । वो सारे तो मैं शिक्षा विभाग को दे दूंगा, लेकिन कुछ बातों का मैं उल्लेख करना चाहता हूँ!

मुंबई महाराष्ट्र के अर्णव मोहता ने लिखा है कि कुछ लोग परीक्षा को जीवन मरण का इशू बना देते हैं अगर परीक्षा में फेल हो गए तो जैसे दुनिया डूब गयी है। तो वाराणसी से विनीता तिवारी जी, उन्होंने लिखा है कि जब परिणाम आते हैं और कुछ बच्चे आत्महत्या कर लेते हैं, तो मुझे बहुत पीड़ा होती है, ये बातें तो सब दूर आपके कान में आती होंगी, लेकिन इसका एक अच्छा जवाब मुझे किसी और एक सज्जन ने लिखा है। तमिलनाडु से मिस्टर आर. कामत, उन्होंने बहुत अच्छे दो शब्द दिए है, उन्होंने कहा है कि स्टूडेंट्स Worrier मत बनिए, Warrior बनिए, चिंता में डूबने वाले नहीं, समरांगन में जूझने वाले होने चाहिए, मैं समझता हूँ कि सचमुच में हम चिंता में न डूबे, विजय का संकल्प ले करके आगे बढ़ना और ये बात सही है, जिंदगी बहुत लम्बी होती है, उतार चढाव आते रहते है, इससे कोई डूब नहीं जाता है, कभी कभी अनैच्छिक परिणाम भी आगे बढ़ने का संकेत भी देते हैं, नयी ताकत जगाने का अवसर भी देते हैं!

एक चीज़ मैंने देखी है कि कुछ विद्यार्थी परीक्षा खंड से बाहर निकलते ही हिसाब लगाना शुरू कर देते है कि पेपर कैसा गया, यार, दोस्त, माँ बाप जो भी मिलते हैं वो भी पूछते हैं भई आज का पेपर कैसा गया? मैं समझता हूँ कि आज का पेपर कैसा गया! बीत गयी सो बात गई,

प्लीज उसे भूल जाइए, मैं उन माँ बाप को भी प्रार्थना करता हूँ प्लीज अपने बच्चे को पेपर कैसा गया ऐसा मत पूछिए, बाहर आते ही उसको कह दें वाह! तेरे चेहरे पर चमक दिख रही है, लगता है बहुत अच्छा पेपर गया? वाह शाबाश, चलो चलो कल के लिए तैयारी करते हैं! ये मूड बनाइये और दोस्तों मैं आपको भी कहता हूँ, मान लीजिये आपने हिसाब किताब लगाया, और फिर आपको लगा यार ये दो चीज़े तो मैंने गलत कर दी, छः मार्क कम आ जायेंगे, मुझे बताइए इसका विपरीत प्रभाव, आपके दूसरे दिन के पेपर पर पड़ेगा कि नहीं पड़ेगा? तो क्यों इसमें समय बर्बाद करते हो? क्यों दिमाग खपाते हो? सारी एग्जाम समाप्त होने के बाद, जो भी हिसाब लगाना है, लगा लीजिये! कितने मार्क्स आएंगे, कितने नहीं आएंगे, सब बाद में कीजिये, परीक्षा के समय, पेपर समाप्त होने के बाद, अगले दिन पर ही मन केन्द्रित कीजिए, उस बात को भूल जाइए, आप देखिये आपका बीस पच्चीस प्रतिशत बर्डन यूं ही कम हो जाएगा।

मेरे मन में कुछ और भी विचार आते चले जाते हैं खैर मैं नहीं जानता कि अब तो परीक्षा का समय आ गया तो अभी वो काम आएगा। लेकिन मै शिक्षक मित्रों से कहना चाहता हूँ, स्कूल मित्रों से कहना चाहता हूँ कि क्या हम साल में दो बार हर टर्म में एक वीक का परीक्षा उत्सव नहीं मना सकते हैं, जिसमें परीक्षा पर व्यंग्य काव्यों का कवि सम्मलेन हो। कभी ऐसा नहीं हो सकता परीक्षा पर कार्टून स्पर्धा हो परीक्षा के ऊपर निबंध स्पर्धा हो परीक्षा पर वक्तोत्व प्रतिस्पर्धा हो, परीक्षा के मनोवैज्ञानिक परिणामों पर कोई आकर हमें लेक्चर दे, डिबेट हो, ये परीक्षा का हव्वा अपने आप ख़तम हो जाएगा। एक उत्सव का रूप बन जाएगा और फिर जब परीक्षा देने जाएगा विद्यार्थी तो उसको आखिरी मोमेंट से जैसे मुझे आज आपका समय लेना पड़ रहा है वो लेना नहीं पड़ता, वो अपने आप आ जाता और आप भी अपने आप में परीक्षा के विषय में बहुत ही और कभी कभी तो मुझे लगता है कि सिलेबस में ही परीक्षा विषय क्या होता है समझाने का क्लास होना चाहिये। क्योंकि ये तनावपूर्ण अवस्था ठीक नहीं है।

दोस्तो मैं जो कह रहा हूँ, इससे भी ज्यादा आपको कईयों ने कहा होगा! माँ बाप ने बहुत सुनाया होगा, मास्टर जी ने सुनाया होगा, अगर टयूशन क्लासेज में जाते होंगे तो उन्होंने सुनाया होगा, मैं भी अपनी बाते ज्यादा कह करके आपको फिर इसमें उलझने के लिए मजबूर नहीं करना चाहता, मैं इतना विश्वास दिलाता हूँ कि इस देश का हर बेटा, हर बेटी, जो परीक्षा के लिए जा रहे हैं, वे प्रसन्न रहे, आनंदमय रहे, हँसते खेलते परीक्षा के लिए जाएं!

आपकी ख़ुशी के लिए मैंने आपसे बातें की हैं, आप अच्छा परिणाम लाने ही वाले है, आप सफल होने ही वाले है, परीक्षा को उत्सव बना दीजिए, ऐसा मौज मस्ती से परीक्षा दीजिए और हर दिन अचीवमेंट का आनंद लीजिए, पूरा माहौल बदल दीजिये। माँ बाप, शिक्षक, स्कूल, क्लासरूम सब मिल करके कीजिए, देखिये, कसौटी को भी कसने का कैसा आनंद आता है, चुनौती को चुनौती देने का कैसा आनंद आता है, हर पल को अवसर में पलटने का क्या मजा होता है और देखिये दुनिया में हर कोई हर किसी को खुश नहीं कर सकता है!

मुझे पहले कविताएं लिखने का शौक था, गुजराती में मैंने एक कविता लिखी थी, पूरी कविता तो याद नहीं, लेकिन मैंने उसमें लिखा था, सफल हुए तो ईर्ष्या पात्र, विफल हुए तो टिका पात्र, तो ये तो दुनिया का चक्र है, चलता रहता है, सफल हो, किसी को पराजित करने के लिए नहीं, सफल हो, अपने संकल्पों को पार करने के लिए, सफल हो अपने खुद के आनंद के लिए, सफल हो अपने लिए जो लोग जी रहे हैं, उनके जीवन में खुशियाँ भरने के लिए, ये ख़ुशी को ही केंद्र में रख करके आप आगे बढ़ेंगे, मुझे विश्वास है दोस्तो! बहुत अच्छी सफलता मिलेगी, और फिर कभी, होली का त्यौहार मनाया कि नहीं मनाया, मामा के घर शादी में जा पाया कि नहीं जा पाया, दोस्तों की बर्थडे पार्टी में इस बार रह पाया कि नहीं रह पाया, क्रिकेट वर्ल्ड कप देख पाया कि नहीं देख पाया, सारी बातें बेकार हो जाएँगी, आप और एक नए आनंद को नयी खुशियों में जुड़ जायेंगे, मेरी आपको बहुत शुभकामना है, और आपका भविष्य जितना उज्ज्वल होगा, देश का भविष्य भी उतना ही उज्ज्वल होगा, भारत का भाग्य, भारत की युवा पीढ़ी बनाने वाली है, आप बनाने वाले हैं, बेटा हो या बेटी दोनों कंधे से कन्धा मिला करके आगे बढ़ने वाले हैं!

आइये, परीक्षा के उत्सव को आनंद उत्सव में परिवर्तित कीजिए, बहुत-बहुत शुभकामनाएं!

घोषणा-पत्र

(फार्म नं. 4)

शिविरा पत्रिका के स्वामित्व और अन्य विवरण, जो केन्द्रीय धारा 1956 के अन्तर्गत समाचार-पत्र के रजिस्ट्रेशन के लिए प्रकाशित करने आवश्यक हैं।

1.	प्रकाशन संस्थान	:	निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	मुद्रक	:	सुवालाल
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
4.	प्रकाशक	:	सुवालाल
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
5.	सम्पादक	:	सुवालाल
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

मैं, सुवालाल घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी में एवं विश्वास के साथ सत्य और वास्तविकता पर आधारित है।

(सुवालाल)
निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

रामनवमी विशेष

लोक आस्था का लोकप्रिय त्योंहार : रामनवमी

❒ शुभम जादौन

रामनवमी लोक आस्था का लोकप्रिय हिन्दू त्योंहार है। यह शुक्लपक्ष में हिन्दू चन्द्र वर्ष की चैत्र महिने के नौंवे दिन (नवमी) को मनाया जाता है। यह त्योंहार मर्यादा पुरुषोत्तम राम (भगवान विष्णु के अवतार) के जन्म के उपलक्ष में मनाया जाता है। यह दिन नौ दिवसीय चैत्र-नवरात्रि समारोह के समापन का भी प्रतीक है। रामनवमी का यह त्योंहार भारत में ही नहीं अपितु संसार के अन्य भागों में रहने वाले हिन्दु समुदाय के लोगों के द्वारा बेहद खुशी, उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है। अनेक राम भक्तगण इस अवसर पर व्रत एवं उपवास रखते हैं। ऐसा विश्वास है कि जो भक्तजन इस दिन व्रत करते हैं, भगवान राम उन्हें अपार सुख एवं सौभाग्य प्रदान करते हैं।

महाकाव्य रामायण के अनुसार, एक बार दशरथ नाम के राजा, अयोध्या पर राज्य करते थे, जिनके कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी नाम की तीन पत्नियां थीं। विवाह के लम्बे समय के उपरान्त भी जब राजा दशरथ को पुत्र की प्राप्ति नहीं हुई तो राजा के मन में बड़ी ग्लानि हुई कि उनके पुत्र नहीं है, यहां तक कि अयोध्या के लोग भी निराश हो गये क्योंकि उनके पास राजा दशरथ के बाद राज्य का उत्तराधिकारी नहीं था।

राजा तुरन्त ही गुरु वशिष्ठ के घर गये और चरणों में प्रणाम कर विनती की। राजा ने अपना सारा दुःख गुरु वशिष्ठ को सुनाया। गुरु वशिष्ठ जी ने उन्हें बहुत प्रकार से समझाया और कहा- राजन धीरज धरो, तुम्हारे चार पुत्र होंगे, जो तीनों लोकों में प्रसिद्ध और भक्तों के भय को हरने वाले होंगे।

अवधपुरी रघुकुल मनि राऊ।
वेद विदित तेहि दसरथ नाऊं।
एक बार भूपति मन माही।
भै गलानि मोरें सुत नाहीं
गुरु गृह गयउ तुरत महिपाला चरन
लागि कर विनय बिसाला।।
निज दुःख सुख सब गुरहि सुनायऊ।
कहि वसिष्ठ बहु विधि समुझायऊ।

धरहु धीर होइहहिं सुत चारि।
त्रिभुवन विदित भगत भय हारि।।

वशिष्ठजी ने शृंगी ऋषि को बुलवाया और उनसे शुभ पुत्र कामिष्ट यज्ञ करवाया। मुनि के भक्ति सहित आहुतियां देने पर अग्निदेव हाथ में चरू (हविष्यान्न, खीर) लिये प्रकट हुए और दशरथ से बोले- वशिष्ठ ने जो कुछ विचारा था, तुम्हारा वह सब काम सिद्ध हो गया है। हे राजन्! अब तुम जाकर इस हविष्यान्न (खीर) को जिसको जैसा उचित हो, वैसा भाग बनाकर बाँट दो। तदन्तर अग्निदेव सारी सभा को समझाकर अन्तर्धान हो गये। राजा परमानन्द से इतने मग्न हो गये कि उनके हृदय में हर्ष समाता नहीं था।

सृंगी रिषिहि वसिष्ठ बोलावा।
पुत्र काम सुभ जग्य करावा।
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें।
प्रगटे अगिनि चरु कर लीन्हे।।
जो बसिष्ठ कछु हृदय विचारा।
सकल काज भा सिद्ध तुम्हारा।
यह हबि बाँटि देहु नृप जाई।
जथा जोग जेहि भाग बनाई।।
तब अदृस्य भए पावक
सकल सभहि समुझाइ।
परमानन्द मगन नृप हरष न हृदयँ समाइ।।

उसी समय राजा ने अपनी सभी रानियों को बुलाया। राजा ने खीर का आधा भाग कौशल्या को दिया और शेष आधे के दो भाग किये। उनमें से एक भाग राजा ने कैकेयी को दिया। शेष जो बच रहा उसके फिर दो भाग कर राजा ने उसको कौशल्या और कैकेयी के हाथ पर रख कर (अर्थात उनकी अनुमति लेकर) उनका मन प्रसन्न करके सुमित्रा को दिया। कुछ दिनों के बाद इन तीन रानियों ने राजा दशरथ के पुत्र की कल्पना की। नौवें दिन चैत्र मास की नवमी को (हिन्दू कैलेण्डर में पहला माह) दोपहर में रानी कौशल्या ने भगवान राम को जन्म दिया, कैकेयी ने भरत को और सुमित्रा ने लक्ष्मण और शत्रुघ्न को जुड़वाँ बच्चों के रूप में जन्म दिया। यह दिन अयोध्या में खुशी के समारोह का दिन था। तब से यह दिन भक्तों द्वारा पावन पर्व के रूप में मनाया जाता है।

रामनवमी भारतवर्ष में मनाये जाने वाले सबसे प्राचीन त्यौहारों में से एक है। ऐसा कहा जाता है कि हिन्दूधर्म दुनिया का सबसे पुराना धर्म है। रामनवमी का सन्दर्भ कालिका पुराण में भी पाया जाता है। हिन्दू धर्म में रामनवमी पाँच प्रमुख पवित्र त्योंहारों में से एक माना जाता है। यह भी मान्यता है कि रामनवमी पर व्रत करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह वसन्त के मौसम का समय होता है जो चैत्र माह में नौवें दिन पड़ता है।

यह व्यापक रूप से शिव के भक्तों द्वारा भी मनाया जाता है। यह राम के नाम पर रामनवमी का दिन व्रत शुरु करने के लिए शुभ माना जाता है। व्रत का उद्देश्य देवता के विशेष उपकार हेतु पूछने के लिए नहीं होता लेकिन एक इन्सान के रूप में पूर्णता की तलाश करने के लिए होता है।

इस दिन भक्तगण विस्तृत पूजा प्रार्थना और पूरे दिन राम के नाम का 'जप' करते हैं। राम के मन्दिरों को विशेष रूप से सजाया जाता है। पूरे दिन अधिकांश मन्दिरों में सत्संग एवं भजन कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। रामायण पर साधु सन्तों द्वारा, प्रवचन दिये जाते हैं। नौ दिनों तक चलने वाले सभी कार्यक्रम रामनवमी पर समाप्त हो जाते हैं। भारत के लोग बड़ी खुशी और भक्ति के साथ रामनवमी के इस त्योंहार को मनाते हैं। अयोध्या, उज्जैन एवं रामेश्वरम की तरह राम से जुड़े पवित्र स्थान, रामनवमी के इस त्योंहार पर हजारों श्रद्धालुओं को आकर्षित करते

हैं। रामेश्वरम रामनाथस्वामी मन्दिर में पूजा करने से पहले समुद्र में नहाने की रस्म पूरी करनी पड़ती है। उत्तरभारत में अनेक स्थान पर इस त्योंहार के सम्बन्ध में मेजबानी मेलों का आयोजन किया जाता है तथा शानदार आतिशबाजी भी की जाती है।

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान को एक आदर्श पुत्र एक सहृदयपति, एक पराक्रमी राजा एवं भाई तथा एक महान पति के रूप में माना जाता है।

रामनवमी के दिन भगवान राम के सभी भक्तजन उन्हें खुश करने के लिए नाना विधि-विधान से पूजा अर्चना करते हैं। पारिवारिक सभी सदस्य भी भगवान राम के पावन जन्मदिन का जश्न मनाने के लिए एक साथ मिलकर पूजा करते हैं। भगवान राम, लक्ष्मण सीता और हनुमान की मूर्तियों अथवा चित्र स्थापना के साथ इस दिन पूजा शुरू की जाती है। सभी देवी, देवताओं का पूजन घी, दीपक और सुगन्धित अगरबत्तियों से किया जाता है। फिर उन पर रोली, जल, फूल, सिन्दुर, बेल और शंख इत्यादि चढ़ाये जाते हैं। मिठाइयों का भोग लगाया जाता हैं। अन्त में आरती की जाती है। पूजा में उपस्थित सभी भक्तों को भगवान राम से प्राप्त आशीर्वाद के रूप में पवित्र जल का छिड़का (छाँटा) दिया जाता है। परिवार की सबसे छोटी महिला सदस्य परिवार के सभी पुरुष सदस्यों को टीका लगाती है। अन्त में प्रसाद सभी भक्तों को वितरित किया जाता है।

इसके अलावा भजन एवं कीर्तन भी रामनवमी पूजा की एक महत्वपूर्ण रस्म है। रामभक्त, भजन और रामचरित मानस की चौपाइयाँ गाकर पूरे वातावरण को पवित्र एवं राम मय बना देते हैं। पुजारीगण उपवास करने वाले सभी भक्तों के लिए भगवान राम के जन्म की कहानी सुनाते हैं। पवित्र मन्त्र एवं रामनाम के सतत जप वातावरण को और अधिक पवित्र बना देते हैं।

अनेक स्थानों पर रामनवमी के अवसर पर रथयात्रा अथवा रथ जुलूस भी निकाला जाता है। राम रथ भगवान राम सीता, लक्ष्मण और हनुमान की मूर्तियों से सजे होते हैं। रथ के पीछे-पीछे श्रद्धालुगण रामनाम का जप करते एवं भजन इत्यादि गाते हुए चलते हैं।

-लोहई हाउस, शिव कॉलोनी, सुभाषपुरा, बीकानेर
मो. 9460586780

राम हमारे प्राण

राम धर्म है राम संस्कृति राम जगत् कल्याण।
राम हमारे प्राण

राम बड़े दशरथ के नन्दन, रघुकुल गौरव राम।
राम श्याम वर्णा अतिसुन्दर, राजीव लोचन राम।
राम अवतरे राम शुभ करे राम अवध गुणगान।।

राम अथाह ज्ञान गुण सौरभ, त्याग तपस्या राम।
राम रमे सर्व जड़ चेतन, करुणासागर राम।
राम कृपालु राम दयालु, राम एक ही प्राण।।

राम विजय प्रतिरूप मनस्वी, शौर्य तेज बलराम।
राम अभय, निष्कंटक न्यायी, जन मन रंजन राम।।
राम भरे सुख, राम हरे दुख, राम सुनीति विधान।।

राम प्रेमघट अक्षय अनुपम शान्ति प्रदाता राम।
राम प्रगाढ़ मधुरता, निःश्चल, धीर, मनोहर राम।
राम सुदृष्टि राम सुसृष्टि राम सौम्य मुस्कान।।

राम देश की धरती के कण, रोम रोम में राम।
राम काज को कोई चुनौती नहीं सहेगा राम।
राम भक्ति से राम शक्ति पा ले राम के बाण।।

राम नाम अभिमंत्रित पूजा, विघ्न हरे प्रभु राम।
रामव्रती संकल्प सहारे, कर्म समर्पित राम।
राम न रुकते राम न झुकते राम ही मुक्ति विहान।।

राम अनादि तत्व चेतना, परम् ब्रह्म है राम।
राम रूप नारायण प्रगटे, धर मर्यादा राम।
राम सत्य है राम नित्य है राम अमर वरदान।।

राम बिम्ब प्रतिबिम्ब प्रभावी पुनः-प्रतिष्ठा राम।
राम शरण में धन्य धन्य हो, सकल चराचर राम।
राम गूँज अनुगूँज राम की, राम राम ही राम।।

(साभार भक्ति हिलोरें)

उत्सव-पर्व

रंगों का पर्व : होली

❒ विजय शंकर आचार्य

श्री विजय शंकर आचार्य अत्यन्त विनम्र, सहज और नेकदिल इन्सान हैं। आप निदेशालय में संयुक्त निदेशक (कार्मिक) माध्यमिक शिक्षा राजस्थान का कार्यभार सम्भाले हुए हैं। विभाग के प्रत्येक कार्य को तत्परता के साथ सम्पादित करने के साथ-साथ आप की पठन-पाठन और लेखन में भी गहरी रुचि है।

शिविरा के आग्रह पर 'रंगों का पर्व : होली' आलेख आपने शिविरा के सुधि पाठकों के लिए लिखा है।

होली भारत का अत्यंत प्राचीन पर्व है जो होली, होलिका या होलाक के नाम से मनाया जाता था। वसंत की ऋतु में हर्षोल्लास के साथ मनाए जाने के कारण इसे वसंतोत्सव और काम-महोत्सव भी कहा गया है। इतिहासकारों का मानना है कि आर्यों में भी इस पर्व का प्रचलन था लेकिन अधिकतर यह पूर्वी भारत में ही मनाया जाता था। इस पर्व का वर्णन अनेक पुरातन धार्मिक पुस्तकों में मिलता है। इनमें प्रमुख हैं, जैमिनी के पूर्व मीमांसा-सूत्र और कथा गाह्य सूत्र। नारद पुराण और भविष्य पुराण जैसे पुराणों की प्राचीन हस्तलिपियों और ग्रंथों में भी इस पर्व का उल्लेख मिलता है।

वसंत ऋतु में मनाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण भारतीय त्योंहार है। यह पर्व फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। रंगों का त्योंहार कहा जाने वाला यह पर्व पारंपरिक रूप से दो दिन मनाया जाता है। यह प्रमुखता से भारत तथा नेपाल में मनाया जाता है। यह त्योंहार कई अन्य देशों जिनमें अल्पसंख्यक हिन्दू लोग रहते हैं वहां भी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। पहले दिन को होलिका जलायी जाती है, जिसे होलिका दहन भी कहते है। दूसरे दिन, जिसे धुरड्डी, धुलेंडी, या धूरखेल या धूलिवंदन कहा जाता है, लोग एक दूसरे पर रंग, अबीर-गुलाल इत्यादि फेंकते हैं, ढोल बजा कर होली के गीत गाये जाते हैं घर-घर जा कर लोगों को रंग लगाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि होली के दिन लोग पुरानी कटुता को भूल कर गले मिलते हैं और फिर से मित्र बन जाते हैं। एक दूसरे को रंगने और गाने-बजाने का दौर दोपहर तक चलता है। इसके बाद स्नान कर के विश्राम करने के बाद नए कपड़े पहन कर शाम को लोग एक दूसरे के घर मिलने जाते हैं, गले मिलते हैं मिठाइयाँ खाते-खिलाते हैं एक दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं।

राग-रंग का यह लोकप्रिय पर्व वसंत का संदेशवाहक भी है। राग अर्थात संगीत और रंग तो इसके प्रमुख अंग हैं ही, पर इनको उत्कर्ष तक पहुँचाने वाली प्रकृति भी इस समय रंग-बिरंगे यौवन के साथ अपनी चरम अवस्था पर भी होती है। फाल्गुन माह में मनाए जाने के कारण इसे फाल्गुनी भी कहते हैं। होली का त्योंहार वसंत पंचमी से ही आरंभ हो जाता है। उसी दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है। इस दिन से फाग और धमाल का गाना प्रारंभ हो जाता है। खेतों में सरसों खिल उठती है। बाग-बगीचों में फूलों की आकर्षक छटा छा जाती है। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी और मनुष्य सब उल्लास से परिपूर्ण हो जाते हैं। खेतों में गेंहूँ की बालियाँ इठलाने लगती हैं। किसानों का हृदय खुशी से नाच उठता है। बच्चे-बूढ़े सभी व्यक्ति सब कुछ संकोच और रुढ़ियाँ भूलकर ढोलक झाँझ-मँजीरों की धुन के साथ नृत्य-संगीत व रंगों में डूब जाते हैं। चारों तरफ रंगों की फुहार फूट पड़ती है। होली के दिन आम्र मंजरी तथा चंदन को मिलाकर खाने का बड़ा माहात्म्य है।

होली के पर्व से अनेक कहानियां जुड़ी हुई हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध कहानी है प्रहलाद की। माना जाता है कि प्राचीन काल में हिरण्यकश्यप नाम का एक अत्यंत बलशाली असुर था। अपने बल के दर्प में वह स्वयं को ही ईश्वर मानने लगा था। उसने अपने राज्य में ईश्वर का नाम लेने पर ही पाबंदी लगा दी थी। हिरण्यकश्यप का पुत्र प्रहलाद ईश्वर का भक्त था। प्रहलाद की ईश्वर भक्ति से क्रुद्ध होकर हिरण्यकश्यप ने उसे अनेक कठोर दंड दिए, परंतु उसने ईश्वर की भक्ति का मार्ग न छोड़ा। हिरण्यकश्यप की बहन होलिका को वरदान प्राप्त था कि वह आग में भस्म नहीं हो सकती। हिरण्यकशिपु ने आदेश दिया कि होलिका प्रहलाद को गोद में लेकर आग में बैठे। आग में बैठने पर होलिका तो जल गई,प्रहलाद बच गया। ईश्वर भक्त प्रहलाद की याद में इस दिन होली जलाई जाती है। प्रतीक रूप से यह भी माना जाता है कि प्रहलाद का अर्थ आनंद होता है। वैर और उत्पीड़न की प्रतीक होलिका (जलाने की लकड़ी) जलती है और प्रेम तथा उल्लास का प्रतीक प्रहलाद (आनंद) अक्षुण्ण रहता है।

प्रहलाद की कथा के अतिरिक्त यह पर्व राक्षसी ढुंढी, राधा कृष्ण के रास और कामदेव के पुनर्जन्म से भी जुड़ा हुआ है। कुछ लोगों का मानना है कि होली में रंग लगाकर, नाच-गाकर लोग शिव के गणों का वेश धारण करते हैं तथा शिव की बारात का दृश्य बनाते हैं। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि भगवान श्रीकृष्ण ने इस दिन पूतना नामक राक्षसी का वध किया था। इसी खुशी में गोपियों और ग्वालों ने रासलीला की और रंग खेला था।

होली के पर्व की तरह इसकी परंपराएँ भी अत्यंत प्राचीन हैं और इसका स्वरूप और उद्देश्य समय के साथ बदलता रहा है। प्राचीन काल में यह विवाहित महिलाओं द्वारा घर की सुख समृद्धि के लिए मनाया जाता था और पूर्ण चंद्र की पूजा करने की परंपरा थी। वैदिक काल में इस पर्व को नवात्रेष्टि यज्ञ कहा जाता था। उस समय खेत के अधपके अन्न को यज्ञ में दान करके प्रसाद लेने का विधान समाज में व्याप्त था। अन्न को होला कहते हैं, इसी से इसका नाम होलिकोत्सव पड़ा। भारतीय ज्योतिष के अनुसार चैत्र सुदी प्रतिपदा के दिन से नववर्ष का भी आरंभ माना जाता है। इस उत्सव के बाद ही चैत्र महीने का आरंभ होता है। अतः यह पर्व नव संवत का आरंभ तथा वसंतागमन का प्रतीक भी है। इसी दिन प्रथम पुरुष मनु का जन्म हुआ था, इस कारण इसे मन्वादितिथि कहते हैं।

होलिका दहन

होली का पहला काम झंडा या डंडा गाड़ना होता है। इसे किसी सार्वजनिक स्थल या घर के अहाते में गाड़ा जाता है। इसके पास ही होलिका की अग्नि इकट्ठी की जाती है। होली से काफी दिन पहले से ही यह सब तैयारियां शुरू हो जाती हैं। पर्व का पहला दिन होलिका दहन कहलाता है। इस दिन चौराहों पर व जहाँ कहीं अग्नि के लिए लकड़ी एकत्र की गई होती है, वहाँ होली जलाई जाती है। इसमें लकड़ियाँ और उपले प्रमुख रूप से होते हैं। कई स्थलों पर होलिका में भरभोलिए जलाने की भी परंपरा है। भरभोलिए गाय के गोबर से बने ऐसे उपले होते हैं जिनके बीच में छेद होता है। इस छेद में मूँज की रस्सी डाल कर माला बनाई जाती है। एक माला में सात भरभोलिए होते हैं। होली में आग लगाने से पहले इस माला को भाइयों के सिर के ऊपर से सात बार घूमा कर फेंक दिया जाता है। रात को होलिका दहन के समय यह माला होलिका के साथ जला दी जाती है। इसका यह आशय है कि होली के साथ भाइयों पर लगी बुरी नजर भी जल जाए। लकड़ियों व उपलों से बनी इस होली का दोपहर से ही विधिवत पूजन आरंभ हो जाता है। घरों में बने पकवानों का यहाँ भोग लगाया जाता है। दिन ढलने पर ज्योतिषियों द्वारा निकाले मुहूर्त पर होली का दहन किया जाता है। इस आग में नई फसल की गेहूँ की बालियों और चने के होले को भी भूना जाता है। होलिका दहन समाज की समस्त बुराइयों के अंत का प्रतीक है। यह बुराइयों पर अच्छाइयों की विजय का सूचक है। गाँवों में लोग देर रात तक होली के गीत गाते हैं तथा नाचते हैं।

सार्वजनिक होली मिलन

होली से अगला दिन धूलिवंदन कहलाता है। इस दिन लोग रंगों से खेलते हैं। सुबह होते ही सब अपने मित्रों और रिश्तेदारों से मिलने निकल पड़ते हैं। गुलाल और रंगों से सबका स्वागत किया जाता है। लोग अपनी ईर्ष्या-द्वेष की भावना भुलाकर प्रेमपूर्वक गले मिलते हैं तथा एक-दूसरे को रंग लगाते हैं। इस दिन जगह-जगह टोलियाँ रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाचती-गाती दिखाई पड़ती है। बच्चे पिचकारियों से रंग छोड़कर अपना मनोरंजन करते हैं। सारा समाज होली के रंग में रंगकर एक-सा बन जाता है। रंग खेलने के बाद देर दोपहर तक लोग नहाते हैं और शाम को नए वस्त्र पहनकर सबसे मिलने जाते हैं। प्रीतिभोज तथा गाने-बजाने के कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं।

होली के दिन घरों में खीर, पूरी और पूड़े आदि विभिन्न व्यंजन पकाए जाते हैं। इस अवसर पर अनेक मिठाइयां बनाई जाती हैं जिनमें गुझियों का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। बेसन के सेव और दहीबड़े भी सामान्य रूप से उत्तर प्रदेश में रहने वाले हर परिवार में बनाए व खिलाए जाते हैं। कांजी, भांग और ठंडाई इस पर्व के विशेष पेय होते हैं। पर ये कुछ ही लोगों को भाते हैं।

बृज की होली

भारत में होली का उत्सव अलग-अलग प्रदेशों में भिन्नता के साथ मनाया जाता है। ब्रज की होली आज भी सारे देश के आकर्षण का बिंदु होती हैं। बरसाने की लठमार होली काफी प्रसिद्ध है। इसमें पुरुष महिलाओं पर रंग डालते हैं और महिलाएँ उन्हें लाठियों तथा कपड़े के बनाए कोड़ों से मारती हैं। इसी प्रकार मथुरा और वृन्दावन में भी 15 दिनों तक होली का पर्व मनाया जाता है।

होली रंगों का त्योंहार है, हँसी-खुशी का त्योंहार है, लेकिन होली के भी अनेक रूप देखने को मिलते हैं। प्राकृतिक रंगों के स्थान पर रासायनिक रंगों का प्रचलन, भाग-ठंडाई की जगह नशेबाजी और लोक संगीत की जगह फिल्मी गानों का प्रचलन इसके कुछ आधुनिक रूप हैं। लेकिन इससे होली पर गाए-बजाए जाने वाले ढोल, मंजीरो, फाग, धमार, चैती और ठुमरी की शान में कमी नहीं आती। इनके लोग ऐसे हैं जो पारंपरिक संगीत की समझ रखते हैं और पर्यावरण के प्रति सचेत हैं। इस प्रकार के लोग और संस्थाएँ चंदन, गुलाबजल, टेसू के फूलों से बना हुआ रंग तथा प्राकृतिक रंगों से होली खेलने की परंपरा को बनाए हुए हैं, साथ ही इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान भी दे रहे हैं। रासायनिक रंगों के कुप्रभावों की जानकारी होने के बाद बहुत से लोग स्वयं ही प्राकृतिक रंगों की ओर लौट रहे हैं। होली की लोकप्रियता का विकसित होता हुआ अन्तर्राष्ट्रीय रूप भी आकार लेने लगा है।

-संयुक्त निदेशक (कार्मिक)
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर
मो. 9414426060

होळी रो गीत

हाँ रे होळी आयी रे
या सुणों संदेशो कांई ल्याई रे,
कै होळी आयी रे।
रंग बिरंगी होळी खेली
भारत माँ रा बेटा नै,
अपणो सब भण्डार लुटायो
भामाशा सा सेठां नै,
लाल लुटाकर अमर हुई
माँ पन्ना धायी रै,
कै होळी आयी रे।।1।।

मेरो तो गिरधर नागर है
और न दूजो कोई रे,
जाके सिर पर मोर मुकुट है
मेरो तो बस सोई रे,
श्याम रंग में रंगी कि
देखाँ मीरा बाई रे,
कै होळी आयी रे।।2।।

एक रंग है पद्मनियां रो,
एक रंग है झाँसी रो,
एक रंग है चन्द्रशेखर रो,
भगत सिंह री फांसी रो,
राणा शिवा रै रंग रो,
दुनियां पार न पायी रे,
कै होळी आयी रे।।3।।

रंग बिरंगी होळी है
या रंग आपणो छांटो रे,
भारत माँ रा सब बेटा नै
रंग बसन्ती बांटो रे,
जनम-जनम नहीं छुटै,
ऐसी करो रंगाई रे,
कै होळी आयी रे।।4।।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

महिला केरियर में सफलताओं के कई रंग

❒ रामगोपाल राही

एक समय था जब महिलाओं व युवतियों के लिए पढ़ने पढ़ाने की बात, चिट्ठी पत्री लिखने तक सीमित थी, धारणा थी कि लड़की घर से दूर जाएगी या कम से कम चिट्ठी पत्री लिखकर अपने हाल चाल तो बता देगी। वक्त बदल चुका- बदले वक्त में महिलाएं- महिला शिक्षा से शिक्षित होती युवतियां अपनी जिन्दगी में परिवर्तन आत्म निर्भरता के साथ महिला अस्तित्व की नयी कहानी लिख रही हैं। आज की शिक्षा व टेक्नोलॉजी में केरियर के नये-नये अवसर आज युवतियों व महिलाओं की जिन्दगी के लिए वरदान हैं। आज की शिक्षित होती लड़कियों, युवतियों ने यह सच अच्छी तरह समझ लिया है। विशेष सुखद बात यह है- घर वालों, अभिभावकों को भी यह बात समझ में आने लगी। कल जो लड़की होने पर बुरा महसूस करते थे आज वो लड़कियों की उपलब्धियों पर गर्व करना सीख रहे हैं। आज की टेक्नोलोजी में नए केरियर क्षेत्र जिन पर पुरुषों का एकाधिकार माना जाता था, अब उन सबके टेक्नोलोजी में नए केरियर अवसरों के साथ-साथ लड़कियां आजाद परिंदों की तरह उड़ान भरते हुए सारी बेड़ियों को तोड़ते हुए सफलता की सीमा लांघ रही हैं। किसी ने ठीक लिखा है ''मंगल व चन्द्र पर जाती बेटियां, विज्ञान तकनीक का इन्हें अब ज्ञान दीजिए। समझनेः समझाने की बात- बेटियों को लड़कियों को और अधिक आगे जाने तथा सफलताओं के नए सूत्र, मुकाम तलाशने की शुरूआत हो चुकी है।

महिलाएं-युवतियां, प्रायः अपने हुनर और कौशल से अनभिज्ञ रहती थीं। आज यह बात नहीं। आज की नारी का सबसे बड़ा गहना उसकी शिक्षा है। प्रत्येक युवती को अपने रुचि के क्षेत्र में शिक्षा और प्रशिक्षण आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। आज की शिक्षित युवतियां कम्प्यूटर से जुड़ इंटरनेट के माध्यम से बहुत आगे बढ़ती देखी जा सकती हैं। लगता है कि आज की वैश्विक दुनिया में शिक्षित युवतियां जितनी आधुनिक तकनीक जानेंगी उसमें उनके लिए सफलता की उतनी ही अधिक गुंजाइश उन्हें स्पष्ट नजर आने लगती है, आज महिलाओं के लिए शिक्षा व आज की टेक्नोलोजी में नए-नए केरियर अवसरों के चलते केरियर्स की इतनी भरमार है कि प्रत्येक महिला अपने केरियर में सफलताओं के कई रंग भर सकती है।

हम देखते हैं कि आज के समय में अनेक शिक्षित महिलाएं बैंकिंग मैनेजमेंट, टेक्नोलोजी, आई.टी विज्ञान, सिविल सर्विस, रक्षा सेवाएं आदि में अपनी पहचान स्थापित कर रही हैं। यही वही क्षेत्र है जिनमें पुरुषों का एकाधिकार समझा जाता था। आज ऐसा शायद ही कोई उद्योग व विभाग हो जहां महिलाएं कार्यरत न हों। समझा जा सकता है -कार्य क्षेत्र में महिलाओं का अनुपात सभी क्षेत्र अथवा विभागों में सुधर रहा है। हाथ में पैसा तो दुनियाँ जीतना मुश्किल नहीं। इस तथ्य को आज की शिक्षित युवतियों, महिलाओं, औरतों ने पहचान लिया है। अब वह मात्र कर्तव्यों के बोझ तले दबकर गीता व सीता बनकर नहीं रहना चाहतीं। पंचतंत्र में आया है पैसा मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र है। पैसा न हो तो घरवाले भी नहीं पूछते। समझा जा सकता है पुराने समय में महिलाओं की बदहाली का एक कारण हाथ में पैसा न होना था। न पैसा न कोई चल-अचल सम्पति। सभी जानते हैं कि जिसके पास पैसा है घर, बाहर दुनिया में वही शासन करता है, वही कायदे, कानून बनाता है। महिलाओं के खिलाफ आचार संहिताएं, इसी का एक सच है। कारण अपने लिए कानून नियम बनाने आचार संहिता लिखने में, महिलाओं की अपनी भागीदारी नहीं होती-समझा जा सकता है इसीलिए महिलाओं की दुर्दशा भी होती रही।

बात करें शिक्षा के चलते आधुनिक टेक्नोलोजी से केरियर से आए बदलाव में महिलाओं के उत्कर्ष की। आज दुनिया भर में देखा जाए तो हमारे देश में महिलाओं की स्थिति काफी सुधरी है। जबकि पश्चिम में महिलाओं को वोट डालने के लिए एक सदी तक संघर्ष करना पड़ा- हमारे यहां संविधान ने शुरू से ही महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार दिये है। नारी शिक्षा के चलते हमारे देश में सारी दुनिया में सब से अधिक प्रोफेशनल तौर पर सक्षम महिलाएं हैं। अमेरिका से अधिक हमारे देश में महिला डॉक्टर, सर्जन, वैज्ञानिक, प्रोफेसर तथा बड़े-बड़े प्रशासनिक पदों पर सभी विभागों में तथा सामान्य नौकरियों में काफी महिलाएं हैं। यह सही है-हमारे देश की जनसंख्या अधिक है वनस्पति अन्य देशों के नौकरी के अवसर भी उसके अनुकूल स्वाभाविक हैं। यह तो हुई बात नौकरियों की- पर नारी शिक्षा के चलते बात करें- अपनी योग्यता, दक्षता, कुशलता से सूझ-बूझ से राजनीति में भी महिलाओं ने अपना वर्चस्व बनाया है। याद करें पिछले वर्षों में फोर्ब्स में सौ सबसे शक्तिशाली महिलाओं में शीर्ष पर दो भारतीय महिलाएं रहीं, जिनमें एक यूपीए गठबंधन नेता सोनिया गांधी व दूसरी पेप्सीको की अध्यक्ष मुख्य कार्यकारी नूरी रही हैं। देश में राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री तथा कुछ राज्यों की अगुआ महिलाएं रही हैं। अभी भी हैं। प्रदेश में वसुंधरा राजे उधर (बंगाल) में ममता बनर्जी। महिलाएं राज्यसभा में उपाध्यक्ष रही लोकसभा में पिछली बार भी अध्यक्ष थीं इस बार भी न्यायाधीश, सचिव तथा अन्य कई प्रशासनिक पदों पर महिलाएं हैं। ''नेता व प्रशासनिक कई बनती हैं बेटियाँ, हाथों में इन्हें देश का संविधान दीजिए।'' कई सरकारी गैर सरकारी क्षेत्रों में देखा जाता है- चंदाकोचर नैना लाल किदवई- सरकारी निजी क्षेत्रों में शीर्ष पर रहीं। किरण मजूमदार जिसने ब्रेवरी के अपने प्रशिक्षण को वैश्विक स्तर पर अरबों डॉलर वाले बायोटेक्नोलॉजी कॉर्पोरेट में परिवर्तित कर दिखाया, वैज्ञानिक उद्यमता की शुरूआत की। यह छुपा नहीं, शिक्षा के चलते भारतीय महिलाएं उत्कर्ष पर हैं। भारतीय महिलाओं में बुकर विजेता भी हैं। वहीं मीरा नागर, और दीपा मेहता फिल्मकारों को वैश्विक पहचान मिली है। इतना ही नहीं एक बहुत महत्वपूर्ण जमीनी हकीकत की बात देशभर में अनुमानतः दस लाख से अधिक

महिलाएं ग्राम प्रमुख के तौर पर उभरती देखी जा सकती हैं। प्रदेश में अभी गांवों में सरपंच के पदों पर व्यापक रूप से महिलाएं चुनी गई हैं। यहां तक कि इक्कीस साल की युवतियां सरपंच बनी हैं। समझा जा सकता है, शिक्षा व महिला सशक्तिकरण के चलते लगभग 322 करोड़ से भी अधिक महिला मतदाता अपनी प्रतिभा, दक्षता, सफलताओं के सपनों को सक्रियता से साकार करने के प्रयास में देखी समझी जाती हैं, नजर आती हैं।

देश में महिला शिक्षा व टेक्नोलोजी में महिलाओं के लिए अनेक अवसर खुलते देखे जा सकते हैं, इन अवसरों में निश्चित रूप से सफलता मिली है ऐसा समझा जाता है। शिक्षा के अधिक विस्तार के साथ युवतियों को अपने उच्च लक्ष्यों की आकाँक्षा के प्रति तेजी से आगे बढ़ते हुए देखा जा सकता है। स्कूली व कॉलेज शिक्षा से तो युवतियां काफी आगे बढ़ चुकी हैं। वह ज़माना गया जब महिलाएं मात्र गृहिणी के तौर पर खाना बनाने, सिलाई व बच्चों की देखभाल कर संतुष्ट हो जाती थीं। आज तो लड़कियां प्रतिभा-दक्षता-टेक्नोलॉजी से प्राप्त सूझ-बूझ से जीवन उत्कर्ष के लक्ष्य के प्रति सजग जागरूक रह, अपने को पूरी तरह निखार, जीवन स्तर को ऊंचाइयों पर ले जाना चाहती हैं। दिनोंदिन आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था ने भी रोजगार के कई अवसर महिलाओं के लिए खोले हैं। नये क्षेत्र में, नये विकल्प, नयी चुनौतियां आज की युवतियां उत्साह से स्वीकार करती नजर आती हैं, परम्पराएं, रुढ़ियां अपने आप पीछे छूटती नजर आती है। नई व्यवस्था टेक्नोलॉजी से उत्पन्न हौंसलों ने आज की युवतियों एवं लड़कियों को नयी उड़ान दी है। ''भारत की बेटियों का दुनिया में नाम है। है बेटियों में हौंसले उड़ान दीजिए।'' आज शिक्षित महिलाएं विज्ञान में कदम बढ़ा चुकी हैं वहीं इंजीनियरों, फैशन डिजाइनरों, डी.जे. कोरियोग्राफर क्षेत्र में महिलाएं अकेले काम करती नजर आती हैं। अब आज के समय में शिक्षित युवतियां, केरियर्स में कार्यरत युवतियां विवाह जैसी स्वाभाविक जीवन की मौलिक आवश्यकता, विवाह को भी अगले चार पाँच साल तक टालती, मुल्तवी करती देखी जाती हैं, ताकि वे स्वयं आर्थिक रूप से समृद्ध हो सकें। वह समझ चुकी है जैसा मजबूरी का जीवन उनकी माताओं ने जिया वह वैसा मजबूरी का जीवन नहीं चाहती। यह सही है कार्पोरेट भारत में उनकी पद प्रतिष्ठा न्यून व छोटी है। लेकिन फिर भी हम देखते हैं आए है एक पीढ़ी पूर्व तक नौकरियों में महिलायें नहीं के बराबर होती थीं, आती ही नहीं थीं। आज के संदर्भों में कई ऐसी नौकरियां हैं, इनमें गैस स्टेशन, अटेंडेंट, कैफ बेरिस्टास, टैक्सी ड्राइवर, पत्रिका संपादक, सॉफ्टवेयर प्रोग्रामर आदि कई क्षेत्रों में आज महिलाएं हैं। बदलते समय में ऐसे बहुत कम कार्य होंगे जो महिलाएं न कर सकती हों।

यह सही है शिक्षा के केन्द्र शहर हैं जहाँ शिक्षा व्यवस्था व नौकरियों की पहुँच है। महिलाओं को नौकरी के आर्थिक कारण समझे जाते रहे हैं। इसके विपरीत आज कई शिक्षित महिलाएं नौकरियों में कार्यरत है। इन सभी का कारण आर्थिक नहीं समझा जा सकता। वस्तुतः शिक्षा व टेक्नोलोजी में केरियर के अवसरों के चलते शिक्षित महिलाओं में, युवतियों में कार्य करने की स्वाभाविक लगन हो गई है, कि वह काम करना चाहती हैं। कारण कई देखे व समझे जाते हैं। आजादी, चुनौती, स्तर, दूसरों को प्रभावित करना, अपनी आजादी व पसंद से खरीद फरोख्त करना आदि। एक हकीकत जो सभी समझते हैं बीस वर्ष पहले तक महिलाएं घर चलाने के लिए कशमकश में रहती थीं। इसलिए उन्हें नौकरी तलाशनी होती थी, ताकि अपनी आमदनी से परिवार में मदद मिले। इसके विपरीत आज शिक्षित महिलाएं दीर्घकाल के लिए केरियर के साथ जीवन गुजारने में प्रयासरत रहती हैं। आज की शिक्षित युवतियां आधुनिक टेक्नोलॉजी से प्राप्त होने वाली उच्च वेतन वाली नौकरियां पसन्द करती हैं। अच्छा केरियर, अच्छा हुनर, अच्छा वेतन से उन्हें संतुष्टि होती है। आज शिक्षित होती युवतियों के माता-पिता अभिभावकों की सोच में भी व्यापक रूप से परिवर्तन देखने को मिलता है। अभिभावक चाहते है कि उनकी बेटियां, शिक्षित हों, तथा विवाह पूर्व ही आर्थिक रूप से समृद्ध हों, सम्पन्न हों, स्वच्छ व स्वतंत्र हों। शिक्षित कार्यरत युवतियों को अच्छा जीवन साथी मिलने की सुविधा होती ही होती है, साथ ही अपने अस्तित्व के साथ स्वच्छन्दता की छवि एवं पहचान बनती है। इन सब के चलते आज तो विवाह विज्ञापनों में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। विज्ञापनों में कामकाजी जीवन साथी होने की बात लिखी होती है- जो अतिरिक्त आय घर लावें। एक समय था जब महिलाएं, अध्यापक, नर्सिंग आदि सीमित कार्यों में ही नौकरियों में जाती थीं। आज की शिक्षा व टेक्नोलॉजी से मिले अवसरों के चलते लड़कियों व युवतियों के हौंसले उड़ान पर हैं, वह एस्ट्रोनॉट, इन्वेस्टमेंट, बैंकरर्स और लॉयर तक बनना चाहती हैं।

आज महिलाओं के लिए आज की टेक्नालोजी के चलते केरियर के और भी कई लुभावने अवसर देखें जाते हैं। युवतियां इनमे बड़ी सहजता से केरियर चुन लेती हैं। जैसे कम्प्यूटर प्रोफेशन-यह एक ऐसा क्षेत्र समझा जाता है जिसमें डिग्रियां तथा इंजिनियरिंग होना जरूरी नहीं समझा जाता। वैसे इन संदर्भों में डिप्लोमा, सर्टिफिकेट कोर्स बनाये जाते रहे है। बताया जाता है बेसिक कोर्स से कुछ प्रोग्रामों के साथ कम्प्यूटर का बुनियादी तरीका मालूम हो जाता है। अच्छी बुनियादी जानकारी के साथ-महिलाएं कम्प्यूटर में अच्छा केरियर बना सकती हैं। शिक्षित युवतियां-दक्षता-योग्यता से-सिस्टम एनालिस्ट, सिस्टम प्रोग्रामर्स, एनालिस्ट प्रोग्रामर्स, डाटा बेस मैनेजमेंट, नेटवर्किंग, कोडर्स और भी अन्य स्तरीय कार्य महिलाएं कर सकती हैं। बी.पी.ओ. में विभिन्न कार्य कस्टमर सपोर्ट सर्विस, टेली मार्केटिंग सर्विस, टेक्नीकल सपोर्ट सर्विस, एप्लायी आर्ट, हैल्प डेस्क सर्विस, इंश्योरेंस व बैंकिंग, डाटा एंट्री सर्विस, ऑनलाइन रिसर्च आदि कई क्षेत्रों में लड़कियों के लिए अवसर मिल जाते हैं। एनीमेशन, मल्टी मीडिया में कहते हैं प्राकृतिक कला प्रतिमा अच्छी कल्पना शक्ति और बुनियादी कम्प्यूटर स्किल्स के साथ इंटरनेट के दुनियाभर के विस्तार के चलते वेब डिजाइन, कन्टेन्ट राइटिंग या वेब डवलपमेंट कोर्स के साथ युवतियों को कहीं भी नौकरी मिल जाती है। वहीं केटरिंग व्यवसाय भी स्थापित हो चुका है। इसमें सामान्य कोर्स के साथ भोजन के प्रति प्राकृतिक हुनर हैं तो वही पर्याप्त होता है। इसके लिए केटरिंग कुलिनरी आर्ट, कुकरी क्राफ्ट या ब्रेकरी और कन्फेन्सनरी में डिप्लोमा डिग्री लेना होता है। बात करें रक्षा सेवाओं की-रक्षा सेवाओं में महिलाओं के लिए सबसे ऊंचे, अच्छे उच्च वेतन के अवसर मिला करते हैं। अन्य कैरियर, नौकरी, व्यवसाय की अपेक्षा इस क्षेत्र में महिलाओं को काफी इज्जत

मिलती देखी जाती है। अविवाहित युवतियां स्नातक के बाद आर्मी सर्विस कोर, इंजीनियरिंग, सिग्नल्स, इंटेलिजियंस और लॉ केडर में शार्ट सर्विस कमीशन्ड अफसर जैसे पदों पर महिलाएं पहुंच जाती हैं। नेवी जहां पहली बार अवसर खुले हैं। यहाँ महिलाएं को लॉजिस्टक्स, एयर ट्रेफिक, कन्ट्रोलर पर अवसर मिलते हैं। वहीं एयर फोर्स में महिलाओं को ट्रांसपोर्ट प्लेन और हेलीकॉप्टर उड़ाने के लिए भर्ती की जाती है। साथ ही एयर ट्रेफिक, मिटरोलोजिकल, एज्यूकेशन, एकाउन्टस और प्रशासनिक सेवाओं के लिए महिलाओं के लिए अवसर मिलते हैं। मेडिकल और डेंटल कोर, नर्सिंग कोर, डिफेन्स, रिसर्च एवं डवलपमेंट आर्गेनाइजेशन में भी महिलाओं की शुरूआत हो चुकी है, इसमें पर्याप्त योग्यता जरूरी होती है। बैंकिंग एक ऐसा क्षेत्र है जहां राष्ट्रीयकृत और निजी बैंकों में, शीर्ष स्थानों पर महिलाएं हैं, वहीं मानव संसाधन प्रबन्धक, कार्पोरेट कम्युनिकेशन्स, मनोवैज्ञानिक काउन्सलर्स में, इनके अलावा आप्टोमेट्री- आँखों से जुड़े उपकरण बनाने वाला विज्ञान है जिसमें लैंस व चश्में आते हैं, इनमें आँखों की क्षमता की वृद्धि होती है, ऐसे महत्वपूर्ण क्षेत्र में भी शिक्षित दक्ष महिलाएं हैं। इनके अतिरिक्त भी महिलाओं के लिए नए क्षेत्र हैं। जैसे रत्न विज्ञान, रत्न विज्ञान ज्वैलरी एक ऐसा कैरियर का कार्य क्षेत्र है जिसमें महिलाओं के लिए काफी संभावनाएं समझी जाती हैं। इसके अलावा जैनेटिक इंजीनियर्स यह विज्ञान का उन्नत क्षेत्र है, जो बॉयोटेक्नोलॉजी के अन्तर्गत आता है। बात करें फोटोग्राफी की, इसके सर्टिफिकेट, डिप्लोमा कोर्स दोनों ही होते हैं। समझने की बात सफल फोटोग्राफर रचनात्मक व्यक्ति होते हैं यह तस्वीर में इमेज उतारते हैं। नए कैरियर क्षेत्र में विजुअल मार्केडाइजिंग वी.एस. प्रजेन्टेशन की कला है जो किसी वस्तु या सामान को आकर्षक बनाती है निपुण महिलाओं के लिए यह सहज कैरियर है। बात करें केस्मिट्रोलॉजी या सौन्दर्य विज्ञान की जो स्वयं सुन्दर हो उनके लिए दूसरों को सुन्दर बनाना आसान होता है। यह महिलाओं के लिए बाल, त्वचा, नाखून और सिर सौन्दर्य कला का विज्ञान है। इसमें सामान्य 12वीं पास योग्यता होती है इसे घर बैठे के काम में व्यापक विकल्प व अवसर माने जाते हैं। यह सब ऐसे कैरियर हैं जिनमें महिलाएं सफलताओं के कई रंग भरते हुए अपना जीवन उच्च स्तर का बना सकती हैं। वस्तुतः समझा जा सकता है शिक्षित युवतियों, महिलाओं के लिए आधुनिक टेक्नोलॉजी कैरियर के लिए व्यापक विकल्प व अवसर देती है। इससे महिलाओं व युवतियों का भविष्य उच्च वेतनमान, अच्छी आय के साथ उच्च स्तरीय व सुखद होता है। इनके अतिरिक्त भी कई पारस्परिक, गैर पारम्परिक कैरियर अथवा कार्य हैं, जिन्हें महिलाएं अपना सकती हैं। वैसे महिलाओं के लिए श्रेष्ठ कार्य वही है जो उनकी रुचि व मन के अनुसार हो, किसी के लिए अधिक आय आमदनी का दृष्टिकोण उपयुक्त होता है, तो किसी के लिए आरामदायक सहूलियत का।

-लाखेरी-323615 (बूँदी)
मो. 9982491518

राजस्थान दिवस विशेष

हे प्यारे राजस्थान! तुझे शत-शत नमन

❒ **मनमोहन अभिलाषी**

हे प्यारे राजस्थान! तुझे हम शत-शत नमन करें,
श्रम सींचे खुशहाली रोपें, मिलकर चमन करें।
दुर्गादास, राणा प्रताप ने
यहाँ पर जन्म लिया,
मातृभूमि की रक्षा में
अपना बलिदान किया।
बलिदानों की अमर भूमि पर तन, मन हवन करें,
हे प्यारे राजस्थान! तुझे शत-शत नमन करें।
झूल गए थे इस धरा पर
सब फाँसी के फन्दे,
अमरसिंह से अमर हो गए
इसी धरा के बन्दे।
वीरों की इस धरा पर मिलकर हम सब सृजन करें,
हे प्यारे राजस्थान! तुझे शत-शत नमन करें।
जमनालाल बजाज सरीखे
यहाँ पर ही जन्में थे,
गांधीजी की वाणी में वह
छंटवे बेटे थे।
ऐसे बेटों की जननी को सुख से मगन करें,
हे प्यारे राजस्थान! तुझे शत-शत नमन करें।
इसी धरा के एक बाग में,
केसरिया फूल खिला,
स्वामी भक्ति में जिसको
ऊँचा स्थान मिला।
इस वसुधा जो ज्वाला चढ़ गई उनका स्मरन करें,
हे प्यारे राजस्थान! तुझे शत-शत नमन करें।
इसी चमन में राजस्थानी
हाड़ोती अरु ब्रज भाषा,
मरुस्थल में खूब महकती
इनसे जीवन की आशा।
जीवन आशा जागे मरु में ऐसा जतन करें,
हे प्यारे राजस्थान! तुझे शत-शत नमन करें।

-एस.बी.के. गर्ल्स हा.सै. स्कूल, मंडी अटलबंद, भरतपुर
मो. 9988404434

महिला दिवस

विकास यात्रा : वैदिक युग से अब तक

❒ डॉ. सुदेश शर्मा

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता

उक्त श्लोक से स्पष्ट है कि किसी समाज की खुशहाली का आधार उस समाज में महिलाओं के स्तर व उन्हें प्राप्त सम्मान से आंका जा सकता है। इतिहास गवाह है कि जिन समाजों में महिलाओं को बराबरी अथवा उच्चतर दर्जा प्राप्त है, वे विकास व प्रगति की दौड़ में अपने समकालीनों से मीलों आगे रहे हैं।

स्त्री अधिकारों के लिए, बच्चों की सुरक्षा-समस्या समाधान के लिए, समान काम के लिए समान वेतन की मांग, स्वतन्त्रता और विश्वशांति की आवाज उठाने के लिए किए गए संकल्पों, दायित्वों को याद दिलाने को हर वर्ष 8 मार्च को 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के रूप में मनाया जाता है जो यह याद दिलाता है कि आज इस स्थिति (मुकाम) पर पहुंचने के लिए संसार की स्त्रियों को किस लम्बे संघर्ष से गुजरना पड़ा है। फिर भी अभी तक सभी देशों में स्त्रियों के प्रति सामाजिक, वैधानिक व्यवहारों में समानता नहीं आ पाई है।

भारत की स्थिति निश्चित ही इससे अलग रही है। यहाँ महिला-आंदोलन का रुख पुरुषों से प्रतिद्वंद्विता के रूप में कभी नहीं रहा, न इसकी जरूरत पड़ी। भारतीय समाज में महिलाओं को प्राप्त स्थान को सामान्य रूप से प्राचीन, मध्य एवं आधुनिक युग को तीन आयामों में वर्गीकृत कर के देखा जा सकता है।

यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि वैदिक युग-समाज में महिला सम्मान व सशक्तिकरण का स्वर्णकाल था। प्राचीन पौराणिक और प्रागैतिहासिक काल की सरस्वती, लक्ष्मी, दुर्गा जैसी देवियों को एक ओर पूजा स्थल पर रखकर पूजा उपासना की वहीं घर में स्त्री का दर्जा माँ के रूप में पुरुष से ऊँचा रखा गया। याज्ञवलक्य जैसे महाविद्वान से शास्त्रार्थ करने वाली गार्गी सहित मैत्रेयी, घोषा अपाला, लोपा-मुद्रा, सूर्या, सावित्री जैसी विदूषियों की लम्बी शृंखला समाज में महिलाओं की गौरवशाली स्थिति बताने के लिए पर्याप्त है। स्वयंवर से लेकर उपनयन व अन्तिम संस्कार तक, महिलाओं की सहभागिता के पर्याप्त प्रमाण प्राचीन ग्रंथों में सर्वत्र उपलब्ध हैं।

कदाचित महिला सम्मान के पराभव का आरम्भ का उत्तर स्मृतिकालीन युग से माना जा सकता है। जब महिलाओं के जीवन त्रिविमीय विभाजन कर उसे क्रमशः पिता, पति व पुत्र के अधीन कर दिया गया। महिला सम्मान व स्वातंत्र्य समाप्ति का यह प्रथम सोपान था। मध्य युग आते-आते महिलाओं की स्थिति व सम्मान उत्तरोतर पतन से भयावह स्थिति में पहुँच गया। वैदिक युग की स्वतंत्र, स्वच्छन्द व उन्मुक्त नारी गृह-कार्य में कैद होकर रह गई, विदेशी आक्रमण, जन्म असुरक्षा ने बाल-विवाह, सती-प्रथा जैसी कुरीतियों को जन्म दिया। फिर भी अहिल्या बाई होल्कर, रजिया बेगम जैसी शासक और चांद बीबी, लक्ष्मी बाई, दुर्गा बाई, जीजाबाई तथा कर्णावती जैसी स्त्रियों ने समाज में अपना गौरवपूर्ण स्थान बनाये रखा परन्तु सामान्य स्त्री का इतिहास इससे अलग रहा है क्योंकि 19वीं शताब्दी तक आते-आते भारतीय नारी पूरी तरह अधिकारविहीन व पर-निर्भर हो चुकी थी।

मध्य-युग के अवसान के साथ, स्वतन्त्रतापूर्वक नवजागरण काल में स्थिति बदलने लगी। हमारे यहाँ स्त्रियों ने अपनी लड़ाई पुरुषों की अगुवाई में, उनके साथ-सहयोग से, उनके कंधे से कंधा लगाकर लड़ी और अपने विकास मार्ग की बाधाओं को अपेक्षाकृत आसानी से पार किया। देश की आजादी के तुरंत बाद उन्हें मिले बराबरी के संवैधानिक अधिकार इसी साझी लड़ाई के प्रतिफल स्वरूप थे। महिलाओं को सामाजिक व विधिक स्तरों पर सम्मान दिलाने के लिए राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द विद्यासागर, दयानन्द सरस्वती आदि समाज सुधारकों व लार्ड विलियम बैंटिक जैसे गवर्नर जनरलों ने मिलकर गम्भीर प्रयास किये। सतीप्रथा उन्मूलन व शारदा एक्ट इसी के परिणाम थे।

संवैधानिक अधिकारों को आगे पूर्णतया सामाजिक अधिकारों में बदलने के लिए स्त्रियों को पूर्ववर्णित साझी लड़ाई ही जारी रखी जानी चाहिए थी, किन्तु दुर्भाग्य से पश्चिम के नारी-मुक्ति आंदोलन (वीमेन्स-लिव) के प्रभाव में भारतीय स्त्रियों ने भी पुरुषों से अधिकार मांगने और न देने पर लड़कर, छीनने की जो मुहिम चलाई और उन्हें (पुरुषों को) प्रतिद्वंदी रूप में जिस तरह ललकारना प्रारम्भ किया उससे अधिकार मिलना आसान नहीं रहा, बदले में नारी शोषण अवश्य बढ़ गया। ऐसी 'नारीवादी' दृष्टि से ऊपर उठकर, बिना किसी पूर्वाग्रह के सारी स्थितियों, कारणों का तटस्थ विवेचन करना होगा। महिला-सशक्तिकरण के तमाम अभियानों (20वीं सदी के उत्तरार्ध) ने सीरीमावो भंडारनायके, गोल्डामायर, मार्ग्रेट-थैचर, इंदिरा गाँधी व बेनजीर भुट्टो जैसी वैश्विक विभूतियों ने पूरे विश्व में महिलाओं का मान बढ़ाया किन्तु इसी तस्वीर का एक स्याह पहलू यह भी है कि कल (भूतकाल) भी अशिक्षित, अर्द्धशिक्षित, सुशिक्षित व आर्थिक रूप से स्व-निर्भर महिला स्वयं असुरक्षित अनुभव करती थी, आज भी वे पितृसत्तात्मक मानसिकता व पुरुषोचित अहम् को बहुत रास नहीं आ रही। महिलाओं के विरुद्ध दिनों-दिन बढ़ते अपराध के आंकड़े इसकी पुष्टि करते हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय महिलाएँ पोषण, साक्षरता व लिंगानुपात, तीनों में ही अत्यन्त शोचनीय स्थिति में हैं।

स्त्रीत्व : कुछ सवाल

महात्मा गाँधी ने हिन्द स्वराज में लिखा, ''जब तक आधी मानवता की आँखों में आँसू हैं, मानवता पूर्ण नहीं कही जा सकती। नीति-नियामक स्तर पर यह भी महसूस किया गया है कि महिलाएँ माँ, पत्नी, बहन, बेटी आदि के रूपों तथा घर की दहलीज से निकलकर, अपनी मानव-शक्ति को विश्व पटल पर स्थापित क्यों नहीं करती? क्यों आज लगभग प्रत्येक देश में स्त्री भीतर-भीतर सुलग रही है और प्रतिक्रिया

स्वरूप पुरुष के समकक्ष आने को जी-तोड़ मेहनत कर रही है? हाँ, महिलाओं के ये प्रयास उसके हित में जायेंगे या नहीं, यह भी यक्ष सवाल है।

महिलाओं को सम्मानजनक स्थान सुनिश्चित करने के लिए सकारात्मक वातावरण व सोच को विकसित करनी है अर्थात्

स्त्री ही क्यों, मानवी क्यों नहीं?

सृष्टि निर्माण और संचालन के दो मूल तत्व हैं परन्तु पुरुष मनुष्य है, मानव है। स्त्री केवल स्त्री है। प्रायः उसे नर की प्रतिछाया नारी कहा जाता है, मानुषी और मानवी नहीं। इसका विशेष अर्थ है और यह अर्थ सारे विश्व में समान है। इस अर्थ की समानता ही हर कहीं पुरुष के खिलाफ समान आक्रोश, असंतोष, अकुलाहट, सुलगाहट और विद्रोह को जन्म देती है।

वैसे सृष्टि रचना में स्त्री का योगदान पुरुष के 'समान' योगदान से कहीं ज्यादा है, वह जन्मदात्री है तो फिर संसार के विकास एवं प्रगति में उसकी भागीदारी व योगदान केवल विधान के कागजों पर है, ऐसा क्यों है। इसी वजह से मन में सवाल उठते हैं कि क्या व्यवहार में इस आधी आबादी का स्थान अल्पसंख्यकों के समान ही है? क्या वह दूसरे दर्जे की इंसान है? क्या वह बुद्धि या अन्य मानवीय गुणों में पुरुषों से हीन है? क्या वह केवल पुरुष-पति का मनबहलाव करने की वस्तु है? उसका अपना निजी अस्तित्व, अपनी पहचान कहाँ है? निजी तौर पर विश्व-हित में उसकी अन्य भूमिका क्यों नहीं रही? ये बुनियादी सवाल आज विकसित, अविकसित व विकासशील, सभी देशों में समान रूप से उठाये जा रहे हैं।

युगानुरूप नई परिभाषा की आवश्यकता है

नए संदर्भों में नारीत्व को नए सिरे से परिभाषित करने की जरूरत है जिससे मध्यकाल में खोई प्राचीनकाल की परिभाषा वापस स्थापित हो सके। नारीत्व-जिसका अपना एक पृथक अस्तित्व हो, अपनी छवि हो, अपना एक अहम गौरव हो, अपना स्वाभिमान, अपनी योग्यता, अपनी सार्थकता अर्थात पुरुष-स्त्री, दोनों की भिन्न प्रकृति होते हुए भी परस्पर पूरकता द्वारा जीवन की पूर्णता से गौरवान्वित हो सके।

निश्चय ही यह इतना सरल नहीं है कि कुछ वैज्ञानिक, समाजशास्त्री और स्त्री-चिन्तक मिलकर एक परिभाषा गढ़ लें और समाज तत्काल उस पर अमल करने लगे। नवयुग की मांग है कि लड़कियों को शुरू से स्वतन्त्र चेतना संस्कार देकर उनका सहज मानवीय ढंग से विकास किया जाए, न कि केवल उनके स्त्रीत्व को ही उभारा जाए, जैसा कि विज्ञापन एजेन्सियां अपने स्वार्थ-साधन के लिए कर रही हैं।

इसमें दो मत नहीं है कि स्त्रीत्व की परम्परागत अवधारणा अपना अर्थ खो चुकी है। स्त्रियां अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व को पूर्णता की ओर अग्रसर करने (रोजगारोन्मुखी) के साथ हीन भावना से मुक्त होने व नया आत्म-विश्वास जुटाने के बजाय, नई अपराध भावना (संक्रमणकालीन समस्या) से भर उठी हैं जैसे घर, बच्चों और पति से स्वयं को आगे रखकर मानो उन्होंने समाज के प्रति कोई अपराध कर डाला हो? यह दोहरा दबाव है- बाहरी आलोचनाओं के साथ-साथ भीतरी मनोविज्ञान का, इसलिए इसकी प्रतिक्रिया गहरी होती है। ऐसे में या तो प्रतिभाएं घुट-घुटकर घर में कुंठित हो जाती हैं या घबराकर उनके बढ़े कदम फिर पीछे पड़ते हैं। समस्या का कोई समाधान नहीं मिलता।

आज की प्रबुद्ध स्त्री के इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार करना चाहिए कि विकास मानवीयता पर आधारित हो, न कि मात्र नारीत्व या स्त्रीत्व के आग्रह पर। क्या स्त्री अपनी घरेलु भूमिकाएं निभाते हुए स्त्री से ऊपर उठकर मानवी नहीं बन सकती? यदि वह स्वयं दोहरी जिम्मेदारी उठाने के लिये तैयार है तो समाज को इसमें आपत्ति क्यों हो? क्या यह समाज के हित में नहीं कि स्त्री कुंठामुक्त होकर संतान को अच्छे संस्कार व परिवार को अच्छा वातावरण दे और स्वस्थ समाज के निर्माण में पुरुष की सहभागी बनकर कल्याणकारी कार्यक्रमों को दिशा देने में सहायक हो। ''वीमेन-लिव'' की तर्ज पर उठे आंदोलन प्रायः प्रतिक्रिया-स्वरूप या बदले की भावना से 'अतिवाद' में चले जाते हैं और उफान निकल जाने के बाद बैठ जाते हैं सो हमें वैचारिक-सामाजिक मंच पर नारीत्व की अगली परिभाषा हेतु संगठित-चिन्तन, संगठित प्रयास व सोच के साथ-साथ स्वयं स्त्री को भी अपने प्रति सकारात्मक मंथन करना होगा, तभी हमारे अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की सार्थकता सिद्ध होगी।

रीडर, रा.उ.अ.शिक्षा संस्थान, बीकानेर
मो. 9414967874

शिविरा पंचांग

मार्च, 2015

रवि	29	1	8	15	22
सोम	30	2	9	16	23
मंगल	31	3	10	17	24
बुध		4	11	18	25
गुरु		5	12	19	26
शुक्र		6	13	20	27
शनि		7	14	21	28

कार्य दिवस 22,

रविवार 05, अवकाश 04, उत्सव 04

05 मार्च – होलिका दहन (अवकाश)

06 मार्च – धुलण्डी (अवकाश)

15 मार्च – विश्व उपभोक्ता दिवस (उत्सव) अक्टूबर से मार्च तक की छात्रवृत्ति का वितरण

21 मार्च – चेटीचण्ड (अवकाश-उत्सव)

28 मार्च – रामनवमी (अवकाश-उत्सव)

30 मार्च – राजस्थान दिवस (उत्सव)

31 मार्च – निःशक्त विद्यार्थियों हेतु केन्द्र प्रायोजित समावेशित शिक्षा योजना संबंधी व्यय, बचत एवं लाभान्वित विद्यार्थियों की सूचना जिशिअ (माध्यमिक) को प्रेषित करना।

नोट – 1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोज्य कक्षा 10 एवं 12 की परीक्षा में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों हेतु 14 दिवस का परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश रहेगा।

अजन्मी पुत्री का माँ के नाम पत्र

शुभलक्ष्मी माहेश्वरी

पूजनीय वात्सल्यमूर्ति माँ,

मैं आपकी मुलायम कोख में सुरक्षित निवास कर रही हूँ। आप मेरा प्रणाम स्वीकार करें। आपका स्वास्थ्य अच्छा बना रहे, यही परमपिता परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है। माँ मेरे कानों में एक विस्मयजनक खबर पड़ी है जिसे सुनकर मेरा कोमल हृदय थरथरा उठा है। माँ, मैंने सुना है कि जब आपको यह ज्ञात हुआ कि आपकी कोख में एक कन्या का अंकुर है उसी समय आपने उस जीव को विकसित न होने देने का संकल्प कर लिया है। मेरी करुणामयी माँ आप कभी ऐसा सोच भी सकोगी, इस पर मुझे विश्वास नहीं होता। परमात्मा के लिए हर शख्स के साथ रहना संभव नहीं था इसीलिए उसने 'माँ' को बनाया, ऐसा मैंने सुना है।

मेरा जन्म न हो, इस हेतु आप जहरीली दवाइयां लेना चाहती हैं। उनसे मेरा श्वास घुटने लगेगा और मुझे असहनीय वेदना होगी। क्या आप नहीं जानती कि ये विषैली दवाइयां मेरे अस्तित्व को ही समाप्त कर देंगी?

माँ आपकी कोख से जन्म लेने की मेरी प्रबल उत्कंठा है। मैं आपकी कोख में पनप रही एक कोमल कलिका हूँ आप उसे प्रस्फुटित होने दें। आपके आंचल में विश्राम लेते हुए इस सुन्दर सृष्टि को निहारने के लिए व्याकुल हूँ।

माँ, मैं अबोल हूँ, मेरे प्राणों की भिक्षा मांगती हूँ। क्या आप इसे ठुकराने, प्रकृति के विधान का उल्लंघन करने का साहस करोगी? आप मेरी प्रेमस्वरूप मां हैं। पुत्र और पुत्री में कोई अन्तर नहीं अतः आप मेरी वेदना पर गम्भीरतापूर्वक मनन करें और मातृत्व की गरिमा को कलंकित न होने दें।

माँ, मैं आपकी राजकुमारी हूँ, आपकी राजुला हूँ। मेरी जगह यदि भाई का जन्म होता तो क्या आप उसका पालन पोषण नहीं करतीं? यदि मैं जन्म लेती हूँ तो इसमें मेरा क्या दोष है। मेरी पीठ पर भाई का जन्म हो, इसके लिए मैं भगवान से अवश्य प्रार्थना करूंगी। सुना है भगवान अबोध व मासूम बालकों की प्रार्थना अतिशीघ्र स्वीकार करते हैं।

माँ, आप मेरे विवाह में दहेज देने की चिन्ता न करें। आपकी छत्र-छाया में, मैं पढ़कर सुशिक्षित होउंगी और स्वयं के पैरों पर खड़ी होकर आत्मनिर्भर बनने पर ही विवाह का विचार करूंगी। अतः दहेज का प्रश्न ही नहीं उठता।

मैं प्रेम व वात्सल्य की भूखी हूँ, मेरे सुनहरे स्वप्नों को धराशायी न करें, माँ। पुत्र प्राप्ति की लालसा से किसी अबोध बालिका को बली पर चढ़ाना कहाँ का न्याय है? संसार में प्रचलित सभी धर्मों में भ्रूण हत्या को जघन्य अपराध माना हैं आप इस कृत्य को दुनिया से भले ही छिपाओं परन्तु सर्वव्यापी ईश्वर की आँखें तो सब देखती है और वह तुम्हे कैसे क्षमा करेगा?

पूज्य नानीजी जब आपको यह बातें समझा रही थी तो मैं आपके गर्भ में बैठी उन्हें ध्यानपूर्वक सुन रही थी। माँ, क्या आप अपनी जन्मदात्री की नेक सलाह का अनादर करोगी? मेरे हृदय की आवाज उस सर्वव्यापी जीवन दाता तक अवश्य पहुँची होगी, वह आपको सद्बुद्धि दे, सद्विचार दे, यही उस सृष्टि संचालक के पावन चरणों में मेरी विनम्र प्रार्थना है।

मैंने सुना है प्यारी होती है माँ, न्यारी होती है माँ
फिर हत्यारिन क्यों बन जाती है माँ..माँ..
मुझे मत मारो, मुझे मत मारो, मुझे जन्म लेने दो।

-वरिष्ठ अध्यापक (अंग्रेजी)
रा.मा.वि. परासिया (किशनगढ़)
मो. 9829046489

बड़े व्यक्तियों के काम करने का तरीका

❒ साँवलाराम 'नामा'

अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति जॉर्ज वॉशिंगटन को घुड़सवारी का बहुत शौक था। वह प्रत्येक दिन प्रातः काल घोड़े पर बैठकर घूमने जाया करते थे ताकि उन्हें ताजी हवा मिल सके और देश के हालात की वास्तविक जानकारी भी प्राप्त हो सके।

एक दिन एक नदी के किनारे तीन अमेरिकी सैनिक खड़े थे। उनमें दो कांस्टेबल थे और एक उनका हैड था। कमांडर बराबर कांस्टेबलों को निर्देश दे रहा था। एक लकड़ी के बीम (लट्ठा) को गाड़ी से उतार कर नाव में रखा जाना था। दोनों सिपाहियों ने एड़ी से चोटी तक का जोर लगा दिया लेकिन उस बीम (लट्ठे) को नाव पर चढ़ाने में सफल नहीं हो सके। दोनों काफी थक गये थे। कमांडर लगातार सैनिकों पर चिल्लाये जा रहे था। उसे अपने साथियों की मदद करने में शर्म महसूस हो रही थी क्योंकि वह अपने को हैड (बड़ा) समझता था।

उसी समय उधर घोड़े पर आता दिखा पास आकर उसने वह सब माजरा देखा तो उसने रुककर कमांडर से पूछा- ''आप उन सैनिकों का भारी लट्ठा उठाने में मदद क्यों नहीं कर रहें हैं? एक आदमी के और हाथ लगाने से वह लट्ठा उठ सकता है।''

कमांडर ने उस घुड़सवार को घूरते हुए कहा- ''मैं इनका कमांडर हूँ। मेरा काम निर्देश देना है, इनके साथ काम करना नहीं अगर तुमको इन्हें देख कर कष्ट पहुंच रहा तो तुम ही इनकी मदद कर दो।''

उसकी बात में छिपे व्यंग्य सुनकर वह घुड़सवार घोड़े से तत्क्षण उतरा और सैनिकों के साथ मिलकर बीम को नाव पर चढ़वा दिया। उसने उस कमांडर से कहा- ''अगर किसी काम का ओहदा (पद) उसे अपने अधीनस्थ के साथ काम करने से रोकता है तो उसका ओछापन है। जाते-जाते वह कमांडर से कहते गये- ''भविष्य में कभी भी जरूरत पड़े तो मुझे याद कर लेना- मेरा नाम जॉर्ज वॉशिंगटन है।'' वह कमांडर और सिपाही हक्के-बक्के से उनको देखते ही रह गए। यह थी जॉर्ज वॉशिंगटन की महानता की कार्यशैली। यह सत्य तथ्य है कि जो व्यक्ति वाकई बड़ा होता है, उसे अपने से छोटे अथवा अधीनस्थ के साथ काम करने में कोई संकोच अथवा शर्म नहीं महसूस होती।

-सदर बाजार रोड, निकट बड़ा चौहरा,
भीनमाल (जालौर)
मो. 9587848485

ध्यान योग

ध्यान और अभ्यास की जननी है एकाग्रता

❑ संग्राम सिंह सोढ़ा

मनुष्य हमेशा उत्कृष्ट जीवन जीना चाहता है लेकिन उसे अपने जीवन को सार्थक, सुखी और आनंदमयी बनाने के लिए कई पड़ावों के बीच गुजरना पड़ता है। वह अपनी सोच और क्षमता के बल जीवन को सफल बना सकता है। वह हर असफलता के समाधान से शक्तिवान बन सकता है। बशर्त जो व्यक्ति अपने जीवन में 'एकाग्रता' की क्षमता का प्रभावी ढंग से लगन और पूरे ध्यान से समायोजित कर लेता है, वह जीवन में ऊँची से ऊँची मंजिल को पा सकता है, क्योंकि उसके दृढ़ संकल्प के सामने सभी मुश्किलें समर्पण कर देती हैं।

एकाग्रता से तात्पर्य है पूरी लगन और पूरा ध्यान। यानि पूरे मनोयोग से मनचित को ध्यानस्थ होकर किये जाने वाली अभिव्यक्ति का नाम एकाग्रता है। एक निश्चित समय में हमेशा किसी विचार पर ध्यान केन्द्रित करके एकाग्रता का अभिवर्द्धन निश्चित तौर से किया जा सकता है। अतः किसी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए एकाग्रता, आत्मविश्वास और दृढ़ इच्छा शक्ति महत्वपूर्ण है। सभी सफलताओं का मूल तंत्र एकाग्रता है। जिस तरह से सब्र और सज्जनता अपने आप में बड़ी शक्ति हैं। उसी प्रकार एकाग्रता अनुशासित जीवन की ध्यानस्थ शक्ति है। एकाग्रता से जीवन अनुशासित बनता है। मनोवृत्ति को सुदृढ़ बनाने में एकाग्रता की अहम भूमिका मानी गई है। स्वामी विवेकानंद एकाग्रता को समस्त ज्ञान का सार मानते हैं और उसके बिना कुछ नहीं किया जा सकता है उस पर बल देते हैं। एकाग्रता से मन चित्त को शांति मिलती है। स्वाध्याय की भांति एकाग्रता अन्तकरण के दोषों से जूझने की संकल्पवृत्ति को सुदृढ़ बनाती है। कहते हैं स्वामी विवेकानंद एक बारगी में जिस पुस्तक को पढ़ लेते थे, वह उन्हें कण्ठस्थ हो जाती थी। जब उनसे इसका कारण पूछा गया तो उनका एक शब्द में ही उतर था– 'एकाग्रता'

अर्जुन की बाण विद्या में सफलता रहस्य भी एकाग्रता ही था। एकलव्य को एकाग्रता के कारण सफलता मिली। हमारे महापुरुषों की यही राय है। पूर्व राष्ट्रपति आदरणीय अब्दुल कलाम, आदरणीय डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सभी सर्वसम्मत कथन इसी सफलता के संदर्भ में एक है। एकाग्रता ध्यान और अभ्यास से आती है। यह अभ्यास नित्य प्रार्थना से आता है। महान वैज्ञानिक एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने ठीक ही कहा है कि अपने मिशन में कामयाब होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित्त और निष्ठावान होना पड़ेगा। सफलता के अपने लक्ष्य को निर्धारित ढंग से हासिल करने के लिए एकाग्रता प्रतिबद्धता के साथ परिश्रम ही कामयाबी की ओर अग्रसर करता है।

विद्वान एडीसन का मानना है कि 'कोई भी व्यक्ति निन्यानवे फीसदी परिश्रम व एक फीसदी प्रेरणा से जीनियस बनता है। विपत्ति के समय जीव के उज्ज्वल पथ पर ध्यान केन्द्रित करके विजय को हासिल किया जा सकता है। अगर हम हर राह पर बिना किसी रूकावट के सफलता चाहते हैं तो अपने लक्ष्य को सोच समझकर अपनी सामर्थ्य और क्षमता के अनुरूप तय करके फिर योजनाबद्ध तरीके से एकाग्र मन मस्तिष्क से पूरी रूचि और धैर्य के साथ सहज गति से आगे बढ़ने में सफल हो सकते हैं।

यह भी सच है कि बिना रुचि के काम के प्रति एकाग्र होना सहज नहीं होता। फिर भी अपना लक्ष्य–निर्धारण से पहले हमें यह तय करना होता है कि यह कार्य हमारी आत्मिक रुचि और उपयोग का है तो हमें एकचित मन लगाकर करना चाहिए। निश्चित तौर से अपने विशिष्ट लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे।

जीवन की उज्ज्वलता पर दृष्टि रखने वालों का उदाहरण देते हुए किसी विद्वान ने 'हैराल्ड एबोट' नामक एक प्रख्यात धनपति के सम्बन्ध में लिखा है जिसे एक अपंग व्यक्ति की सहज ऊर्जायुक्त प्रभावी प्रेरणा उसकी सारी चिंताओं को दूर कर देती है।

एबोट के जीवन की सारी कमाई किसी संकट के कारण नष्ट हो गई। उस पर कर्ज चढ़ गया जिससे मुक्त होने के लिए वर्षों परिश्रम की आवश्यकता थी। मन आर्थिक चिंताओं से भरा हुआ था। ऋण कैसे उतरे? गृहस्थी का खर्च किस प्रकार चले? सामाजिक प्रतिष्ठा किस तरह बनी रहे? आदि चिंताएं मन में उठ रही थी और एक पराजित व्यक्ति के समान दुखी होकर वे कहीं चले जा रहे थे।

सड़क पर एक अपंग व्यक्ति बैठा दिखाई दिया, जिसकी दोनों टांगे कट गई थी। वह हाथों के सहारे चलता था। उसने हँसते हुए हैराल्ड साहब का स्वागत किया और हृदय से प्रसन्नता और आह्लाद उड़ेलता हुआ बोला– कैसा सुहाना प्रभात है। कहिए, अच्छे तो हैं? इस अपंग व्यक्ति की प्रसन्न चित्तता से भरे उल्लास और हर्ष ने हैराल्ड एबोट की सभी चिंताओं को मिटाकर रख दिया। उलटे अपनी चिंताओं पर उन्हें क्षोभ हुआ कि 'जब यह अपंग और लाचार व्यक्ति भी इतना आनंदित है तो इसकी तुलना में मैं बहुत भाग्यशाली हूँ।' अपंग की उन्नत सोच के प्रतिबिम्ब ने हैराल्ड को बदल दिया। एक प्रभावी सोच की प्रेरणा से नजरिया बदला जा सकता है। यही प्रभावी सोच एकाग्रता को जन्म देती है। बस अपने मानस में छिपी एकाग्रता की शक्ति को जाग्रत करना है। उसे पहचानना है।

सोढाण लोक साहित्य सदन, चक सचियापुरा
पो. बज्जू (बीकानेर) 334305
मो. 9983181510

स्वास्थ्य

स्वस्थ जीवन के सरल नियम

❒ बिग्रेडियर करणसिंह चौहान

मानव की स्वस्थ रहने की चेष्टा आज, की ही नहीं, अपितु प्राचीनकाल से चली आ रही है और यह चेष्टा संभवतः तब तक चलती रहेगी, जब तक मानव को वास्तविक प्रकाश एवं ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो जाती। यह देखकर बहुत आश्चर्य होता है कि हम अपने स्वयं की शरीर को स्वस्थ रखने की जिम्मेदारियों से मुँह मोड़कर, स्वयं इसके लिए कुछ भी नहीं करके, पूर्णतया दूसरों पर आश्रित हो जाते हैं तथा अपना दायित्व उन लोगों को हस्तांतरित कर देते हैं, जो रोग के निदान के लिए औषधियों एवं शल्य चिकित्सा का सहारा लेकर व्यक्ति विशेष को निरोगी बनाने का आश्वासन देते हैं।

इस सदी में विज्ञान ने जितनी प्रगति की है, उतनी पूर्व में कभी नहीं की। विज्ञान की प्रगति एवं नए आविष्कारों की गति निरंतर बनी हुई है और तब तक बनी रहेगी जब तक कि मानव स्वयं इससे हाथ जोड़कर विनती नहीं करेगा– 'मुझे अब शांति से जीवन का आनंद लेने दो।' यह प्रगति हमें हमारे हृदय एवं मस्तिष्क से पृथक कर दूषित वातावरण से हमारे जीवन को भेद देगी। चिकित्सा का मूल आधार औषधियां, शल्य चिकित्सा के अतिरिक्त अन्य विकल्प भी है जिन्हें नकारा नहीं जा सकता। हम औषधियों एवं शल्य चिकित्सा से पूरी तरह परिचित हैं। ये दोनों विज्ञान की अद्‌भुत देन, मानव के लिए अत्यधिक आवश्यक एवं आज के जीवन की मुख्य स्तम्भ हैं, लेकिन वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति का महत्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है, क्योंकि संभवतः इससे निरोगी काया के लिए आशा की कोई किरण प्राप्त हो।

मानव अपने ब्रह्माण्ड का प्रतिबिंब है। यह शरीर पंच भूतो से बना, पांच इन्द्रियों के वशीभूत तथा पांच भागों में बँटा (दो हाथ, दो पैर एवं एक धड़) हुआ है। इसे रखने के लिए एलोपैथी, यूनानी, प्राकृतिक, आयुर्वेद, योग, होम्योपैथी, मैग्नेटिक, विचार चिकित्सा, हिपनोजियम, रैकी, एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर, ओरा एवं पिरामिड पावर चिकित्सा आदि पद्धतियाँ वर्तमान में प्रयोग में आ रही है। ये सभी पद्धतियाँ अपने–अपने तरीकों से मानव शरीर को निरोगी करने का दावा करती है। आज के युग में औषधि विज्ञान चरम सीमा पर पहुँच चुका है, रोगों की संख्या में निरंतर बढ़ोतरी तथा जन मानस का गिरता स्वास्थ्य इस बात की ओर संकेत करता है कि क्यों नहीं हम विज्ञान की सहायता से एक ऐसी पद्धति को विकसित करें, जिससे समस्त रोगों से छुटकारा पाकर हम अपना बचाव करते हुए स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकें।

वाल्टेयर ने कहा था–'चिकित्सक जो औषधियाँ उपचार के लिए देते हैं, उनके उपयोग के बारे में वे स्वयं कम जानते हैं, जिन रोगों के बारे में औषधियाँ दी जाती हैं, उनके बारे में बहुत ही कम जानते है तथा जिन व्यक्तियों को यह औषधियाँ दी जाती है, उनके बारे में वे कुछ भी नहीं जानते है।'

ओलिवर वेनडेल होम ने कहा था कि 'अगर औषधि विज्ञान की पूरी पुस्तकें समुद्र में फेंक दी जावें तो जन मानस के लिए बहुत अच्छा होगा।

हाल ही में नारमन कंन्जिस की ने एक बहु–चर्चित पुस्तक 'ऐनाटोमी ऑफ इलनेस' में लिखा है कि 'मैं यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि क्यों और कैसे पीढ़ी दर पीढ़ी हम चिकित्सकों का आदर करते रहे हैं जबकि वे खतरनाक एवं बेकार औषधि देते रहे है।' फारमोकोलोजी शब्द ग्रीक भाषा के शब्द विष (पॉयजन) से ही निकला है। यह विचारणीय बिन्दु है कि विष से कैसे बचा जाए अर्थात औषधियों के प्रयोग के बिना हम कैसे स्वस्थ रहें और किस प्रकार अपने शरीर को स्वस्थ रखते हुए जीवन का पूर्ण आनन्द उठाएं। आज के वैज्ञानिक युग में यह भी आवश्यक है कि हम एक ऐसी राह अपनाएँ, जिससे किसी चिकित्सक के पास जाए बिना और बिना किसी औषधि का सेवन किए तथा चीरफाड़ की जरूरत का सहारा लिए। (जब तक कि और कोई विकल्प ही न हो) ही मात्र रोकथाम से ही अपने शरीर को पूरी तरह स्वस्थ रख सकें। स्वस्थ शरीर में विश्वास, सहनशक्ति, धीरज एवं मानसिक नियंत्रण अधिक होता है जो आनंदित जीवन की नींव है।

हम बीमार क्यों पड़ते है : अधिकतर बीमारियों का कारण दूषित वातावरण एवं प्रकृति के नियमों की अवहेलना करना होता है न कि शारीरिक कमियाँ। जानबूझ कर अथवा अनजाने में हम हर समय वातावरण से प्रभावित रहते हैं, जो हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है जैसे सूर्य की रोशनी, भोजन, पानी और वायु। हर समय किसी न किसी रूप में जीवाणुओं और अपने सहयोगियों के आक्रमण से प्रभावित रहते हैं। यहां तक कि कुछ जीवाणुओं के लिए तो हमारा शरीर एक 'फूड बैंक' बन जाता है और वे इस पर ही पलते हैं।

सामान्यतया हम रोगों के दुष्प्रभाव को ही देखते हैं, परन्तु दुष्प्रभावों से बचने के लिए उपायों की ओर पूरा ध्यान नहीं देते हैं। रोग एवं स्वास्थ्य दोनों शरीर के संतुलन पर निर्भर करते हैं। संतुलन की दशा में इनका शरीर पर प्रभाव लाभदायक और असन्तुलन की दशा में हानिकारक होता है। यह स्थिति उन दो शक्तिशाली सेनाओं जैसी होती है, जिसमें एक सेना का कमजोर होना एवं दूसरी का शक्तिशाली होना युद्ध के नतीजे पर अवश्य प्रभाव डालता है।

सूर्य का प्रभाव : आदिकाल से ही भारतवासी सूर्य के प्रकाश को स्वास्थ्यवर्द्धक एवं रोग नाशक शक्ति के रूप में मानते आए हैं। इसका उल्लेख अनेक ग्रंथों में किया गया है।

सूर्य रश्मियों के दैनिक प्रयोग से मनुष्य कफ, पित्त एवं वायु से उत्पन्न सभी रोगों से मुक्त होकर सौ वर्ष पर्यन्त जीवित रह सकता है। सूर्य की प्रातःकालीन किरणें अत्यधिक उपयोगी होती हैं।

जल : मानव शरीर में लगभग दो तिहाई मात्रा जल की होती है। जल की मात्रा को बनाए रखने के लिए 8 से 10 गिलास पानी रोज पीना हितकर होता है। मुख्यतः वृद्धों को तो बिना

प्यास 8-10 गिलास पानी पीना चाहिए, क्योंकि वृद्धावस्था में प्यास कम लगती है, लेकिन जल की आवश्यकता तो बनी ही रहती है। जापान के सिकनेस संस्थान ने हाल ही में आम जनता के लिए एक बुलेटिन जारी कर यह बताया कि जिन असामान्य बीमारियों का निदान अभी तक संभव नहीं हो पाया है, उन्हें जल चिकित्सा से ठीक किया जा सकता है। यह एक बहुत ही सरल, सुविधाजनक तथा बिना व्यय की चिकित्सा है। इसमें प्रातः उठते ही 4 गिलास पानी पीना होता हैं, जिससे कब्ज जैसे रोग तो कुछ दिनों में एवं दूसरे रोग कुछ समय में ठीक हो जाते हैं।

सांस की सामान्य प्रक्रिया : साधारणतया हमारे फेफड़े 8,76,000 गैलन वायु सांस के माध्यम से लेते हैं। एक मिनट में 15 बार सांस लेने की प्रक्रिया होती है। इस प्रकार एक दिन में 21600 बार यह प्रक्रिया होती है। सांस लेने की गति मनुष्य के स्वास्थ्य के साथ जुड़ी रहती है। जल्दी-जल्दी सांस लेना एक तनाव युक्त अस्वस्थ शरीर की ओर संकेत करता है। इसलिए यह जरूरी है कि पूर्ण मात्रा में सांस ली जाए। जो ऑक्सीजन सांस के द्वारा अंदर ली जाती है, उसकी 1/5 मात्रा मस्तिष्क के काम में आती है। व्यायाम एवं प्राणायाम करने से स्वतः ही वायु की आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है। योग सुधा बंगलौर के शोध के अनुसार यदि हम बाईं नासिका से 27 बार सांस की प्रक्रिया दिन में चार बार एक महीने तक अपनाएं, तो यह प्रक्रिया शांति प्रदान करती है। यही प्रक्रिया दाहिनी ओर से करने पर वजन कम हो जाता है।

व्यायाम : व्यायाम एक आश्चर्यजनक शक्तिवर्द्धक औषधि है। अगर वैज्ञानिक तरीके से प्रतिदिन 40 मिनट व्यायाम किया जाए, तो यह शरीर के अंगों के तन्तुओं (सेल्स) को पुनः ताजा कर देता है, जिससे शरीर रूपी मशीन सुचारू रूप से कार्य कर सकती है और जीवन का आनन्द पूरी तरह से उठाया जा सकता है। कहा गया है 'पहला सुख निरोगी काया' परन्तु भ्रमित होकर हम इसे भूलते जा रहे हैं। हाल के कई वैज्ञानिकों ने परीक्षण कर यह सत्य उजागर किया है कि यदि हम जिस किसी अंग का उपयोग नहीं करते हैं, तो उसे खो बैठते हैं। (यूज इट और लूज इट)

ध्यान : ध्यान एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे व्यक्ति अपने शरीर मन एवं आत्मा का शुद्धिकरण कर सकता है। यदि नियमित तौर पर दिन में 2 बार 15-15 मिनट के लिए ध्यान किया जाए, तो कई प्रकार की मानसिक बीमारियों से छुटकारा पाया जा सकता है तथा जीवन शांतिप्रिय एवं आनंदित हो जाता है। ध्यान के लिये यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने साथ, अपना कुछ समय अपनी रीढ की हड्डी को सीधा रखते हुए किसी सुविधाजनक स्थान पर कम्बल के आसन पर बैठकर ध्यान कर बिताएं। यह क्रिया अत्यधिक सरल है एवं मनुष्य जीवन से जुड़ी हुई है। इसके द्वारा शरीर के अंगों का आपस में इतना समन्वय हो जाता है कि सकारात्मक विचारों से व्यक्ति किसी भी रोग पर स्वतः ही विजय प्राप्त कर सकता है। इससे एक अनुभूति भी प्राप्त होती है, जिससे मनुष्य परिस्थितियों को स्वीकार कर लेता है। आप वही बन जाते हैं, जो आप सोचते हैं- इसका अनुभव ध्यान में ही होता हैं, क्योंकि आन्तरिक शक्ति का उपयोग ध्यान द्वारा ही किया जा सकता है। हमारा हृदय एक बंद मुट्ठी जितना ही है लेकिन हमारा यह अंग हर समय कार्यरत होता है। इसलिए इस पर दया कर इसे भी ध्यान प्रक्रिया द्वारा आपकी दीर्घकाल तक सेवा का अवसर दीजिए।

भोजन का अनुशासन : यहाँ तक कहा गया है कि मनुष्य का स्वास्थ्य उसके खाने पर आधारित है। इस संदर्भ में विटामिन 'सी' का बड़ा महत्व है। यदि उचित भोजन के मुख्य बिन्दु जानने का प्रयास किया जाए, तो ये प्रमुख रूप से तीन ही हैं- (1) भूख लगे तभी खाना (2) जो आपके शरीर के अनुकूल हो, वही खाना

(3) कम खाना। वर्तमान में इस संदर्भ में बहुत शोध हो रहे हैं एवं बाजार में कई अच्छी एवं उपयोगी पुस्तके उपलब्ध हैं। एक बात सदैव स्मरण रखने योग्य है कि 'पेट में दाँत नहीं होते'।

हँसना : जैसा कि हम भली-भाँति परिचित हैं कि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में एक नियमित स्तम्भ 'हँसना' सबसे अच्छी दवा है, प्रकाशित किया जाता है। यह सत्य है और आजकल भारत तथा संपूर्ण विश्व में ऐसे क्लब बन रहे हैं, जहां पर लोग मिलकर हँसते हैं। हँसने को इंटरनल जोगिंग भी कहा जाता है, जिससे पूरे शरीर का व्यायाम हो जाता है। हँसना आर्थिक दृष्टि से भी उपयोगी है, क्योंकि इसमें कुछ मांसपेशियां काम में आती है, जबकि गंभीर या गुस्सा करने की प्रवृत्ति में 20 से 29 मांसपेशियां काम में आती है। यदि आप ऐसा व्यक्तित्व बना चुके हैं कि आपके लिए हँसना असंभव है, तो 'मेकेनिकल' तरीके से हँसें, मगर हँसें जरूर। नारमन कन्जिस ने अपनी पुस्तक में इसे रोग निदान का एक महत्त्वपूर्ण साधन बताया है।

हमारा शरीर अद्भुत चमत्कारी और स्वतः संचालित मशीन है। इसकी देखभाल करना हमारा स्वयं का कर्तव्य है। इसे न तो हम किसी डॉक्टर या वैद्य के भरोसे और न ही किसी औषधि के सहारे छोड़ सकते हैं। इसमें मुख्य बात यह है कि इसे निरोगी रखने के लिए रोग की रोकथाम आवश्यक है। इससे हम अपने जीवन का पूर्ण आनन्द उठा सकते हैं। अस्वस्थ व्यक्ति किसी की सहायता नहीं कर सकता है। वह तो स्वयं ही दूसरों पर आश्रित होता है। शरीर के विभिन्न संकेतों का आदर करते हुए हमें समय रहते ही विश्राम करना, ध्यान लगाना, उपवास करना, हँसना आदि क्रियाएं करनी चाहिए। हम हर समय मानसिक बोझ ढोये रहते हैं, जो हमारे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। इस संदर्भ में यदि इतना ही याद रखा जाए तो हितकर होगा कि यह संसार हमारे से पहले भी था और हमारे बाद भी रहेगा तो, फिर अभी उसे उसी रूप में रहने दो। प्रकृति के विपरीत कार्यों से संघर्ष उत्पन्न होता है और यहीं से रोगों का प्रारम्भ होता है। जीवन अमूल्य है और इसका मुख्य स्वरूप ही स्वास्थ्य है। शरीर आपका है और स्पष्ट शब्दों में कहा जाए, तो यदि शरीर नहीं तो आप भी नहीं।

-श्री सेला, बाली (राज.)
दूरभाष : 02938-222013

आदेश-परिपत्र : मार्च 2015

1. राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रार्थना सभा को प्रभावी बनाये जाने हेतु दिशा निर्देश।
2. बोर्ड परीक्षा परिणाम की समीक्षा एवं शिक्षकों को प्रशंसा पत्र/के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही।
3. माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा परिणाम की समीक्षा के मानदण्ड।
4. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित परीक्षा-2015 की सुचारू व्यवस्था के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।
5. विभिन्न राजकीय विभागों/बोर्ड/निगम/संघ/संस्थान में अनुकम्पात्मक नियुक्ति दिनांक 05-07-2010 एवं इसके पश्चात् प्राप्त कनिष्ट लिपिक/समकक्ष की कम्प्यूटर पर ली जाने वाली टंकण गति परीक्षा के संबंध में।
6. भामाशाह योजनान्तर्गत राजकीय विद्यालयों में निर्माण/संसाधन उपलब्ध कराने हेतु स्वीकृति बाबत।
7. शिविरा प्रकाशन हेतु विद्यालयों की पता सूचियों को अद्यतन करने के सम्बन्ध में।
8. समन्वित विद्यालयों के प्रभावी संचालन हेतु निर्देश।

1. राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रार्थना सभा को प्रभावी बनाये जाने हेतु दिशा निर्देश।

● कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा/स/22423/2001-02 दिनांक 03 फरवरी, 2015 ● समस्त उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा ● विषय : राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रार्थना सभा को प्रभावी बनाये जाने हेतु दिशा निर्देश।

राज्य में संचालित समस्त राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों में प्रार्थना सभा को प्रभावी बनाये जाने हेतु निम्न दिशा-निर्देश प्रसारित किये जाते है-

1. विद्यालय में प्रार्थना सभा का समय 20 मिनट निर्धारित किया जावे।
2. प्रार्थना सभा में निम्न गतिविधियों को निर्धारित समय 20 मिनट में अनिवार्य रूप से सुनिश्चित किया जावे-
   (क) प्रार्थना, राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान, प्रतिज्ञा व समूहगान-5 मिनट
   (ख) सूर्य नमस्कार, योग अभ्यास व Meditation -10 मिनट
   (ग) समाचार पत्र का वाचन (अंग्रेजी व हिन्दी में बारी-बारी से)-5 मिनट
3. प्रार्थना सभा समाप्ति के पश्चात् विद्यार्थियों को कक्षा कक्षों में पंक्तिबद्ध रूप से भेजा जावे।

उक्त दिशा-निर्देशों की क्रियान्विति से शैक्षणिक वातावरण में सुधार के साथ-साथ विद्यार्थियों की स्वस्थ एकाग्रता में वृद्धि होने से, बौद्धिक विकास की दिशा में प्रभावी कदम होगा। निजी विद्यालयों को भी इस दिशा में आवश्यक रूप से पाबन्द कर पालना सुनिश्चित करावें।

(सुवालाल) निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

2. बोर्ड परीक्षा परिणाम की समीक्षा एवं शिक्षकों को प्रशंसा पत्र/के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/निप्र/डी-1/2101/पप/99-2000/53005 दिनांक 03 फरवरी 2015 ● समस्त उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा ● विषय : बोर्ड परीक्षा परिणाम की समीक्षा एवं शिक्षकों को प्रशंसा पत्र/के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही।

विषयान्तर्गत निदेशालय के समसंख्यक पत्र दिनांक 20.09.2000 द्वारा विस्तृत निर्देश जारी किये जाकर सक्षम अधिकारी द्वारा प्रतिवर्ष 31 अक्टूबर तक प्रभावी कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये गये थे। परिपत्र दिनांक 20.09.2000 की प्रति पृष्ठ भाग पर अंकित है।

निदेशालय स्तर पर समीक्षा करने पर पाया गया कि-

1. सामान्यतया राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा उच्च माध्यमिक परीक्षा (12वीं) परिणाम माह मई में एवं माध्यमिक परीक्षा (10वीं) परिणाम माह जून में घोषित हो जाता है। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा घोषित परीक्षा परिणाम की विद्यालयवार परीक्षा परिणाम की कम्प्यूटर-शीट प्रेषित की जाती है। प्राप्त शीट के आधार पर जिला शिक्षा अधिकारी का प्रथम दायित्व है कि वह-
   (i) विद्यालयों की पहचान जिनका परीक्षा परिणाम निर्धारित मापदण्ड से न्यून है। संबंधित शाला प्रधान के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही के प्रस्ताव निदेशालय को अधिकतम जुलाई के द्वितीय सप्ताह तक आसानी से भिजवाये जा सकते है, जो प्राप्त नहीं होते है।

   उक्त प्रस्ताव जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा विद्यालयों से प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं हैं चूँकि बोर्ड द्वारा अधिकृत परीक्षा परिणाम उनको अंकित विवरणानुसार प्रेषित किये जाने से जिला शिक्षा अधिकारी के स्तर से संस्था प्रधान का दायित्व आसानी से निदेशालय को सूचित किया जा सकता है।

   (ii) विषयवार व्याख्याताओं/अध्यापकों का परीक्षा परिणाम की सूचना संस्था प्रधानों की प्रथम वाक्-पीठ जो कि जुलाई के अन्तिम सप्ताह में आयोजित की जाती है, में संस्था प्रधान से प्राप्त कर समेकित रूप से निदेशालय/मण्डल अधिकारी को प्रेषित की जा सकती है।
2. यह भी सम्भव है कि माध्यमिक/उच्च माध्यमिक बोर्ड परीक्षा के परिणाम पुनर्मूल्यांकन के कारण संशोधित होते हैं किन्तु इस संशोधन से मोटे रूप से विद्यालय प्रभावित न होकर कुछ संख्या में छात्र/आंशिक रूप से विद्यालय एवं विषयाध्यापक प्रभावित हो सकते हैं। पुनर्मूल्यांकन परिणाम की प्रतीक्षा किये बिना उक्त सूचना प्रतिवर्ष अधिकतम 31 अगस्त तक उपलब्ध करवाने के लिये जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक उत्तरदायी होंगे।
3. उक्त प्राप्त सूचना के आधार पर विश्लेषण कर निदेशालय माध्यमिक शिक्षा एवं मण्डल कार्यालय द्वारा (सक्षमता के आधार पर) संबंधित संस्था प्रधान, व्याख्याता एवं विषयाध्यापक के विरुद्ध 30 सितम्बर

तक कारण बताओ नोटिस जारी कर संबंधित का अभिकथन प्राप्त करना सुनिश्चित करेंगे।

4. 15 अक्टूबर तक संबंधित का अभिकथन सक्षम अधिकारी को प्राप्त नहीं होने पर बोर्ड द्वारा प्रेषित सूचना के आधार पर संबंधित कार्मिक (संबंधित संस्था प्रधान/विषय व्याख्याता/वरिष्ठ अध्यापक) के विरूद्ध सी.सी.ए.-17 के तहत आरोप पत्र जारी किये जायें। जारी किये जाने वाला आरोप पत्र को सीधे ही रजिस्टर्ड डाक से भिजवाया जाना आवश्यक होगा।
5. जारी आरोप पत्र के विरुद्ध अभिकथन (बचाव) प्राप्त होने/नहीं प्राप्त होने (दोनों ही दशाओं में) सक्षम अधिकारी द्वारा विश्लेषण कर आवश्यक दण्डादेश से संबंधित आदेश प्रसारित किया जाना सुनिश्चित किया जायेगा। यह कार्यवाही 25 अक्टूबर तक की जाना आवश्यक होगा। आवश्यक आदेश की प्रति सभी संबंधित को प्रेषित किये जाने की सुनिश्चितता संबंधित सक्षम प्राधिकारी द्वारा की जायेगी।
6. पारित आदेश का उल्लेख संबंधित के सेवाभिलेख में 31 अक्टूबर तक आवश्यक इन्द्राज किये जाने का उत्तरदायित्व सक्षम अधिकारी के कार्यालय में कार्यरत संस्थापन प्रभारी का होगा। विफल रहने की दशा में संस्थापन प्रभारी का उत्तरदायित्व निर्धारित किया जायेगा।
7. निदेशालय स्तर पर विभागीय जाँच अनुभाग संस्था प्रधान/विषय व्याख्याताओं के विरुद्ध उक्त समस्त कार्यवाही निर्धारित तिथियों में करना सुनिश्चित करेंगे तथा अनुभाग अधिकारी एवं ग्रुप अधिकारी इसका नियमित रूप से प्रबोधन करेंगे।
8. श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम देने वाले संस्था प्रधान/विषय व्याख्याताओं/वरिष्ठ अध्यापकों को संबंधित मण्डल अधिकारी द्वारा प्रशंसा पत्र अपने (i)-अधीनस्थ जिला शिक्षा अधिकारी को 10 जनवरी तक (ii)- जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा अधीनस्थ विद्यालयों को 20 जनवरी तक भिजवाने की कार्यवाही सुनिश्चित की जाये ताकि संस्था प्रधान द्वारा 26 जनवरी के गणतंत्र दिवस समारोह में संबंधित को वितरित किये जा सकें।
9. जिला शिक्षा अधिकारी श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम वाले किसी संस्था प्रधान/विषय व्याख्याता/वरिष्ठ अध्यापक को जिला/राज्य स्तरीय पुरस्कार की अभिशंषा करनी है तो निर्धारित तिथि तक जिला कलक्टर द्वारा सूचित कार्यक्रम एवं परिपत्रों के अनुरूप आवश्यक प्रस्ताव जिला प्रशासन को प्रेषित कर सकेंगे।

संलग्न-'पृष्ठ भाग' अनुसार।

(सुवालाल) ● निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

3. माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा परिणाम की समीक्षा के मानदण्ड।-(पृष्ठ भाग)

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/निप्र/डी-1/2101/पप/99-2000/53005 दिनांक : 20.09.2000 ● परिपत्र ● विषय-माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा परिणाम की समीक्षा के मानदण्ड।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा आयोजित माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं में शिक्षकों एवं संस्था प्रधानों के परीक्षा परिणाम की समीक्षा कर विभाग द्वारा प्रतिवर्ष आवश्यक कार्यवाही की जाती रही है। बोर्ड परीक्षा परिणाम की समीक्षा कर संस्था प्रधान एवं शिक्षकों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही करने अथवा उन्हें प्रशंसा पत्र देने के लिए निम्नलिखित मानदण्ड निर्धारित किये जाते है-

1. संस्था प्रधान-

(अ) श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम-विद्यालय का माध्यमिक व उच्च माध्यमिक परीक्षा (दोनों अथवा एक) का परिणाम 80 प्रतिशत व इससे उच्च रहने पर संस्था प्रधान को प्रशंसा पत्र दिया जायेगा।

(ब) न्यून परीक्षा परिणाम-विद्यालय की उच्च माध्यमिक परीक्षा का परिणाम 40 प्रतिशत व इससे न्यून या माध्यमिक परीक्षा का परिणाम 30 प्रतिशत व इससे न्यून रहा हो अथवा दोनों न्यून रहे हों तो संस्था प्रधान के विरूद्ध सी.सी.ए. नियम-17 के अन्तर्गत कार्यवाही की जावे।

2. अध्यापक-

(अ) श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम-विषयाध्यापक का माध्यमिक अथवा उच्च माध्यमिक परीक्षा (दोनों अथवा एक) का परीक्षा परिणाम 80 प्रतिशत व इससे उच्च रहने पर प्रशंसा पत्र दिया जायेगा।

(ब) न्यून परीक्षा परिणाम-विषयाध्यापक का उच्च माध्यमिक परीक्षा का परिणाम 40 प्रतिशत व इससे न्यून या माध्यमिक परीक्षा का परिणाम 30 प्रतिशत व इससे न्यून रहा हो अथवा दोनों न्यून रहे हों तो संस्था प्रधान के विरुद्ध सी.सी.ए. नियम-17 के अन्तर्गत कार्यवाही की जावे।

उपर्युक्त मानदण्डों के अनुसार संस्था प्रधान अथवा अध्यापक के बोर्ड परीक्षा परिणाम की समीक्षा करते समय प्रशंसा पत्र देने अथवा अनुशासनात्मक कार्यवाही आरम्भ करने से पूर्व निम्नांकित तथ्यों पर वस्तुपरक (आब्जेक्टिव) दृष्टि से अवश्य विचार कर लिया जावे-

(1) संस्था प्रधान/अध्यापक का संबंधित सत्र में जुलाई से फरवरी के मध्य न्यूनतम ठहराव 5 माह होना आवश्यक है।
(2) परीक्षा परिणाम की गणना करते समय मुख्य परीक्षा के परिणाम को ही सम्मिलित किया जाये।
(3) संस्था प्रधान के लिए विद्यालय के परीक्षा परिणाम की गणना करते समय उच्च माध्यमिक परीक्षा में विद्यालय में चल रहे सभी संकायों के परीक्षा परिणाम को मिलाकर औसत परीक्षा परिणाम की गणना की जावेगी।
(4) यदि अध्यापक एक ही विषय के किसी कक्षा के एक से अधिक खण्ड पढ़ाता हो तो सभी खण्डों के परीक्षा परिणाम का औसत निकाला जावे। औसत निकालने के लिए परीक्षा में प्रविष्ट व उत्तीर्ण छात्रों की संख्या को आधार माना जावेगा।
(5) सानुग्रह उत्तीर्ण छात्रों के परीक्षा परिणाम को विद्यालय एवं अध्यापक के परीक्षा परिणाम में उत्तीर्ण छात्रों के साथ ही सम्मिलित किया जावेगा।
(6) माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षा के किसी विषय के एक से अधिक प्रश्न पत्र हो और प्रत्येक प्रश्न पत्र को पढ़ाने वाले विषयाध्यापक को उसका परीक्षा परिणाम दिया जावेगा।

3. सक्षम अधिकारी-

(अ) संस्था प्रधान (माध्यमिक/उच्च माध्यमिक) के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही निदेशालय स्तर पर विभागीय जाँच अनुभाग द्वारा की जायेगी। प्राध्यापक के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही का आरंभ मण्डल अधिकारी द्वारा किया जायेगा जिसका अनुमोदन निदेशालय से करवाना होगा।

(ब) वरिष्ठ अध्यापक के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही के बारे में मण्डल अधिकारी सक्षम होगा तथा तृतीय श्रेणी अध्यापकों के लिए समस्त कार्यवाही जिला शिक्षा अधिकारी स्तर पर की जायेगी।

(स) श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम पर प्रशंसा पत्र देने के लिए निम्न अधिकारी सक्षम होंगे-

पद	सक्षम अधिकारी
प्राध्यापक एवं संस्था प्रधान (मावि./उमावि)	- मण्डल अधिकारी
अध्यापक एवं वरिष्ठ अध्यापक	- जिला शिक्षा अधिकारी

प्रशंसा पत्र तैयार कर प्रस्तुत करने का प्रथम दायित्व जिला शिक्षा अधिकारी का होगा। उपरोक्तानुसार प्रशंसा पत्र देने/अनुशासनात्मक कार्यवाही आरंभ करने संबंधी समस्त कार्य प्रति वर्ष 31 अक्टूबर तक पूर्ण कर संबंधित अध्यापक/संस्था प्रधान की निजी पंजिका/गोपनीय प्रतिवेदन में भी संलग्न किया जावे। ● ह. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

निदेशालय के परिपत्र समसंख्यक दिनांक 12/09/2001 के द्वारा बिन्दु संख्या-2 के भाग (ब) व बिन्दु संख्या-3 के भाग (1) में निम्नानुसार संशोधन किया गया-

बिन्दु संख्या-2 (ब) न्यून परीक्षा परिणाम-विषयाध्यापक का उच्च माध्यमिक परीक्षा का परीक्षा परिणाम 50 प्रतिशत व इससे न्यून या माध्यमिक परीक्षा का परिणाम 40 प्रतिशत व इससे न्यून रहे हो अथवा दोनों न्यून रहे हो तो उसके विरुद्ध सीसीए नियम-17 के अन्तर्गत कार्यवाही की जावे।

बिन्दु संख्या-3 (1) संस्था प्रधान तथा प्राध्यापक (मावि./उमावि) के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही निदेशालय स्तर पर विभागीय जाँच अनुभाग द्वारा की जायेगी। ●सुवालाल, निदेशक मा.शि.राज. बीकानेर

4. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित परीक्षा-2015 की सुचारू व्यवस्था के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा/माध्य/अ-3/बोर्ड परीक्षा निर्देश/2015 दिनांक : 15.01.2015 ● 1. समस्त उप निदेशक (माध्यमिक) ● 2. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक-प्रथम) ● विषय : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित परीक्षा-2015 की सुचारू व्यवस्था के सम्बन्ध में दिशा-निर्देश।

उपरोक्त विषयान्तर्गत दिनांक : 13.01.2015 को आयोजित उच्चाधिकार प्राप्त कमेटी की बैठक में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा आयोजित बोर्ड परीक्षा-2015 के संबंध में लिये गये निर्णयों के संबंध में निम्नांकित दिशा-निर्देश जारी किये जाते हैं, समस्त जिला शिक्षा अधिकारी इन निर्देशों की पालना सुनिश्चित करेंगे।

1. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर द्वारा विभिन्न जिलों में कुल 164 उच्च प्राथमिक विद्यालयों को बोर्ड परीक्षा केन्द्र बनाया गया है। यदि उक्त विद्यालय एकीकरण प्रक्रिया में समन्वित हो गये हैं तो भी बोर्ड परीक्षा इन्हीं विद्यालय भवनों में आयोजित होंगी। इसमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन जिला शिक्षा अधिकारी अपने स्तर पर नहीं करेंगे।
2. उच्च प्राथमिक विद्यालयों के बोर्ड परीक्षा केन्द्रों पर समस्त परीक्षा संबंधी व्यवस्थाऐं गत वर्ष की भांति ही जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक द्वारा की जायेगी। यदि आवश्यकता हो तो जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा का भी सहयोग लिया जाये।
3. बोर्ड परीक्षा पूर्ण होने तक अपने जिले के डाईट/आईएएसई/एसआईईआरटी./ईटी. सैल में कार्यरत प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक /व्याख्याता स्तर के अधिकारियों को इन बोर्ड परीक्षा केन्द्रों पर इनके पद अनुरूप नियुक्ति कर बोर्ड परीक्षा तैयारी एवं बोर्ड परीक्षा संचालन का उत्तरदायित्व देवें।
4. यदि बोर्ड परीक्षा केन्द्रों पर केन्द्राधीक्षक की आवश्यकता हो तो नजदीक के विद्यालय के संस्था प्रधान, जिसके विद्यालय में बोर्ड परीक्षा केन्द्र नहीं हो, को केन्द्राधीक्षक प्राथमिकता से लगाया जावे। यह अधिकारी बोर्ड परीक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व तथा सम्पूर्ण होने तक अपने कार्य के साथ बोर्ड परीक्षा केन्द्र का दायित्व भी निभायेंगे।
5. जिला शिक्षा अधिकारी अपने जिले में चिन्हित संवेदनशील तथा अतिसंवेदनशील परीक्षा केन्द्रों पर विगत् वर्षानुसार अतिसंवेदनशील केन्द्रों पर 4-4 पुलिस कर्मी व संवेदनशील केन्द्रों पर 2-2 पुलिस कर्मी पुलिस विभाग द्वारा नियुक्त करवाने की कार्यवाही करावें। इन केन्द्रों पर यथा आवश्यक अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था भी की जाये ताकि असामाजिक तत्व परीक्षा व्यवस्था को प्रभावित न कर सके। इस हेतु जिला स्तरीय बोर्ड परीक्षा संचालन समिति द्वारा पृथक से आदेश जारी किये जाएंगे, जो प्रभावी होंगे।
6. जिला शिक्षा अधिकारी अपने जिले में चिन्हित संवेदनशील तथा अतिसंवेदनशील परीक्षा केन्द्र वाले विद्यालयों में परीक्षा पूर्व छात्र अभिभावक परिषद एवं विद्यालय विकास मिति की बैठक परीक्षा पूर्व तैयारी अवकाश से पहले सुनिश्चित करें। इससे परीक्षा संचालन में स्थानीय जनसहयोग मिलने के साथ-साथ पारदर्शिता को भी बढ़ावा मिलेगा।
7. प्रत्येक जिला मुख्यालय पर जिला शिक्षा अधिकारी तथा सभी मण्डलों के उप निदेशक माध्यमिक कार्यालयों में परीक्षा के दौरान दिनांक 07 मार्च 2015 से परीक्षा समाप्ति तक एक कन्ट्रोल रूप स्थापित किया जाये जो कि प्रायः 07 बजे से रात्रि 09 बजे तक कार्यरत रहेंगे। इन सभी नियन्त्रण कक्षों के दूरभाष नम्बर, फैक्स नंबर, ईमेल आईडी व प्रभारी के मोबाईल नंबर की सूचना संबंधित मण्डल अधिकारी दिनांक 16 फरवरी 2015 तक निदेशालय के ईमेल पता secondarydd@gmail.com पर निम्नांकित प्रारूप में अनिवार्य रूप से उपलब्ध करावें जिससे कि उक्त सूचना माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर को उपलब्ध करवाई जा सके :-

प्रारूप

क्र. सं.	मण्डल का नाम	जिले का नाम	कन्ट्रोल रूम का पता	कन्ट्रोल रूम का दूरभाष नं.	कन्ट्रोल रूम का फैक्स नं.	कन्ट्रोल रूम की ईमेल आईडी	कन्ट्रोल रूम प्रभारी का नाम	कन्ट्रोल रूम प्रभारी का मो. नं.
1	2	3	4	5	6	7	8	9

नोट :– उक्त सूचना मण्डल अधिकारी अपने कार्यालय सहित अपने अधिनस्थ कार्यालय की सूचना समेकित कर Excel font में प्रेषित करेंगे।

8. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी दिनांक 10.2.2015 तक परीक्षा केन्द्रों हेतु केंद्राधीक्षक एवं अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक की नियुक्त करेंगे।
9. गत वर्षों में बोर्ड की परीक्षा में लापरवाह रहे अधिकारियों/कार्मिकों को इस वर्ष बोर्ड परीक्षा संबंधी कार्य से वंचित रखा जाये। इस वर्ष बोर्ड परीक्षा-2015 में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही एवं प्रतिबन्धित जिले में स्थानान्तरण के प्रस्ताव परीक्षा समाप्ति पर निदेशालय को भिजवाऐं। इस हेतु जिला शिक्षा अधिकारी उत्तरदायी होंगे।
10. बोर्ड परीक्षा-2015 की उत्तर पुस्तिकाओं के संग्रहण केन्द्र पर निष्ठावान कर्मचारियों की नियुक्ति की जाये।
11. प्रश्न पत्र अलमारी के एक ताले की सभी चाबी केन्द्राधीक्षक एवं दूसरे ताले की सभी चाबी अतिरिक्त केन्द्राधीक्षक के पास रखने के निर्देश दिये गये हैं। इसकी कठोरता से पालना की जाये।
12. केन्द्र प्रभारी (जिसे प्रश्न पत्र खोलना है) को परीक्षा की पूर्व संध्या तक मुख्यालय पर पहुंचने की सुनिश्चितता जिला शिक्षा अधिकारी करेंगे तथा जिला शिक्षा अधिकारी के नियन्त्रण कक्ष के द्वारा सांय 07 बजे से रात्रि 09 बजे तक इसकी मोनेटरिंग की जाये।

इन निर्देशों की सख्ती से पालना सुनिश्चित की जावे।

सुवालाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

5. विभिन्न राजकीय विभागों/बोर्ड/निगम/संघ/संस्थान में अनुकम्पात्मक नियुक्ति दिनांक 05-07-2010 एवं इसके पश्चात् प्राप्त कनिष्ट लिपिक/समकक्ष की कम्प्यूटर पर ली जाने वाली टंकण गति परीक्षा के संबंध में।

● राजस्थान सरकार ● भाषा एवं पुस्तकालय विभाग ● डॉ. राधाकृष्णन शिक्षा संकुल ब्लॉक नं. 8, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर ● क्रमांक : प.23(1)भापुवि/क.टं.प./2012/9323-9685 जयपुर, दिनांक 9-1-2015 ● अतिरिक्त मुख्य सचिव/समस्त प्रमुख शासन सचिव, शासन सचिव, समस्त विभागाध्यक्ष/जिला कलक्टरर्स/संभागीय आयुक्त/समस्त अध्यक्ष/प्रबन्ध निदेशक, निगम, बोर्ड संघ व संस्थान। ● परिपत्र ● विषय : दिनांक 05-07-2010 एवं इसके पश्चात् विभिन्न राजकीय विभागों/बोर्ड/निगम/संघ/संस्थान में अनुकम्पात्मक नियुक्ति प्राप्त कनिष्ट लिपिक/समकक्ष की कम्प्यूटर पर ली जाने वाली टंकण गति परीक्षा के संबंध में।

कार्मिक (क-2) विभाग के परिपत्र क्रमांक प.5(51)कार्मिक/क-/88/पार्ट दिनांक 19.08.2010 एवं 21.09.2010 के अनुसार दिनांक 05.07.2010 एवं इसके पश्चात विभिन्न राजकीय विभागों/बोर्ड/निगम/संघ/संस्थान में मृत राज्य कर्मचारियों के आश्रितों के रूप में अनुकम्पात्मक नियुक्ति प्राप्त (कनिष्ट लिपिक/समकक्ष) आश्रितों की कम्प्यूटर पर ली जाने वाली टंकण गति परीक्षा भाषा एवं पुस्तकालय विभाग द्वारा आयोजित की जा रही है।

इस क्रम में कार्मिक विभाग के उक्त परिपत्रानुसार अनुकम्पात्मक नियुक्ति प्राप्त (कनिष्ट लिपिक/समकक्ष) आश्रितों को नियुक्ति के पश्चात् तीन वर्ष के भीतर कम्प्यूटर पर टंकण गति परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य है।

अतः दिनांक 05.07.2010 एवं इसके पश्चात नियुक्ति प्राप्त जिन कार्मिकों को नियुक्ति के पश्चात् तीन वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और उन्होंने अभी तक कम्प्यूटर टंकण गति परीक्षा उत्तीर्ण नहीं की है, उन्हें कार्मिक (क-2) विभाग से प्राप्त सहमति आई.डी. क्रमांक 794/डीओपी/ए-2/2014 दिनांक 28.11.14 के क्रम में उक्त परीक्षा में सम्मिलित होने का एक अन्तिम अवसर प्रदान किया गया है। इस क्रम में विभाग द्वारा दिनांक 31.03.15 तक प्राप्त आवेदनों की परीक्षा का आयोजन मई, 2015 में किया जावेगा एवं दिनांक **31.03.15** के पश्चात् प्राप्त परीक्षा आवेदनों को उक्त परीक्षा में सम्मिलित नहीं किया जायेगा। तत्पश्चात् नियुक्ति दिनांक से तीन वर्ष की अवधि पूर्ण होने के पश्चात कार्मिक के नियोक्ता अधिकारी कार्मिक विभाग से अपने स्तर पर शिथिलता प्राप्त करने के पश्चात् ही इस विभाग को कम्प्यूटर टंकण गति परीक्षा के आवेदन अग्रेषित कर सकेंगे। ऐसे कार्मिकों के विभाग/कार्यालयों द्वारा इस विभाग को अग्रेषित किये गये परीक्षा आवेदनों के साथ सक्षम शिथिलन/स्वीकृति संलग्न किया जाना आवश्यक होगा।

शासन सचिव ● क्रमांक : प.23(1)भापुवि/क.टं.प./2012/9323-9685 जयपुर, दिनांक : 9.1.2015

6. भामाशाह योजनान्तर्गत राजकीय विद्यालयों में निर्माण/संसाधन उपलब्ध कराने हेतु स्वीकृति बाबत।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/साप्र/डी-1/3328/वाली/भवनवान/2013 दिनांक 07 फरवरी 2015 ● समस्त उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा ● विषय : भामाशाह योजनान्तर्गत राजकीय विद्यालयों में निर्माण/संसाधन उपलब्ध कराने हेतु स्वीकृति बाबत।

विषयान्तर्गत निदेशालय स्तर पर दानदाताओं को निदेशालय स्तर से जारी की जाने वाली स्वीकृति प्रक्रिया के सरलीकरण के क्रम में आवेदन पत्र का प्रारूप नये रूप से तैयार किया गया है, जो संलग्न है। माह मार्च 2015 से प्राप्त होने वाले आवेदन पत्र नवीन प्रारूप में ही बाद आवश्यक पूर्तियाँ निदेशालय को भिजवाये जाने की कार्यवाही आपके स्तर से की जानी है।

भवन निर्माण में योगदान के प्रार्थना पत्रों की मासिक समीक्षा आपके

स्तर से की जाने के फलस्वरूप भामाशाह राजकीय विद्यालयों में अधिक संख्या में अधिक योगदान के साथ आकर्षित होंगे। यदि कोई भामाशाह, इस क्रम में आपके कार्यालय में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करता है तो उचित सम्मान के साथ सहयोग प्रदान किया जाना भी मौलिक कर्त्तव्य से संबंधित है। ● (सुवालाल) निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

दानदाता (भामाशाह) द्वारा राजकीय विद्यालयों में योगदान से सम्बन्धित स्वीकृति हेतु आवेदन पत्र

निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर	निर्माण/संसाधनों का विवरण (✓ करें)- (क) मा.वि./उ.मा.वि. हेतु नवीन भवन निर्माण या (ख) विद्यमान भवन में विस्तार निर्माण या (ग) निर्मित भवन को राज्य सरकार को सौंपने हेतु या (घ) विद्यालय में मरम्मत या (ड) विविध संसाधन

विषय- भामाशाह योजनान्तर्गत राजकीय विद्यालयों में निर्माण/ संसाधन उपलब्ध कराने हेतु स्वीकृति बाबत।

महोदय

मैं राजकीय माध्यमिक विद्यालय/उच्च माध्यमिक विद्यालय.....
.....में
निम्नानुसार योगदान व सहयोग का इच्छुक हूँ। विवरण निम्न प्रकार है-

1. दानदाता का नाम.....
2. हैसियत (व्यक्तिगत/ट्रस्ट/फर्म/संस्था/कम्पनी).....
3. दानदाता के निवास स्थान से संबंधित पूर्ण विवरण-गाँव/शहर.....
   ..... ग्राम पंचायत/नगरपालिका.....
   पंचायत समिति/तहसील.....
   जिला.....राज्य.....पिनकोड.....
4. योगदान का प्रयोजन यथा परिवार सदस्यों की याद/परिवार में खुशी का आगमन/सामाजिक सरोकार आदि विवरण अंकित करें.....
   .....
5. योगदान में दी जाने वाली प्रकृति का विवरण यथा (✓ करें)-
   ए-नवीन निर्माण के लिए- 1. भूमि 2. भवन 3. भूमि मय भवन
   बी-विद्यमान भवन में विस्तार राशि
   सी-निर्मित भवन को राज्य सरकार को सौपना
   डी-विविध मरम्मत राशि
   ई-विविध संसाधन उपलब्ध करवाने की राशि
6. ब्ल्यू प्रिन्ट व अनुमानित लागत-क्रम संख्या 05 के ए से डी के लिए सार्वजनिक निर्माण विभाग/माध्यमिक शिक्षा परिषद/स्वायतशासी संस्था के सक्षम तकनीकी अधिकारी द्वारा तैयार किया गया ब्ल्यू प्रिन्ट व अनुमानित लागत.....रु. (संलग्न किया जाये)
7. क्रम संख्या 05 के 'ई' के लिये विविध संसाधन पर व्यय की जाने वाली अनुमानित राशि.....रु. विविध संसाधन की दशा में विद्यालय में उपलब्ध कराये जाने वाले संसाधन का विवरण, संख्या व प्रचलित बाजार मूल्य के अनुसार अनुमानित कुल लागत (.....रु.), जो स्वयं दानदाता द्वारा तैयार किया गया विवरण पत्र, संबंधित विद्यालय प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक द्वारा भी प्रति हस्ताक्षरित हो ताकि विद्यालय में आवश्यकता का वास्तविक आंकलन हो सके।
9. विद्यालय भवन के नव निर्माण/विद्यालय भवन को विद्यालय के लिये दान करने की स्थिति में विद्यालय का नामकरण करने संबंधी प्रस्ताव (यदि दानदाता चाहता है) एवं भूमि/भवन/भूमि रहित भवन के राज्य सरकार के पक्ष में लिखे जाने वाले उप पंजीयक कार्यालय में पंजीकृत संबंधी विवरण।

7. शिविरा प्रकाशन हेतु विद्यालयों की पता सूचियों को अद्यतन करने के सम्बन्ध में।

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा/माध्य/प्रकाशन/प्रेषण/5592/2014 दिनांक : 24.11.2014 ● समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा प्रथम/द्वितीय ● विषय : शिविरा प्रकाशन हेतु विद्यालयों की पता सूचियों को अद्यतन करने के सम्बन्ध में।

उपर्युक्त विषयान्तर्गत माध्यमिक शिक्षा, निदेशालय द्वारा प्रकाशित शिविरा (मासिक) एवं नया शिक्षक (त्रैमासिक) की डाक पतों की सूचियों (mailing list) को अद्यतन किए जाने के लिए आपके अधीन संचालित राजकीय माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पूर्ण पतों का विवरण निम्न प्रारूप में दो प्रतियों में सात दिवस में भिजवाना सुनिश्चित करें-

क्र. स.	विद्यालय का नाम	ग्राम पोस्ट	पिन कोड	वाया	तहसील	जिला
1	2	3	4	5	6	7

(सुवा लाल) निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर

8. समन्वित विद्यालयों के प्रभावी संचालन हेतु निर्देश

● कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर ● क्रमांक : शिविरा-मा./माध्य/अ-।/आदर्श वि./21312/वो-2/2014 दिनांक 12 फरवरी 2015 ●परिपत्र

राज्य सरकार द्वारा शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु कक्षा-1 से 12 एवं कक्षा 01 से 10 तक के समन्वित विद्यालयों की स्थापना की गयी है। समन्वित विद्यालयों में कार्यरत समस्त अध्यापकों का प्रशासनिक नियंत्रण विद्यालय के प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक के अधीन होने से अध्यापकों की विद्यालयों में नियमित उपस्थिति सुनिश्चित होगी। विद्यालयों के संचालन हेतु कक्षावार अध्यापकों की उपलब्धता तथा प्रभावी परिवीक्षण से शिक्षा के स्तर व गुणवत्ता में सुधार तथा ड्रॉप-आउट दर में कमी होगी।

विभाग में उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने के लिये समन्वित विद्यालयों का प्रभावी संचालन हेतु निम्नानुसार निर्देश जारी किए जाते है-

1. विद्यार्थियों का नामांकन व प्रवेश-

प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा कक्षा 1 में प्रवेश लेकर विद्यालय की उच्चतम कक्षा 12/10वी (यथा स्थिति) तक अनवरत गुणात्मक शिक्षा प्राप्त करने की सुनिश्चितता हेतु संस्था प्रधान निम्नानुसार कार्यवाही सुनिश्चित करेंगे:-

1.1 चाइल्ड ट्रेकिंग सर्वे के आधार पर शिक्षा से वंचित बच्चों का प्रवेशोत्सव के द्वारा विद्यालय में नामांकन सुनिश्चित किया जाये।

इस हेतु प्रवेशोत्सव में जन प्रतिनिधियों/गणमान्य नागरिकों/ अधिकारियों एवं स्वयं सेवी संस्थाओं की सहभागिता सुनिश्चित की जाये। संस्था प्रधान विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों के लिए कम से कम 5 बच्चों के प्रवेश का लक्ष्य निर्धारित कर सकेगें। विद्यालयों से जोड़े गये बच्चों का ठहराव भी सुनिश्चित किया जाये।

1.2 नव प्रवेशित बच्चों को सामूहिक रूप से तिलक/अर्चन कर पाठ्य सामग्री सहित प्रवेश दिया जाये। 05 मई को ग्राम पंचायत की बैठक में प्रवेशोत्सव की समीक्षा कर 1 जुलाई से 7 जुलाई की कार्य योजना पर विचार किया जाये।

1.3 प्रवेशोत्सव में श्रेष्ठ कार्य करने वाले सेवक एवं स्वयंसेवी संस्था को ग्राम पंचायत की जुलाई माह के द्वितीय पाक्षिक बैठक में सम्मानित किया जाये एवं इस कार्यक्रम की पूर्ण फोटोग्राफी कराकर फोटोग्राफ्स ग्राम पंचायत व विद्यालय में रखी जाये। इस हेतु राशि छात्रकोष/विद्यालय कोष से व्यय की जा सकेगी।

1.4 नामांकन में वृद्धि के लिए प्रवेशोत्सव प्रारम्भ किये जाने से पूर्व राज्य सरकार द्वारा शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु संचालित योजनाओं का संक्षिप्त विवरण (पेम्पलेट) जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक द्वारा विद्यालयों एवं ग्राम पंचायतों के माध्यम से राजस्व ग्राम एवं ढाणियों तक वितरित करना सुनिश्चित करें। योजनाओं के संक्षिप्त विवरण का प्रारूप निदेशक माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा जिला शिक्षा अधिकारियों को 15 अप्रेल तक उपलब्ध करवाया जायेगा ताकि जिला शिक्षा अधिकारी 1 मई से पूर्व आवश्यक प्रकाशन एवं मुद्रण करवा सके। इस व्यवस्था से समस्त जिलों में एक रूपता रहेंगी। निदेशालय स्तर पर वरिष्ठ सम्पादक 'शिविरा' उत्तरदायी होंगे।

1.5 राज्य सरकार द्वारा शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु संचालित योजनाओं का संक्षिप्त विवरण विद्यालय परिसर में वॉल-पेन्टिंग के माध्यम से भी संस्था प्रधान द्वारा सुनिश्चित किया जायेगा।

1.6 प्रवेशित बच्चों में से ग्राम पंचायत द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के चिन्हित कम से कम एक बच्चे को स्थानीय भामाशाह/ग्रामीण समुदाय का मुखिया/स्वयं सेवी संस्था/लोकसेवक द्वारा गोद लिया जाना भी नामांकन की दिशा में अभूतपूर्व पहल होगी।

2. शैक्षिक सुधार

2.1 समन्वित विद्यालयों के अधीन चल रही समस्त कक्षाओं पर नियंत्रण समन्वित विद्यालय के संस्था प्रधान (प्रधानाचार्य/प्रधानाध्यापक) का होगा।

2.2 समन्वित विद्यालयों के अधीन किये गये समस्त विद्यालयों में कार्यरत समस्त स्टाफ समन्वित विद्यालय के संस्था प्रधान के अधीन होंगे तथा इनका उपस्थिति रजिस्टर एक ही होगा। यदि विशेष परिस्थितियों में एक ही रजिस्टर संधारित किया जाना संभव नहीं है तो जिला शिक्षा अधिकारी, माध्यमिक शिक्षा से लिखित अनुमति प्राप्त कर ही पृथक उपस्थिति रजिस्टर संधारित किया जा सकेगा।

2.3 राज्य सरकार के आदेश क्रमांक पं. 21(15) प्रा.शि./आयो./ 2012 दिनांक 10.11.2014 के द्वारा समन्वित होने वाले विद्यालयों के शिक्षकों की वेतन व्यवस्था मार्च 2015 तक पूर्व की भाँति यथावत रहेगी। इस अवधि में प्रारम्भिक शिक्षा के अध्यापकों, सहायक कर्मचारियों की उपस्थिति, अवकाश आदि की सूचना संस्था प्रधान द्वारा ही संबंधित ब्लॉक शिक्षा अधिकारी को भेजी जायेगी तथा उसी अनुसार वेतन भत्ते आहरित किये जायेंगे।

2.4 समन्वित विद्यालय का संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक कक्षा/वर्ग के लिए एक कक्षा-कक्ष हो अर्थात किसी भी कक्षा को दूसरी कक्षा के साथ मिलाकर नहीं बैठाया जाए। अपरिहार्य स्थिति में भवन में कक्षा-कक्षों का अभाव होने पर एक ही कक्ष में बैठाई जाने वाली कक्षाओं का संचालन विद्यार्थियों को कक्षावार अलग-अलग बैठाकर ही किया जाये।

2.5 समन्वित विद्यालय का संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करे कि कक्षा 1 से 5 तक एक शिक्षक द्वारा एक ही विषय सभी कक्षाओं को पढ़ाया जाये अर्थात् विषय अध्यापक के रूप में एक शिक्षक को सभी कक्षाओं में एक विषय की जिम्मेदारी दी जाये, ताकि शिक्षक को बच्चों के एक विषय में शैक्षिक स्तर की जानकारी रहे, विषय की जानकारी रहे एवं वह कार्ययोजना बनाकर कार्य कर सके।

2.6 शाला प्रधान को एक लीडर के रूप में अपनी टीम के सभी सदस्यों के साथ मिलकर कार्य करना है। एक अच्छा विद्यालय बनाने के लिए शाला प्रधान की भूमिका महत्वपूर्ण है। शाला प्रधान इस हेतु अपने विद्यालय की कार्य योजना तय करे। कार्य योजना के लक्ष्यों को पाने के लिए उपलब्ध भौतिक, मानवीय व वित्तीय साधनों का समुचित उपयोग सुनिश्चित कर समय-समय पर विद्यालय की उपलब्धियों और विभिन्न गतिविधियों की प्रगति पर अपने साथियों के साथ व्यापक विचार विमर्श कर समीक्षा की जाये। निरीक्षण अधिकारी भी वार्षिक कार्ययोजना क्रियान्विति की प्रगति की समीक्षा करें।

2.7 विद्यालय समन्वयन से पूर्व जिन विद्यालयों में सीसीई लागू थी उन विद्यालयों में समन्वय के पश्चात भी सीसीई कार्यक्रम लागू रहेगा। संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करते हुए निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान देवें :-

(क) सीसीई विद्यालयों में मूल्यांकन हेतु कक्षा 2 तथा ऊपर आधार रेखा मूल्यांकन के माध्यमिक से विद्यार्थियों का स्तर निर्धारण किया जाये तथा शिक्षण कार्य हेतु विद्यार्थियों के उप समूहों का निर्माण किया जाये। प्रत्येक कक्षा तथा विषय के अधिगत उद्देश्यों को व्यवस्थित करते हुए शिक्षण सत्र को ढाई-ढाई माह के चार टर्म में विभाजित किया जाये।

(ब) शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को चिह्नित करते हुए शिक्षण की योजना तैयार की जायेगी तथा सतत् अवलोकन के आधार पर विद्यार्थियों की प्रगति का निरतंर आंकलन कर प्रत्येक माह के अन्त में प्रगति को उपसमूह वार समेकित रूप से दर्ज किया जाये।

(स) पाठ्यक्रमीय लक्ष्यों में मूल्यांकन की विविध तकनीकों एवं उपलब्धि स्तर के परीक्षण द्वारा निश्चित अवधि के अन्त में

उपलब्धि के स्तर का मूल्यांकन कर योगात्मक मूल्यांकन किया जाये। वर्ष में कुल चार बार योगात्मक मूल्यांकन किया जाये।

(द) चतुर्थ योगात्मक मूल्यांकन के उपरान्त 1 मई से 15 मई तक की अवधि में अपेक्षा अनुरूप उपलब्धि न होने पर संबंधित अधिगम क्षेत्र में सुदृढीकरण का कार्य किया जाये।

(य) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को तीन ग्रेड्स (A, B, C) के द्वारा निम्नानुसार दर्ज किया जायेगा।

A स्वतंत्र रूप से काम करने की क्षमता (अग्रिम स्तर की समझ)

B शिक्षक की मदद से काम करने की स्थिति (मध्यम स्तर)

C शिक्षक की विशेष मदद से काम करने की स्थिति (आरम्भिक स्तर की समझ)

2.8 शाला प्रधान 1 से 8 तक कक्षाओं में सर्वशिक्षा अभियान तथा कक्षा 9, 10/11 व 12 में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की विभिन्न योजनाओं को लागू करना सुनिश्चित करें।

2.9 शाला प्रधान विद्यालय के शैक्षिक वातावरण को जीवन्त व गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए समस्त अधीनस्थ अध्यापकों व कर्मचारियों के साथ माह में एक बार बैठक करें । यह बैठक पूर्णतया अकादमिक हो, जिसमें आपसी विचार विमर्श से कक्षा शिक्षण व अन्य शैक्षिक/सह शैक्षिक गतिविधियों में यथा संभव सुधार किया जाये।

2.10 शाला प्रधान नियमानुसार अपने कक्षा अवलोकन कार्य करना सुनिश्चत करें तथा उसका रिकार्ड भी संधारित करें तथा शिक्षकों को आवश्यक मार्गदर्शन भी प्रदान करें।

2.11 शाला प्रधान को यदि लगे कि कोई शिक्षक अपने दायित्व को ठीक से नहीं निभा रहा है तो उन्हें उत्तरदायित्व निर्वहन हेतु प्रेरित किया जावे।

2.12 पुस्तकालय, वाचनालय तथा आई.सी.टी. लैब का प्रभावी उपयोग कर विद्यार्थियों को इसके उपयोग के लिए अधिक से अधिक प्रेरित किया जाए।

2.13 विद्यालयों में पुस्तकालय का उपयोग सुनिश्चित करने हेतु समय विभाग चक्र में पुस्तकालय हेतु कालांश आवंटित किया जावे।

2.14 समन्वित विद्यालयों में छात्रों का अधिकाधिक प्रवेश सुनिश्चित किया जावें तथा संस्था प्रधान कक्षा-01 से 05 हेतु न्युनतम 150 छात्र, कक्षा-06 से 08 तक न्यूनतम 115 छात्र तथा कक्षा-09 से 12 में प्रत्येक कक्षा में 40 से 60 विद्यार्थियों का प्रवेश सुनिश्चित करें जिससे कि कक्षा 01 से 10 की छात्र संख्या 400 तथा कक्षा-01 से 12 की छात्र संख्या 500 हो, ऐसा प्रयास सभी संस्था प्रधान सुनिश्चित करें।

2.15 छात्र सुविधा के दृष्टिकोण से विद्यालय का संचालन एक से अधिक विद्यालय भवनों में भी जिला शिक्षा अधिकारी की अनुमति से किया जा सकेगा किन्तु यह संख्या अधिकतम 2 विद्यालय भवनों में संचालन किये जाने तक अनुमत होगी। इन विद्यालयों के प्रशासनिक नियंत्रण के साथ-साथ प्रभावी संचालन का समस्त दायित्व माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय के संस्था प्रधान का होगा।

2.16 जिन विद्यालयों में कक्षा-01 से 12 तक संचालित की जानी है, उनमें विद्यालय के सुसंचालन की दृष्टि से कक्षा 01 से 08 तक के लिए वरिष्ठतम व्याख्याता को प्रभारी (हैड टीचर) का प्रभार दिया जावे तथा जिन विद्यालयों में कक्षा 01 से 10 तक संचालित की जानी है, उनमें विद्यालय के सुसंचालन की दृष्टि से कक्षा 01 से 05 तक के लिए वरिष्ठतम वरिष्ठ अध्यापक को प्रभारी (हैड टीचर) का प्रभार दिया जावे।

2.17 ऐसे समन्वित विद्यालय जिन्हे एक से अधिक भवनों में संचालित किया जा रहा है उनमें पृथक भवन में संचालित कक्षाओं के लिए भी कक्षा स्तर के अनुरूप बिन्दु संख्या 2.16 के अनुसार प्रभार दिया जाये।

2.18 विद्यालय में शिक्षकों की उपलब्धतानुसार अध्यापक/वरिष्ठ अध्यापक व व्याख्याताओं से माध्यमिक/प्रारम्भिक स्तर की कक्षाओं का अध्यापन कराया जा सकेगा। उदाहरणार्थ शिक्षकों की पर्याप्त उपलब्धता के अभाव में वरिष्ठ अध्यापक प्राथमिक/उच्च प्राथमिक कक्षाओं को तथा अध्यापक प्राथमिक/उच्च प्राथमिक कक्षाओं के साथ-साथ माध्यमिक कक्षाओं को शिक्षण कार्य करा सकेगें। इसी प्रकार व्याख्याताओं से भी माध्यमिक कक्षाओं का अध्यापन कार्य करवाया जा सकेगा।

2.19 संस्था प्रधान विद्यालय से संबंधित सभी दस्तावेजों का समय पर संधारण करवायेंगे।

3. शिक्षण कार्य को गुणात्मक एवं प्रभावी बनाना-

3.1 शाला प्रधान विद्यार्थियों के गृहकार्य की ओर विशेष ध्यान देवें। इस हेतु शिक्षकों को नियमित गृहकार्य देने के लिए निर्देशित करें। साथ ही कक्षा अवलोकन के दौरान स्वयं गृहकार्य की जांच करे। माह की समाप्ति पर संबंधित अध्यापक अपनी दैनिक दैनन्दिनी में माह की समेकित (गोश्वारा) सूचना सारांश रूप में अंकित करेंगे ताकि आलोच्य माह में अध्यापक की अध्यापन दिवसों की सुनिश्चितता की जा सके। इस हेतु समेकित सूचना (गोश्वारा) में माह में कुल दिवस, शैक्षिक कार्य दिवस, गैर शैक्षिक कार्य दिवस, अवकाश एवं राजपत्रित अवकाश का भी अंकिन किया जा सकेगा।

3.2 विद्यार्थियों को पर्याप्त मात्रा में गृह कार्य दिया जाये तथा उसकी जांच लाल स्याही के पेन से भली प्रकार कर अध्यापक द्वारा कॉपी में हस्ताक्षर मय दिनांक किये जाये। गृहकार्य में जो त्रुटियां आये उसके सुधार हेतु विद्यार्थी को त्रुटी सुधार कार्य से पृथक से दिया जाये तथा इसकी जांच भी की जावे।

3.3 विद्यार्थियों हेतु आयोजित परीक्षा/परखों के जो भी टेस्ट वर्तमान में हो रहे है उनके परिणाम से शिक्षक-अभिभावक बैठक में अभिभावकों को अवगत कराया जाये। इस हेतु संस्था प्रधान द्वारा परीक्षा/परखों की प्रगति रिपोर्ट संबंधित विद्यार्थी के साथ अभिभावक को अवलोकन एवं हस्ताक्षर हेतु आवश्यक रूप से भिजवाई जाये।

3.4 प्रगति रिपोर्ट के आधार पर कमजोर विद्यार्थियों के लिए संस्था प्रधान उपचारात्मक शिक्षण हेतु कक्षाओं का आयोजन कर प्रगति में सुधार लायेंगे। इस हेतु विभाग द्वारा संचालित योजना एवं कार्यक्रमों का भी

समावेश कर सकेंगे।

3.5 विद्यालय में सामान्य ज्ञान हेतु उपलब्ध चॉर्ट एवं अन्य शैक्षणिक सामग्रियों का यथा स्थान प्रदर्शन किया जाये। इस क्रम में चार्ट विद्यालय के बरामदे में टांगे जाने तथा सायंकाल वापिस उतारे जाने की व्यवस्था आकर्षक कदम होगा क्योंकि विद्यार्थी चार्ट के आधार पर भी अपने ज्ञान में उत्सुकता के आधार पर बढ़ोतरी कर सकेंगे।

3.6 प्रार्थना सभा में प्रार्थना समूह गान, राष्ट्रगान, प्रतिज्ञा, सूर्य नमस्कार, ध्यान, समाचार पत्रों का वाचन/विद्यार्थियों द्वारा उद्बोधन आदि का समावेश किया जाये।

3.7 विद्यालय में पदस्थापित शारीरिक शिक्षकों द्वारा खेलकूद, व्यायाम, योग, अनुशासन, विद्यार्थियों की स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के संबंध में संस्था प्रधान के नेतृत्व में योजनानुसार कार्य करने के लिए उत्तरदायी होंगे।

4. सामुदायिक सहभागिता

4.1 प्रत्येक विद्यालय में शाला विकास प्रबन्ध समिति एवं शाला प्रबन्ध समिति का गठन किया हुआ है। उक्त दोनों समितियों की साधारण सभा की बैठक नियमित रूप से प्रति तीन माह में एक बार आवश्यक रूप से कर इसमें विद्यालय के नामांकन विशेष तौर पर बालिकाओं के नामांकन, उपस्थिति एवं ठहराव पर चर्चा की जाए। विद्यालय के पास उपलब्ध आर्थिक एवं भौतिक संसाधनों पर चर्चा कर इसमें आवश्यक सहयोग लेने हेतु भी समिति के सदस्यों को प्रेरित किया जाए।

4.2 प्रत्येक माह के अन्तिम कार्यदिवस के दिन संस्था प्रधान शिक्षक अभिभावक परिषद् की (PTA) बैठक आयोजित करें तथा इसमें संस्था प्रधान का यह प्रयास हो कि इसमें ज्यादा से ज्यादा अभिभावक उपस्थिति हो तथा उन्हें शाला की शैक्षणिक स्थिति तथा विद्यार्थियों के बारे में भी स्पष्ट जानकारी दी जाये तथा कमजोर विद्यार्थियों के अभिभावकों की उपस्थिति के लिए पृथक से अतिरिक्त प्रयास किये जाये, इस बैठक में शाला के शैक्षणिक, सहशैक्षणिक, गतिविधियों के प्रभाव आयोजन व अनुशासन पर विशेष चर्चा की जाये तथा इसका अभिलेख भी संधारित किया जाये।

5. विद्यालय का भौतिक विकास

5.1 समन्वित विद्यालयों में सम्मिलित विद्यालयों की समस्त परिसम्पत्तियां यथा- भूमि, भवन, खेल, मैदान, फर्नीचर, शैक्षणिक उपकरण एवं अन्य समस्त अभिलेख समन्वित विद्यालय के अधीन स्वतः ही आ गए हैं।

5.2 शाला की परिसम्पतियों का उपयोग करने के संबंध में सबसे पहले संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करे कि जो स्थायी सम्पति शाला में विद्यार्थी संख्या बढ़ने, अतिरिक्त संकाय खुलने पर भविष्य में उपयोग में आ सकती है तो ऐसी सम्पतियों को अन्य उपयोग के लिए हस्तान्तरित नहीं किया जाये।

5.3 संस्था प्रधान जब यह सुनिश्चित कर ले कि जो भवन एवं भूमि भविष्य में भी शाला के काम में नही आयेंगे तो ऐसी स्थिति में इन भवन एवं भूमि का उपयोग निम्न प्रकार प्राथमिकता के आधार पर किया जायेगाः-

(1) अध्यापकों/शिक्षा विभाग के कार्मिकों के आवास हेतु प्रथम प्राथमिकता

(2) आंगनबाड़ी केन्द्र/स्वास्थ्य केन्द्र/पंचायत भवन/पटवार घर आदि का संचालन हेतु

(3) अन्य विभागों के कार्मिकों को आवास हेतु

(4) स्थानीय स्तर पर सामूहिक कार्यक्रम तथा शादी विवाह, सामाजिक कार्यक्रम, मेले, त्योहार आदि हेतु।

5.4 किराये का निर्धारण एवं राशि का उपयोग

(1) शिक्षकों/कार्मिकों को आवास व्यवस्था उपलब्ध कराये जाने पर उन्हें मकान किराये भत्ते के रूप में वेतन के साथ मिलने वाली राशि ही किराये की राशि होगी, जिसे शाला विकास समिति के खाते में प्रत्येक माह की 10 तारीख तक जमा करवाकर रसीद प्राप्त करनी होगी।

(2) भवन का उपयोग आंगनबाड़ी केन्द्र/स्वास्थ्य केन्द्र/पंचायत भवन/पटवार घर स्थानीय स्तर पर सामूहिक कार्यक्रम यथा शादी विवाह, सामाजिक कार्यक्रम, मेले, त्योहार आदि के लिये राशि शाला विकास कोष समिति (SDMC) द्वारा तय राशि होगी।

(3) भवन के अन्य उपयोग हेतु शाला विकास कोष एवं प्रबन्ध समिति (SDMC) से प्रस्ताव पारित करने के पश्चात् ही उक्त कार्यवाही सम्पादित की जावे तथा इसमें पूर्णतः पारदर्शिता रखी जावें।

(4) किराया राशि का उपयोग विद्यालय एवं इन्हीं भवनों के रख-रखाव हेतु किया जा सकेगा।

(5) बिजली पानी आदि के संबंध में किया जाने वाला व्यय संबंधित शिक्षक/कार्मिक/किराये पर लेने वाली संस्था/व्यक्ति द्वारा वहन किया जायेगा।

5.5 जिन समन्वित विद्यालयों के पास कम भौतिक व मानवीय संसाधन है उनमें प्रथम चरण में भामाशाहों को चिह्नित कर शाला को गोद दिया जाये और चरणबद्ध तरीके से इन सभी विद्यालयों को गोद दिये जाने का प्रयास करे, जिससे समाज, जनप्रतिनिधियों, बुद्धिजीवियों, जिला-प्रशासन, स्थानीय निकाय प्रशासन तथा भामाशाहों का जुड़ाव इन विद्यालयों से हो सकें।

5.6 विद्यालय के भौतिक विकास हेतु शाला प्रधान सजग रहे। विद्यार्थियों के आवश्यकतानुसार कमरे, शौचालय, स्वच्छ पेयजल, खेलने का स्थान, उपकरण तथा अन्य भौतिक संसाधनों हेतु जनसहयोग, सर्व शिक्षा अभियान एवं राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान से सम्पर्क कर समुचित व्यवस्था करवाना सुनिश्चित करें।

(सुवालाल) निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

क्रमांकः शिविरा/माध्य/प्रकाशन/प्रेषण/55921 दिनांक- 24/11/2014
निदेशक
प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर

विषय : शिविरा प्रकाशन हेतु विद्यालयों की पता सूचियों को अद्यतन करने के सम्बन्ध में।

महोदय

उपर्युक्त विषयान्तर्गत निवेदन है कि माध्यमिक शिक्षा, निदेशालय द्वारा प्रकाशित **शिविरा (मासिक)** एवं **नया शिक्षक (त्रैमासिक)** की डाक पतों की सूचियों (mailing list) को अद्यतन किए जाने के लिए आपके अधीन राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के पूर्ण पतों के विवरण निम्न प्रारूप में दी गई प्रतियों में सात दिवस में भिजवाने की व्यवस्था करें।

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	ग्राम पोस्ट	पिन कोड	वाया	तहसील	जिला
1	2	3	4	5	6	7

इसे अतिआवश्यक समझें।

भवदीय
(सुवालाल)
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर

कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/शिविरा पंचांग/3516/विविध/14-15/
दिनांक 16-12-14

प्रतिलिपि : निम्नांकित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतुः-

1. निदेशक माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर।
2. समस्त उप निदेशक (प्रारम्भिक शिक्षा)
3. जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारम्भिक) समस्त को भेजकर लेख है कि शिविरा प्रकाशन हेतु विद्यालय की पता सूचियों को निर्धारित प्रपत्र में मय सीडी व हार्ड प्रति सीधे **'शिविरा प्रकाशन'** निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर को भिजवाते हुए एक प्रति इस कार्यालय को भी भिजवावें।

अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर

कार्यालय निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

क्रमांक : शिविरा/प्रार/आरटीई/सी/निःशुल्क प्रवेश/18878/15-16/23
दिनांक- 18.02.2015
समस्त उपनिदेशक,
जिला शिक्षा अधिकारी, बी.ई.ई.ओ
प्रारम्भिक शिक्षा

विषय : निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के प्रावधानों के अनुसार गैर सरकारी विद्यालयों में सत्र 2015-16 से प्रभावी प्रवेश प्रक्रिया के संबंध में।

प्रसंग : राज्य सरकार के पत्रांक प.12(6)शिक्षा-5/2014 दिनांक 16.02.2015

उपर्युक्त विषयान्तर्गत एवं प्रासंगिक पत्र के क्रम में लेख है कि निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के प्रावधानों के अनुसार समस्त गैर सरकारी विद्यालयों में सत्र 2015-16 से प्रभावी प्रवेश प्रकिया, भौतिक सत्यापन एवं पुनर्भरण के संबंध में राज्य सरकार द्वारा दिनांक 16.02.2015 को दिशा निर्देश जारी किये गये हैं। इन दिशा निर्देशों के संबंध में टाइम फ्रेम आदि के लिए आवश्यक विज्ञप्ति अपने स्तर पर समाचार पत्रों में प्रकाशित करावें जिससे सभी गैर सरकारी विद्यालयों, अभिभावकों एवं संबंधित अधिकारियों को अविलम्ब जानकारी मिल सके। प्रवेश कार्य, सत्यापन कार्य एवं फीस के पुनर्भरण की नियमित मॉनेटरिंग करावें जिससे सत्र 2015-16 में उक्त दिशा निर्देशों के अनुसार समस्त गतिविधियां समय पर सम्पन्न हो सके। दिशा निर्देश की प्रति आरटीई वेब पोर्टल (rte.raj.nic.in) पर उपलब्ध है। कृपया डाउनलोड कर लेवें।

उक्त पत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता देवें।

निदेशक
प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान
बीकानेर

प्रतिलिपि निम्न को सूचनार्थ

1. निजी सचिव, प्रमुख शासन सचिव प्रारम्भिक शिक्षा शासन सचिवालय जयपुर।
2. शासन उप सचिव, स्कूल शिक्षा (ग्रुप-5) विभाग, शासन सविचालय, जयपुर को उनके पत्राक प. 12(6) शिक्षा-5/2014 दिनांक 16.02.2015 के क्रम में।
3. निजी सचिव, आयुक्त राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद शिक्षा संकुल जयपुर।
4. निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर को प्रेषित कर निवेदन है कि अपने अधीनस्थ जिला शिक्षा अधिकारी/उप निदेशक (माध्यमिक) को उक्तानुसार कार्यवाही सम्पन्न करने हेतु पाबन्द करवाने का श्रम करावें।
5. प्रमुख प्रणाली विश्लेषक NIC केन्द्र, शासन सचिवालय, जयपुर को प्रेषित कर लेख है कि आज ही उक्त दिशा निर्देशों को आरटीई वेब पोर्टल पर अपलोड कर डिस्पले करायें तथा उक्त दिशा निर्देशों के अनुसार आरटीई वेब पोर्टल में वांछित परिवर्तन कर निदेशालय को सूचित करवाने का श्रम करावें।
6. उप निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा.....को भेजकर लेख है कि अपने अधीनस्थ जिला शिक्षा अधिकारी/बीईईओ (प्राशि) को उक्तानुसार कार्यवाही सम्पन्न करने हेतु पाबन्द करें।
7. वरिष्ठ संपादक शिविरा को प्रेषित कर लेख है कि इन दिशा निर्देशों को माह मार्च, 2015 के शिविरा अंक में प्रकाशित करवाने का श्रम करावें।
8. रक्षित पत्रावली।

उप निदेशक (आरटीई)
प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर

बाल मनोविज्ञान

सुधार हेतु सजा प्रभावी हल नहीं है

❒ रूपनारायण काबरा

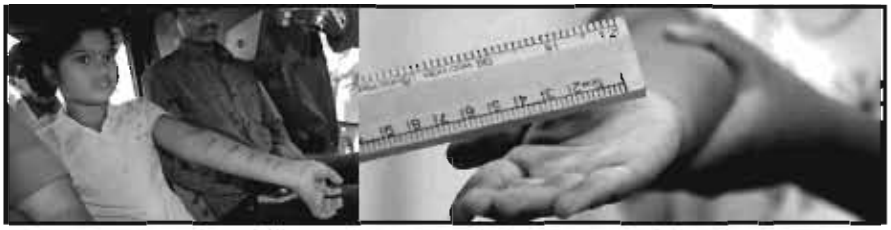

श्रीकान्त को रसायन विभाग के लेक्चरर के रूप में कॉलेज ज्वाइन किये चार वर्ष हो गये थे। प्रिंसीपल के पर्यवेक्षण से यह छिपा नहीं था कि श्रीकान्त एक गैर जिम्मेदार लेक्चरर थे। वे न तो पूरी तैयारी से पढ़ाते थे और न अन्य गतिविधियों से सरोकार रखते थे। वस्तुतः वे काम से जी चुराते थे। प्रिंसीपल उसे डांटते भी थे और चेतावनी भी देते थे पर वे सुनी अनसुनी कर देते थे। उनमें कोई सुधार नहीं आया। कक्षा में उनका शिक्षण भी सन्तोषजनक नहीं था। वैसे वे वैल क्वालीफाइड थे पर अपने दायित्व के प्रति उदासीन थे।

कुछ समय बाद कॉलेज के नये प्रिंसीपल का पर्दापण हुआ। वे बड़े ही सुलझे हुये, गतिमान एवं प्रभावी व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। प्रथम स्टाफ मीटिंग में ही सबसे मुलाकात की, जानकारी ली और कुछ सुझाव भी दिये। मि. श्रीकान्त का रिकॉर्ड देखकर उनको पता लग गया कि वे कामचोर हैं यद्यपि स्कूल और कॉलेज लेवल के छात्र जीवन में स्वयं ने कई प्रतियोगिताओं और प्रोजेक्ट प्रजेन्टेन्शन में ढेर सारे पुरस्कार भी जीते थे। नये प्रिंसीपल श्री आर.बी. सक्सेना को श्रीकान्त की कामचोरी की आदत और शिथिल पड़ रही प्रतिभा की जानकारी मिली। एक मल्टीनेशनल व्यापारिक कम्पनी ने ''शरीर की रासायनिक क्रियाओं का विज्ञान'' विषय पर एक अन्तर महाविद्यालयी प्रतियोगिता रखी थी। इस प्रतियोगिता के प्रोजेक्ट प्रजेन्टेन्शन में प्रथम रहने वाले महाविद्यालय को पचास हजार रुपये की नगद राशि का पुरस्कार घोषित था। प्रिंसीपल सक्सेना स्वयं बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे और रसायन विज्ञान तथा जीव विज्ञान में उनकी गहरी पैठ थी।

उन्होंने श्रीकांत के व्यक्तित्व में आये नकारात्मक परिवर्तन को सही दिशा देने का निश्चय किया। उनकी मान्यता थी कि डांट देने या किसी प्रकार की सजा देने की बजाय कर्मचारी को पूरी तरह समझकर प्रोत्साहित करने का प्रयास करना चाहिए। वे श्रीकांत के विषय में सबकुछ जान चुके थे। उन्होंने उनको अपने चैम्बर में बुलाकर कहा, मैंने इस प्रोजेक्ट प्रजेन्टेन्शन हेतु आपको चुना है, तुम यह कर सकते हो, तुम्हारे में प्रतिभा है। मुझे यह प्रोजेक्ट प्रजेन्टेन्शन तीन दिन में ही तैयार चाहिये। मुझे विश्वास है कि तुम इस चुनौती में सफल रहोगे।

मि. श्रीकांत दिन रात लगे रहे, खूब परिश्रम किया और प्रोजेक्ट प्रिंसीपल को सौंप दिया। काम चोरी एवं नवीनतम अध्ययन से दूर रहने के कारण उसके अनुभवों में कमी थी, ढेर सारी गलतियों भी थी। उन्होंने उसे डांटा भी और वापस भेज दिया। अगले दिन प्रिंसीपल सक्सेना श्रीकांत को लेकर कम्पनी कार्यालय में गये। मि. सक्सेना ने स्वयं भी प्रजेन्टेन्शन तैयार किया था और उसे ही प्रस्तुत किया। कम्पनी को यह प्रोजेक्ट पसन्द आ गया और उनके कॉलेज को पुरस्कार के 50000/- रुपये का चेक प्रदान किया गया। दूसरे दिन प्रिंसीपल ने सभी से कहा कॉलेज को यह पुरस्कार मि. श्रीकांत की वजह से मिला है। सभी ने श्रीकांत को बधाई दी।

लोगों से इतनी तारीफ सुनना उसे अच्छा नहीं लग रहा था। अन्दर ही अन्दर घुटन भी महसूस हो रही थी कि पुरस्कार तो बॉस की वजह से मिला है। वह तुरन्त कार्यालय में गया और कहा, ''सर, आपने ऐसा क्यों किया? मेरा तो इसमें कोई योगदान ही नहीं है लेकिन आपने सारा श्रेय मुझे ही दे दिया, ऐसा क्यों किया सर?''

प्रिंसीपल सक्सेना मुस्कुरा के बोले, मैंने देखा है तुमने पहली बार अपनी जिम्मेदारी को समझा है और तीन दिन मेहनत करके प्रोजेक्ट बनाया है और यह श्रेय उसी परिश्रम का पुरस्कार है। तुम्हारी अब एक नई इमेज बन गई है मेरे लिये, स्वयं के लिये और साथियों के लिये। अब तुम्हें इस इमेज को कायम रखना है बल्कि इसे और अच्छा बनाना है, और अच्छे प्रोजेक्टस बनाने है। श्रीकांत तुमने बहुत परिश्रम किया है, मैं उसी की सराहना करता हूँ। परिश्रम करने पर सफलता मिलती ही है। कल तुम्हारा होगा। आगे ऐसी प्रतियोगिताओं में तुम स्वयं जीतोगे, यह निश्चित है क्योंकि अब तुम जाग गये हो, तुम्हारी अन्तर्निहित प्रतिभा प्रतिभासित होने लगी है, स्वयं पर तुमको विश्वास होने लगा है। मैं तुम्हारा भविष्य उज्जवल देखने लगा हूँ।

यह सब सुनकर श्रीकांत की आँखों में आँसू आ गये। उस पर इतना भरोसा किसी भी बॉस ने नहीं किया और न किसी ने उसके प्रति इतनी दिलचस्पी और स्नेह प्रदर्शित किया था। उसने वादा किया, अब से मैं चुनौती भरी जिम्मेदारियां स्वयं आगे बढ़कर लूंगा और ऐसा बनकर दिखाऊँगा कि आपको मुझ पर गर्व हो। मि. सक्सेना ने उसे सीने से लगाया और कहा, मैंने तुम्हारी स्वयं अपने से पहचान कराके अपना दायित्व निभाया है और अब, अप्प दीपो भव, अपने दीपक स्वयं बनो और बढ़ते चलो।

यह सही है कि यदि बॉस अपने कर्मचारियों पर भरोसा दिखायेंगे, उन्हें स्नेह सम्मान सहयोग देंगे तो वे भी अपने बॉस का सिर कभी नीचा नहीं होने देंगे। प्रशंसा और विश्वास से प्रेरणा और प्रोत्साहन दोनों मिलते हैं और ये व्यक्तित्व को उभार देते हैं। आजमाकर देखिये। मैंने तो अपने छात्र-छात्राओं की आत्मछवि को उन्नत करके बेहद सफलता पाई है।

-ए-438, किशोर कुटीर
वैशाली नगर, जयपुर
मो. 9967005820

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी

विद्यालयी शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय आईसीटी पुरस्कार

❒ हरि कृष्ण आर्य

विद्यालयों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) योजना का प्रारम्भ दिसम्बर, 2004 में माध्यमिक स्तर के छात्रों को मुख्यतः उनकी आईसीटी कौशल क्षमता बढ़ाने और कम्प्यूटर सहायक शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से सीखने के अवसर प्रदान करने हेतु किया गया। यह योजना छात्रों के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, डिजिटल विभाजन और अन्य भौगोलिक अवरोधों को पार करने का सेतु है। यह योजना राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को चिरस्थायी आधार पर कम्प्यूटर प्रयोगशालाएं स्थापित करने के लिए सहायता प्रदान करती है। इसका केन्द्रीय विद्यालयों और नवोदय विद्यालयों में स्मार्ट स्कूल स्थापित करने का उद्देश्य भी है जो भारत सरकार के 'प्रौद्योगिकी प्रदर्शकों' के रूप में काम करने और आईसीटी कौशल को पड़ोस के विद्यालयों में प्रसारित करने हेतु गति प्रदान करने वाली संस्थाएं हैं।

जुलाई 2010 में जब इस योजना में संशोधन किया गया तो इसमें शिक्षकों के लिए एक राष्ट्रीय पुरस्कार का भी प्रावधान रखा गया। इस पुरस्कार का उद्देश्य उन शिक्षकों को प्रोत्साहित करना है जिन्होंने विद्यालयी पाठ्यक्रम एवं विषय-शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए नवीन एकीकृत प्रौद्योगिकी का उपयोग कर विद्यार्थियों में आईसीटी के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न की है तथा खोज आधारित सहायक और सहयोग पूर्ण शिक्षा को बढ़ावा दिया है। यह पुरस्कार विद्यालयों एवं समुदाय में शिक्षा की समग्र गुणवत्ता के लिए शिक्षकों के योगदान को भी मान्यता देता है। यह पुरस्कार संपूर्ण भारत के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिए रखा गया है।

इस योजना के अंतर्गत प्रति वर्ष कुल मिलाकर 87 आईसीटी पुरस्कार दिये जाते हैं, जिसके प्रतिभागी भारत सरकार द्वारा विभिन्न राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों, मानव संसाधन मंत्रालय के अधीन संस्थानों और स्वायत्त

निकायों से जुड़े शिक्षक होते हैं। पुरस्कारों का आवंटन राज्य, संघशासित क्षेत्रों अथवा संस्थानों से संबंधित विद्यालयों, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की संख्या के आधार पर किया गया है। राजस्थान राज्य के लिए यह कोटा प्रतिवर्ष तीन शिक्षक-शिक्षिकाओं के लिए है।

सभी प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों और निम्नलिखित संस्थानों से संबंधित शिक्षक-शिक्षिकाएं इस योजना के अंतर्गत सम्मिलित हैं-

1. स्थानीय निकायों और सरकार द्वारा संचालित एवं प्रशासकीय विद्यालय (राज्य शिक्षा बोर्ड से संबंधित सरकारी और निजी विद्यालयों सहित)
2. केंद्र सरकार द्वारा संचालित विद्यालय जैसे केंद्रीय विद्यालय, जवाहर नवोदय विद्यालय, केंद्रीय तिब्बती विद्यालय, रक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित विद्यालय, सैनिक स्कूल और परमाणु ऊर्जा शिक्षा समिति द्वारा संचालित विद्यालय आदि
3. केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा समिति से सम्बन्ध विद्यालय
4. भारतीय विद्यालय प्रमाण पत्र परीक्षा से सम्बन्ध विद्यालय

योजना के दिशानिर्देशों के अनुसार पुरस्कार के लिए शिक्षकों के चयन की प्रक्रिया निम्नानुसार होती है-

1. सभी विद्यालय अपनी प्रविष्टियों का विवरण प्रस्तावित प्रारूप में राज्यों के शिक्षा निदेशालयों या संघ शासित क्षेत्रों या सम्बंधित संस्थानों (केन्द्रीय विद्यालय संघटन, नवोदय विद्यालय समिति, केंद्रीय शिक्षा बोर्ड, भारतीय विद्यालय प्रमाण पत्र परीक्षा परिषद, केंद्रीय तिब्बती विद्यालय, परमाणु ऊर्जा शिक्षा समिति, रक्षा मंत्रालय के अधीन सैनिक विद्यालय आदि) से समर्थित दस्तावेजों के साथ यथोचित माध्यम (प्राचार्य/जिला शिक्षा अधिकारी/ क्षेत्रीय कार्यालय आदि) द्वारा भेजेंगे.
2. सभी सम्बंधित राज्यों/ संघ शासित प्रदेशों/स्वायत्तशासी संस्थानों के सचिव व शिक्षा आयुक्त की अध्यक्षता में गठित समिति सभी प्रविष्टियों की संवीक्षा करेगी और चुने गए प्रतिभागियों के नाम चयन समिति के विवरण के साथ पुरस्कार समिति के सदस्य सचिव को भेजेगी। सभी राज्य/संघ शासित प्रदेश और संस्थान योग्यता सूची के आधार पर निर्धारित कोटे से दुगुनी संख्या में शिक्षक-शिक्षिकाओं के नामांकन भेजेंगे।
3. चयनित प्रतिभागियों को पुरस्कार समिति के समक्ष अपने सूचना प्रौद्योगिकी शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान हेतु किए गए कार्यों का प्रस्तुतीकरण देना होगा। इस संदर्भ में समस्त नामित शिक्षक-शिक्षिकाओं को केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् द्वारा सूचित किया जायेगा और ये जिन निदेशालयों / संस्थानों से जुड़े हैं, उन्हें भी सूचित किया जायेगा। संयोजित पुरस्कार समिति निम्न प्रकार होगी-

I. निदेशक, एनसीईआरटी, नई दिल्ली- सभापति
II. उपमहानिदेशक, एनआईसी, नई दिल्ली- सदस्य
III. माध्यमिक शिक्षा ब्यूरो, विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

के प्रतिनिधि-सदस्य

IV. सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार के प्रतिनिधि-सदस्य

V. सी.आई.ई.टी. नई दिल्ली के संयुक्त निदेशक-सदस्यसचिव

पुरस्कार समिति पुरस्कार विजेताओं की अपेक्षित संख्या औचित्य पूर्ण तरीके से मानव संसाधन विकास मंत्रालय को भेजेगी और मंत्रालय फिर पुरस्कार की संस्तुति प्रक्रिया को आगे बढ़ाएगा।

प्रत्येक पुरस्कार विजेता शिक्षक-शिक्षिका को एक लैपटॉप, एक रजत पदक व प्रशस्ति प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया जायेगा। सभी पुरस्कार विजेताओं को सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ समुदाय में कार्य करना पड़ेगा।

विद्यालय शिक्षक अपनी प्रविष्टियों को संबंधित राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों व स्वायत्त संस्थानों (के.वी.एस, एन.वी.एस, सी.बी.एस.ई, सी.आई.एस.सी.ई, सी.टी.एस.ए, ए.ई.ई.एस, रक्षामंत्रालय के अंतर्गत चलने वाले सैनिक स्कूल इत्यादि) के निदेशक/सचिव/आयुक्त को भेजेंगे, जो योग्यता के क्रम में अपने पुरस्कार कोटा से दोगुना शिक्षकों का चयन व सिफारिश करेंगे। शिक्षक/ विद्यालय प्रधान किसी भी नामांकन को सीधे सीआईईटी, एनसीईआरटी, नई दिल्ली को नहीं भेजेंगे. शिक्षकों का निजी आवेदन पत्र निर्धारित प्रारूप के अनुसार होना चाहिए तथा समस्त आवश्यक दस्तावेज और साक्ष्य साथ में संलग्न किये जाने चाहिए। विद्यालयी शिक्षकों द्वारा राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों/स्वायत्त संस्थाओं के सचिव (शिक्षा) को नामांकन जमा करने की अंतिम तिथि **31 मार्च, 2015** है तथा राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों/स्वायत्त संस्थानों के सचिव द्वारा चुने हुए नामांकन को सीआईईटी, एनसीईआरटी, नई दिल्ली में जमा करने की अंतिम तिथि 30 जून, 2015 है।

इस पुरस्कार की अर्हताओं, नियमों, शर्तों व प्रवेश फार्म संबंधी विस्तृत जानकारी वेबसाइट **www.ciet.nic.in** पर देखी जा सकती है अथवा संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, एनसीईआरटी, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016, ई-मेल: **jdciet.ncert@nic.in** से संपर्क कर प्राप्त की जा सकती है।

सभी शिक्षक जो अपने शिक्षण कार्य में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहे हैं, उन्हें इस प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए अवश्य आवेदन करना चाहिए।

(National ICT Awardee, Mentor NROER, Microsoft Innovative Educator Expert)
78, गुरुनानक नगर, स्ट्रीट नं. 13,
नई आबादी, एन.एम.पी.जी.
कॉलेज के पास, हनुमानगढ़ टाउन
मो. 9414202796

इस माह का गीत

चले निरन्तर साधना...

निर्मल पावन भावना
सभी के सुख की कामना ।
गौरवमय समरस जन जीवन, यही राष्ट्र आराधना ।।
चले निरन्तर साधना...

जहाँ अशिक्षा अन्धकार है, वहीं ज्ञान का दीप जलाएँ
स्नेह भरी अनुपम शैली से, संस्कार की जोत जगाएँ
सभी को लेकर साथ चलेंगे, दुर्बल का कर थामना
चले निरन्तर साधना...

जहाँ व्याधियों और अभावों-में मानवता तड़प रही
घोर विकारों, अभिशापों में, देखो जगती झुलस रही
एक-एक आँसू को पौंछें, सारी पीड़ा लाँघना
चले निरन्तर साधना...

जहाँ विषमता भेद अभी है, नयी चेतना भरनी है
न्यायपूर्ण मर्यादा धारे, विकास रचना करनी है
स्वाभिमान से सभी खड़े हों, करे न कोई याचना
चले निरन्तर साधना...

'नर-सेवा नारायण-सेवा' है अपना कर्त्तव्य महान्
अपनी भक्ति अपनी शक्ति, से करना जन जन का त्राण
अपनें तप से प्रगटाएंगे, माँ-भारत कमलासना
चले निरन्तर साधना...

साभार : **प्रेरणा पुष्पांजलि**

सूचना का अधिकार

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 : संक्षिप्त परिचय

❒ संजय सेंगर

सूचना का अधिकार अधिनियम 12 अक्टूबर 2005 से लागू हुआ था। यह अधिनियम जम्मू और कश्मीर राज्य को छोड़कर सम्पूर्ण देश में लागू है। इस अधिनियम को देश में लाने के पीछे सरकार का दृष्टिकोण प्रत्येक लोक प्राधिकारी की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता लाना एवं उत्तरदायित्व का संवर्द्धन करना है। लोक प्राधिकारी एक ऐसी संस्था या स्वायत्तशासी संगठन है जिसे भारत के संविधान द्वारा, संसद द्वारा अथवा किसी राज्य की विधानसभा द्वारा स्थापित/गठित किया गया हो। इनमें वे संगठन जिनका स्वामित्व, नियंत्रण या पर्याप्त मात्रा में वित्तपोषण सरकार द्वारा किया गया हो भी सम्मिलित हैं।

लोक सूचना अधिकारी–माध्यमिक शिक्षा विभाग में लोक सूचना अधिकारी इस प्रकार हैं –

- **प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य :** स्वयं के राजकीय माध्यमिक/उच्च माध्यमिक विद्यालय हेतु
- **जिला शिक्षा अधिकारी :** स्वयं के जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा कार्यालय हेतु
- **प्राचार्य आई.ए.एस.ई. :** आई.ए.एस.ई. बीकानेर एवं अजमेर हेतु
- **उप निदेशक :** स्वयं के उप निदेशक माध्यमिक शिक्षा मण्डल कार्यालय हेतु
- **अतिरिक्त निदेशक प्रशासन :** कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर हेतु

प्रथम अपील अधिकारी–माध्यमिक शिक्षा विभाग में प्रथम अपील अधिकारी इस प्रकार हैं–

- **जिला शिक्षा अधिकारी :** प्रत्येक प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य माध्यमिक शिक्षा के विरुद्ध
- **उप निदेशक :** स्वयं के मण्डल के समस्त जिला शिक्षा अधिकारी मा.शि. के विरुद्ध

- **निदेशक :** समस्त मण्डल उपनिदेशक, प्राचार्य आई.ए.एस.ई. एवं अतिरिक्त निदेशक प्रशासन कार्यालय निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के विरुद्ध।

द्वितीय अपील अधिकारी – राजस्थान सूचना आयोग प्रत्येक स्तर के लिए द्वितीय अपील अधिकारी नियत है।

सूचना का अर्थ–सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 2(च) के अनुसार सूचना का अर्थ है इलैक्ट्रोनिक अथवा कागजी रूप से धारित अभिलेख, दस्तावेज, ज्ञापन, ई-मेल, मत, सलाह, प्रेस विज्ञप्ति, परिपत्र, आदेश, लॉगबुक, संविदा रिपोर्ट, कागज पत्र, नमूने, मॉडल, आंकड़ों सम्बन्धी सामग्री जो कि कार्यालय में संधारित है। आवेदक द्वारा अपने द्वारा बनाए गए प्रारूप में चाही गई सूचना यदि उस रूप में संधारित नहीं है तो वह सूचना की श्रेणी में नहीं आती तथा उसे बनाकर देने के लिए लोक सूचना अधिकारी बाध्य नहीं है।।

सूचना प्राप्त करने का अधिकारी– सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 3 के अनुसार भारत का प्रत्येक नागरिक सूचना प्राप्त करने का अधिकार रखता है। संस्था, समूह या पदाधिकारी की हैसियत से इस अधिनियम के अंतर्गत सूचना नहीं मांगी जा सकती।

सूचना प्राप्त करने की प्रक्रिया– सूचना मांगने के लिए आवेदन का प्रारूप निर्धारित नहीं है। आवेदक को लिखित रूप में या इलैक्ट्रॉनिक माध्यम से अपना नाम, सूचना प्राप्ति का पता, टेलीफोन नंबर एवं सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 6(1) के अंतर्गत निर्धारित फीस रु 10/- के साथ ऐसे लोक सूचना अधिकारी को आवेदन प्रस्तुत करना चाहिए जिसके पास अथवा उसके नियंत्रण में वह सूचना उपलब्ध हो। गरीबी रेखा से नीचे के चिह्नित परिवारों को सूचना प्राप्ति के लिए किसी भी प्रकार की फीस नहीं देनी है। आवेदन पत्र में वांछित सूचना स्पष्ट रूप से उल्लिखित होनी चाहिए। सूचना मांगने के लिए नागरिक को कारण बताने की आवश्यकता नहीं है कि उसे सूचना क्यों चाहिए व प्राप्त सूचना का वह किस प्रकार उपयोग करेगा।

सूचना उपलब्ध करवाने की समय सीमा–

30 दिवस में	धारा 7(1)	प्रार्थनापत्र देने की तिथि से
35 दिवस में	धारा 5(2) धारा 6(3)	यदि आवेदन पत्र सहायक लोक सूचना अधिकारी या दूसरे लोक प्राधिकारी को दिया जाता है
48 घण्टे में	धारा 7(1)	व्यक्ति के जीवन या स्वतंत्रता से सम्बन्धित सूचना
40 दिन में	धारा 11	यदि तृतीय पक्ष के हित जुड़े हों

सूचना प्राप्त करने के लिए शुल्क–

अभिलेखों के निरीक्षण के लिए	प्रथम घंटे-कोई फीस नहीं अतिरिक्त प्रत्येक 15 मिनट के लिए रु 5/-
प्रतिलिपि (ए-4 या ए-3 आकार में)	रु 2/- प्रति प्रतिलिपि
प्रतिलिपि (बड़े आकार के पृष्ठ)	वास्तविक लागत कीमत
सैम्पल या मॉडल	वास्तविक लागत कीमत
सी.डी. या फ्लॉपी	रु 50/- प्रति सी.डी. या फ्लॉपी

गरीबी रेखा से नीचे के चिन्हित परिवारों को किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं देना है।

सूचना प्राप्ति के आवेदन को अस्वीकृत करना –

1. सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 8 के अनुसार जो सूचनाएं प्रकट नहीं की जा सकतीं व प्रार्थना अस्वीकार की जा सकती है –

- सूचना जिसके प्रकटन से भारत की प्रभुता व अखण्डता, राज्य की सुरक्षा रणनीति, वैज्ञानिक या आर्थिक हित, विदेशों से संबंधों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हो।
- सूचना जिसके प्रकटन को किसी न्यायालय या अधिकरण द्वारा निषिद्ध किया गया हो या जिसके प्रकटन से न्यायालय की अवमानना होती हो।
- सूचना जिसके प्रकटन से संसद या किसी राज्य के विधान मण्डल के विशेषाधिकार का भंग कारित होता हो।
- सूचना जिसमें वाणिज्यिक विश्वास, व्यापार गोपनीयता या बौद्धिक संपदा सम्मिलित है जिसके प्रकटन से किसी पर–व्यक्ति की प्रतियोगी स्थिति को नुकसान होता है, जब तक कि ऐसी सूचना का प्रकटन व्यापक लोक हित में न हो।
- किसी विदेशी सरकार से विश्वास में प्राप्त सूचना।
- सूचना जिसके प्रकटन से किसी व्यक्ति के जीवन या शारीरिक सुरक्षा को खतरा हो।
- सूचना जिसके प्रकटन से अपराधियों के अन्वेषण, पकड़े जाने या अभियोजन की प्रक्रिया में अड़चन पड़ती हो।
- मंत्रीमण्डल के कागजपत्र जिसमें मंत्रीपरिषद, सचिवों और अन्य अधिकारियों के विचार विमर्श के अभिलेख सम्मिलित हैं, विनिश्चय पूरा हो जाने के पश्चात ही जनता को उपलब्ध करवाये जा सकते हैं। लेकिन वे विषय जो इस धारा के अंतर्गत प्रकटीकरण की छूट के दायरे में आते हैं प्रकट नहीं किए जाएंगे।
- सूचना, जो व्यक्तिगत सूचना से संबंधित है, जिसका प्रकटन किसी लोक क्रियाकलाप या हित से सम्बन्ध नहीं रखता है या जिससे व्यक्ति की एकांतता पर अनावश्यक अतिक्रमण होता हो। जब तक कि यह समाधान नहीं हो जाता कि ऐसी सूचना का प्रकटन विस्तृत लोक हित में न्यायोचित है।

2. सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 9 के अनुसार यदि किसी व्यक्ति के कॉपीराईट अधिकार का उल्लंघन होता हो तो सूचना प्रकट नहीं की जा सकेगी। कॉपीराईट का अधिकार प्रभावी माना गया है।

पर–व्यक्ति (तृतीय पक्ष) सूचना – सूचना चाहने वाला नागरिक (प्रथम पक्ष) जब लोक सूचना अधिकारी (द्वितीय पक्ष) से किसी अन्य व्यक्ति या निकाय की सूचना मांगता है तो उसे पर–व्यक्ति (तृतीय पक्ष) की सूचना कहा जाता है। सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 11 के अनुसार लोक सूचना अधिकारी को ऐसा आवेदन प्राप्त होने के पांच दिवस के अंदर अंदर पर–व्यक्ति (तृतीय पक्ष) से लिखित में या मौखिक रूप से पूछना चाहिए कि क्या उसके बारे में चाही गई सूचना प्रकट कर दी जावे ? पर–व्यक्ति (तृतीय पक्ष) द्वारा सूचना प्रकट न करने का निवेदन किए जाने पर भी यदि सूचना प्रकटन में लोक हित, पर–व्यक्ति के हितों से अधिक महत्वपूर्ण हो तो लोक सूचना अधिकारी सूचना दे सकेगा अन्यथा सूचना देना आवश्यक नहीं है।

प्रथम अपील की प्रक्रिया – यदि लोक सूचना अधिकारी से निर्धारित अवधि 30 दिवस में सूचना प्राप्त नहीं होती, प्राप्त सूचना से अनुरोधकर्ता संतुष्ट नहीं है, गलत–भ्रामक–अधूरी सूचना उपलब्ध करवाई गई है तो सक्षम स्तर पर प्रथम अपील की जा सकती है। प्रथम अपील के लिए न तो कोई आवेदन प्रारूप निर्धारित है और न ही कोई शुल्क रखा गया है। प्रथम अपील आवेदक द्वारा सूचना प्राप्ति के लिए प्रस्तुत किए गए आवेदन पत्र की प्रति, लोक सूचना अधिकारी कार्यालय में पहुंचने के साक्ष्य (रजिस्टर्ड पत्र की रसीद या प्राप्ति रसीद), आवेदन फीस रु 10/– जमा कराने के साक्ष्य (पोस्टल ऑर्डर या रसीद) सहित प्रस्तुत की जाने पर ही स्वीकार्य होगी। प्रथम अपील

प्रत्येक कार्यालय के बाहर प्रदर्शित किये जाने वाले पट्ट का प्रारूप
आपकी सूचना के अधिकार के लिए

1. लोक प्राधिकरण का नाम
   - क – पदनाम
   - ख – पता
   - ग – दूरभाष
2. लोक सूचना अधिकारी का नाम
   - क – पदनाम
   - ख – पता
   - ग – दूरभाष

3.	आवेदन शुल्क प्रार्थनापत्र के साथ	रु. 10/–
4.	अभिलेखों के निरीक्षण के लिए	प्रथम घण्टे कोई फीस नहीं अतिरिक्त प्रत्येक 15 मिनट या उसके भाग के लिए रु. 5/–
5.	प्रतिलिपि (ए–4 या ए–3 आकार में)	रु. 2/– प्रति कॉपी
6.	प्रतिलिपि (बड़े आकार के पृष्ठ)	वास्तविक प्रभार अथवा लागत कीमत
7.	सैम्पल या मॉडल के लिए	वास्तविक लागत कीमत
8.	डिस्क या फ्लॉपी के लिए	रु. 50/– प्रति डिस्क या फ्लॉपी
9.	मुद्रित सूचना के लिए	नियत मूल्य या प्रति पृष्ठ रु. 2/–

शुल्क राशि नकद/पोस्टल ऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट/बैंकर चैक के रूप में जमा करायी जा सकती है।

अधिकारी को अपील का निस्तारण 30 दिवस या अधिकतम 45 दिवस के अंदर करना होगा।

द्वितीय अपील की प्रक्रिया – प्रथम अपील अधिकारी द्वारा अपील का निस्तारण न करने अथवा उसके द्वारा दिए गए निर्णय से क्षुब्ध होने पर आवेदक द्वितीय अपील राज्य सूचना आयोग को कर सकता है। इसके लिए सूचना प्राप्ति के लिए प्रस्तुत किए गए प्रथम आवेदन पत्र की प्रति, लोक सूचना अधिकारी कार्यालय में पहुंचने के साक्ष्य (रजिस्टर्ड पत्र की रसीद या प्राप्ति रसीद), आवेदन फीस रु 10/- जमा कराने के साक्ष्य (पोस्टल ऑर्डर या रसीद), प्रथम अपील दर्ज कराने का प्रमाण तथा प्रथम अपील अधिकारी द्वारा यदि कोई निर्णय दिया गया हो तो उसकी प्रति के साथ 90 दिन की समयावधि में आवेदक द्वारा प्रार्थना की जा सकती है।

सूचना न देने का दोषी पाए जाने पर दण्ड –

1. सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 20(1) के अन्तर्गत राजस्थान सूचना आयोग को यह अधिकार प्राप्त है कि यदि कोई लोक सूचना अधिकारी सूचना न देने का दोषी पाया जाता है तो उसे रु 250/- प्रतिदिन किन्तु अधिकतम रु 25000/- तक दण्डारोपित किया जा सकता है।
2. सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 20(2) के अन्तर्गत राजस्थान सूचना आयोग को यह अधिकार प्राप्त है कि यदि कोई लोक सूचना अधिकारी सूचना न देने का दोषी पाया जाता है तो उसके विरुद्ध विभागीय कार्यवाही की सिफारिश कर सकता है।
3. सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 19(8)(बी) के अन्तर्गत राजस्थान सूचना आयोग को यह अधिकार प्राप्त है कि यदि कोई लोक सूचना अधिकारी सूचना न देने का दोषी पाया जाता है तो वह शिकायतकर्ता को उसके द्वारा सहन की गई किसी हानि या अन्य नुकसान के लिए राशि प्रतिपूरित करने के आदेश जारी कर सकेगा।

सद्भावना पूर्वक की गई कार्यवाही के लिए संरक्षण – लोक सूचना अधिकारी द्वारा सद्भावना पूर्वक कार्यवाही करते हुए भी यदि विलम्ब कारित हुआ हो तो सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 की धारा 21 में सद्भावना पूर्वक की गई कार्यवाही के लिए संरक्षण प्रदान किया गया है। राजस्थान सूचना आयोग को यह अधिकार प्राप्त है कि वह सद्भावना पूर्वक की गई कार्यवाही से संतुष्ट होने पर विलम्ब के लिए लोक सूचना अधिकारी पर दण्डादेश जारी न करे।

राजस्थान सूचना आयोग के आदेशों को चुनौती–इस अधिनियम के अधीन किए गए किसी आदेश के संबंध में कोई वाद, आवेदन या अन्य कार्यवाही कोई न्यायालय ग्रहण नहीं करेगा और ऐसे किसी आदेश को किसी रूप में प्रश्नगत नहीं किया जा सकता है। लेकिन उच्च न्यायालय एवं सर्वोच्च न्यायालय का मौलिक क्षेत्राधिकार होता है और वे अपील स्वीकार कर सकते हैं।

गोपनीयता के अंधेरों से निकलकर पारदर्शिता के उजाले की ओर ले जाने वाले इस अधिनियम ने नागरिकों को सार्वजनिक प्राधिकरणों से सूचना प्राप्त करने का अधिकार प्रदत्त कर भारतीय संविधान की मूल भावना को प्रशासनिक रूप से व्यावहारिक बनाने का प्रयास किया है। आइये इसे जानें, समझें और अपनायें।

सहायक निदेशक (सतर्कता)
माध्यमिक शिक्षा राजस्थान बीकानेर
मो. 9414324303

माह : मार्च, 2015	विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम	प्रसारण समय : दोपहर 2.40 से 3.00 बजे तक

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
2.3.2015	सोमवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		
3.3.2015	मंगलवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
4.3.2015	बुधवार	बीकानेर	5	पर्यावरण अध्ययन	18	जगह बदली घर बदला
7.3.2015	शनिवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
9.3.2015	सोमवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		
10.3.2015	मंगलवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
11.3.2015	बुधवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		
12.3.2015	गुरुवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		
13.3.2015	शुक्रवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
14.3.2015	शनिवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
16.3.2015	सोमवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		
17.3.2015	मंगलवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
18.3.2015	बुधवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		
19.3.2015	गुरुवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
20.3.2015	शुक्रवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		
23.3.2015	सोमवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
24.3.2015	मंगलवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम		
25.3.2015	बुधवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
26.3.2015	गुरुवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		
27.3.2015	शुक्रवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
30.3.2015	सोमवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम		
31.3.2015	मंगलवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम		

लेखा स्तम्भ

दोहरा कार्य-उपवेतन देयता

नियुक्तियों का संयोजन-दोहरा प्रबन्ध

दोहरा प्रबन्ध (DUAL - CHARGE) जहाँ एक सरकारी अधिकारी/कर्मचारी अपने कर्तव्यों के अतिरिक्त दूसरे पद पर नियुक्त किया जाता है तो उसे राजस्थान सेवा नियम (भाग-1) के नियम 50 के अन्तर्गत अतिरिक्त वेतन स्वीकृति किया जावेगा। राज्य सरकार/नियुक्ति प्राधिकारी एक सरकारी अधिकारी/कर्मचारी को अस्थाई आधार पर या कार्यवाहक के रूप में एक समय में दो स्वतन्त्र पदों पर कार्य करने हेतु राजस्थान सेवा नियम (भाग-1) के नियम 50 के अन्तर्गत नियुक्त कर सकता है। दोहरा-प्रबन्ध के अन्तर्गत नवीन सृजित पद उस दिन से प्रभावी माना जायेगा जब वह पद पूर्ण कालिक आधार पर भरा जाता है। ऐसा नवीन सृजित पद यदि आरम्भ में पूर्णकालिक (Full Time) आधार पर नहीं भरा गया है तो उस रिक्त पद के कार्यों के लिये किसी भी अधिकारी/कर्मचारी को कोई भी विशेष वेतन, स्वीकृत नहीं किया जा सकेगा। राजस्थान सेवा नियमों के नियम 50 तथा नियम 35 के अधीन दोहरे प्रबन्ध के अधीन अधिकारी/कर्मचारी को वेतन निम्न नियमानुसार देय होगा:-

- कर्मचारी/अधिकारी के धारित-पद के अधीनस्थ होने पर उसे कुछ भी वेतन प्राप्त नहीं होगा।
- यदि पद (दोहरा प्रबन्ध) समकक्ष या निम्न है (लेकिन अधीनस्थ नहीं) तो कार्यवाहक भत्ता 30 दिवस से 60 दिवस तक परिकल्पित वेतन का 1.5 प्रतिशत तथा 60 दिवस से अधिक कार्य करने पर परिकल्पित वेतन का 3 प्रतिशत देय होगा।
- यदि पद उच्चत्तर है (धारित पद से) तथा सरकारी अधिकारी/कर्मचारी उच्चत्तर पद को धारित करने के लिये वाँछित योग्यता रखता है या नियमित पदोन्नति या आकस्मिक पदोन्नति के लिए भी संवर्ग में वरिष्ठ है तो वह उच्चत्तर पद का वेतन प्राप्त करेगा अथवा 30 दिवस से 60 दिवस तक परिकल्पित वेतन का 1.5 प्रतिशत तथा 60 दिवस से अधिक हेतु 3 प्रतिशत दोहरा भत्ता प्राप्त करेगा।
- परिकल्पित वेतन से तात्पर्य चालू वेतन बेंड में वेतन व ग्रेड वेतन के योग से है। (Pay in running pay band+Grade pay amount)
- यदि उच्चत्तर पद हेतु वर्णित योग्यता/शर्ते पूर्ण नहीं करता है तो 30 दिवस से अधिक कार्य के लिए उसे अपने वेतन का अधिकतम 1.5 प्रतिशत ही दोहरा भत्ता प्राप्त होगा।
- 30 दिवस से कम अवधि के दोहरा प्रबन्ध पर अधिकारी/कर्मचारी को दोहरा कार्यभत्ता देय नहीं होगा।
- 6 माह से अधिक अवधि हेतु कार्यभार भत्ता स्वीकृत नहीं होगा।
- नियमित रिक्त पद पर दोहरा भत्ता अधिकतम 6 माह तक ही भुगतान किया जा सकेगा। उक्त अवधि के पश्चात अन्य अधिकारी/कार्मिक को अतिरिक्त कार्य भार आवंटन होने के आधार पर दोहरा कार्यभत्ता देय नहीं होगा।
- कार्यभार भत्ता की अवधि की गणना में पूर्व व पश्चात के सार्वजनिक अवकाश अवधि को शामिल किया जायेगा।
- कार्यभार भत्ते की गणना में 30 दिवस से अधिक व अधिकतम 6 माह की अवधि की गणना में अधिकारी/कर्मचारी द्वारा उपभोग अवकाश अवधि को घटाकर शेष अवधि के आधार पर भत्ता देय होगा। किसी भी स्थिति में 30 दिवस से कम अवधि होने (निरन्तरता में) की स्थिति में कोई भी भत्ता देय नहीं होगा। अवकाश से तात्पर्य स्वीकृत उपार्जित, रूपान्तरित एवं अन्य अवकाश से है।
- राजस्थान सेवा नियम (भाग-1) के परिशिष्ट ix में प्रदत्त शक्तियों के अनुसार नियुक्ति अधिकारी ही दोहरा भत्ता स्वीकृत हेतु सक्षम अधिकारी होगा।

वर्तमान में जिन अधिकारियों को केवल आहरण-वितरण के (03) के अधिकार दिये हुए हैं उन्हें उपवेतन का लाभ देय नहीं होगा।

प्रेरक-प्रसंग

सीख

बंगाल में बोपदेव नामक कोई बालक था। वह विद्यालय के पाठ्य विषयों के अवबोधन व स्मरण में निरन्तर असमर्थ था। वह प्रायः सोचा करता था कि दूसरे छात्र सभी विषयों को शीघ्र समझ लेते हैं और सीख लेते हैं, मंदमती मैं उन्हें नहीं जानता। मैं तो यहां व्यर्थ ही समय गंवाता हूँ।

एक बार वह परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुआ, फलतः विद्यालय से निकाल दिया गया। वह निराश होकर घर की ओर जा रहा था। मार्ग में एक कुआं था। कुएं के पास एक विशाल शिलाखण्ड था। उस शिलाखण्ड में अनेक छोटे-छोटे गड्ढे थे। वहां कुछ स्त्रियां कुएं के जल से अपने घड़े भर रही थी। बोपदेव ने एक स्त्री से पूछा- 'हे माता! यहां ये सुन्दर गड्ढे किसने बनाए?' वह स्त्री जोर से हँसते हुए बोली- 'बेटा! हम यहां नित्य घड़े रखती हैं, इसीसे ये गड्ढे बन गए। इनको किसी कारीगर ने नहीं बनाया।'

बालक बोपदेव विचार करता हुआ आगे बढ़ गया-'यदि कठोर शिला पर कोमल घड़ों से गड्ढे हो जाते हैं तो बारम्बार अभ्यास से मैं ज्ञान ग्रहण क्यों नहीं कर सकता। मैं भी पूरे मनोयोग से पढूँगा, लिखूँगा, याद करूंगा व कुशाग्रबुद्धि बनूंगा।'

फिर वह बालक बोपदेव अपना निश्चय बताता हुआ पुनः विद्यालय में जाने लगा। वहां ध्यान से पढ़ने लगा। सहपाठियों के साथ अध्ययन सम्बन्धी चर्चा भी करने लगा। घर पर भी सभी विषयों की मन लगाकर पढ़ाई करने लगा। ऐसा करने से क्रमशः उसकी बुद्धि विकसित होने लगी। उसके लिए कठिन विषय भी सरल होते गये।

परिमाणतः गुरुजन भी उससे स्नेह करने लगे, साथी भी सम्मान करने लगे एवं परिजन भी अधिक दुलार करने लगे। कालान्तर में वह महान विद्वान हुआ, उन्होंने विद्यार्थियों के लिए अति सुगम व्याकरण की रचना की।

-बनवारीलाल पारीक 'नवल'
व.अ., रा.उ.मा.वि. रेलमगरा (राजसमंद)
मो. 9602329966

लेखा स्तम्भ

कार्मिकों से सम्बन्धित अवकाश

अवकाश : 'अवकाश' शब्द में उपार्जित अवकाश, अर्द्धवेतन अवकाश, रूपान्तरित अवकाश, विशेष अयोग्यता अवकाश, अध्ययन अवकाश, प्रसूति अवकाश, अस्पताल अवकाश, अदेय अवकाश एवं असाधारण अवकाश सम्मिलित हैं। आकस्मिक अवकाश, अवकाश की श्रेणी में नहीं आता है।

राजस्थान सेवा नियम (पार्ट-1) के नियम 57 के अनुसार अवकाश केवल कर्तव्य सम्पादन (By Duty) द्वारा ही अर्जित होते है तथा अवकाश को अधिकार के रूप में नहीं मांगा जा सकता है। अवकाश स्वीकृतकर्त्ता अधिकारी जनहित/राजकीय हित में अधिकारी/कर्मचारी के आवेदित अवकाश को अस्वीकृत भी कर सकता है। (आर.एस.आर. नियम 59) राजस्थान सेवा नियम (पार्ट-1) के नियम 59 के प्रावधानानुसार अधिकारी/कर्मचारी द्वारा आवेदित अवकाश की प्रकृति बदलने का अधिकार मात्र अधिकारी/कर्मचारी को ही है। स्वीकृत कर्ता अधिकारी आवेदित अवकाश की प्रकृति बदलने में सक्षम अधिकारी नहीं है। आवेदित अवकाश की प्रकृति बदलने हेतु सम्बन्धित अधिकारी/कर्मचारी को पूर्व में स्वीकृत अवकाश अवधि के तीन माह में आवेदन करना अनिवार्य है। आकस्मिक अवकाश चूँकि अवकाश की श्रेणी में ही नहीं आता है अत: आकस्मिक अवकाश की प्रकृति बदलने का प्रावधान नहीं है।

राजस्थान सेवा नियमों के नियम 63 के अनुसार सार्वजनिक अवकाश स्वीकृति अवकाशों से पूर्व (Pre-Fixed) पड़ता हो तो अवकाश एवं वेतन-भत्तों की व्यवस्था सार्वजनिक अवकाश के बाद प्रारम्भ होगी तथा सार्वजनिक अवकाश स्वीकृति अवकाशों की समाप्ति के पश्चात पड़ता हो तो वेतन भत्तों का भुगतान उस दिन तक लागू होगा, जिस दिन तक अवकाश समाप्त हो जाते हैं। राजस्थान सेवा नियमों के नियम 67 के अनुसार आवेदन पत्र उस प्राधिकारी को प्रस्तुत किया जाना चाहिये जिसे मूल अवकाश व उसकी वृद्धि स्वीकृत करने का अधिकार हो। राजस्थान सेवा नियमों के नियम 23(1) के अनुसार एक समय में अधिकारी/कर्मचारी को अधिकतम 5 वर्ष से अधिक अवधि का अवकाश निरन्तर रूप में स्वीकृत नहीं किया जावेगा।

विशिष्ट श्रेणी के अवकाश :

पितृत्व अवकाश : R.S.R. के नियम 103(A) के अनुसार दो से कम उत्तर जीवी संतानों वाले किसी पुरुष सरकारी अधिकारी/कर्मचारी को उसकी पत्नी की प्रसवावस्था के दौरान, अर्थात बच्चे के जन्म के 15 दिन पूर्व से बच्चा पैदा होने के तीन माह तक उक्त अवकाश देय होगा। अवकाश की अवधि 15 दिवस अधिकतम होगी तथा मात्र 2 सन्तानों पर ही देय होगा।

बच्चा गोद लेने पर देय अवकाश : R.S.R. के नियम 103(बी) के अनुसार एक महिला कार्मिक जिसके 2 से कम सन्तान हो उस महिला कर्मचारी/अधिकारी द्वारा विधि-पूर्ण तरीके से बच्चा गोद लेने की स्थिति में उक्त अवकाश देय होगा। अवकाश अवधि अधिकतम 180 दिवस की स्वीकृत होगी। गोद लिये गये बच्चे की आयु 1 वर्ष से कम होनी चाहिये तथा देय अवकाश गोद लेने की दिनांक से 180 की अवधि का देय होगा। उक्त अवकाश के साथ अन्य श्रेणी का अवकाश लिया जा सकता है। अवकाश अवधि में वेतन अवकाश से प्रस्थान करने से पूर्व की दरों पर ही देय होगा। उक्त अवकाश की प्रविष्टि अवकाश लेखे में नहीं की जाकर, सेवा पुस्तिका में अंकित की जायेगी।

निरोधावकाश : एक राज्य कर्मचारी के परिवार या घर में अछूत का रोग लग जाने के फलस्वरूप कार्यालय में नहीं आने के आदेश, अपेक्षित कार्य से अनुपस्थित रहने के लिये 21 दिन या विशेष परिस्थिति में 30 दिन तक का निरोधावकाश देय है। (आर.एस.आर. अनुसूची 'ख' भाग- vi)

(4) राज्य कर्मचारियों के परिवार जनों को स्वाईन फ्लू होने पर 7 दिवस का निरोधावकाश देय होगा। (राज्य सरकार के आदेश क्रमांक R.S.R. दिनांक 15.10.2012)

(5) ऐच्छिक अवकाश को आकस्मिक अवकाश के साथ स्वीकृत किया जा सकता है। आदेश क्रमांक: एफ1(49)एफडी/(जी.आर.-2) 82 दिनांक 15.09.1990

(6) प्रसूति अवकाश : एक महिला सरकारी कर्मचारी को सम्पूर्ण सेवा अवधि में दो बार तथा जीवित बच्चा न हो तो तीसरी बार प्रसूति अवकाश स्वीकृत किया जा सकता है। यह अवकाश चिकित्सा प्रमाण-पत्र के आधार पर प्रारम्भ तिथि से 180 दिन की अवधि तक पूर्ण वेतन-भत्तों पर स्वीकृत किया जावेगा। प्रसूति अवकाश किसी अन्य प्रकार के अवकाश के साथ भी लिया जा सकता है। प्रसूति अवकाश महिला कर्मचारी को दो जीवित संतानों से कम संतान होने पर ही स्वीकृत होगा।

महिला कर्मचारी के 2 से कम संतान होने की स्थिति में गर्भपात (abortion) तथा गर्भस्त्राव (Mis carriage) की स्थिति में 6 सप्ताह तक की अवधि का अतिरिक्त प्रसूति अवकाश भी देय स्वीकृत होगा। अवकाश प्रार्थना-पत्र के साथ प्राधिकृत चिकित्सा अधिकारी का प्रमाण-पत्र संलग्न करना अनिवार्य है। उक्त स्वीकृत अवकाश प्रसूति अवकाश के अतिरिक्त देय होगा। (वित्त विभाग की आई.डी. 101002622 दिनांक 30.07.2010 आदेश क्रमांक: एफ-5 (34(एफडी)2010/9.8 2009)।

(7) प्रसूति अवकाश: अनुबन्धित/ट्रेनी महिला कर्मचारी को भी नियमानुसार 180 दिन का देय होगा (F-1 (16) FD/Rules-2007/RSR-15/09/ दिनांक 18.06.09)

(8) प्रसूति अवकाश हेतु आवेदन कार्यालय अध्यक्ष को प्रस्तुत करना होगा तथा कार्यालय अध्यक्ष ही प्रसूति अवकाश को स्वीकृत करने के लिए सक्षम प्राधिकृत होगा। ❐

शाला प्रांगण से

माह फरवरी-2015 में राज्य के विभिन्न विद्यालयों में स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती, महाशिवरात्रि उत्सव मनाये गये। निकट भविष्य में माध्यमिक बोर्ड परीक्षाएं होने के कारण विभिन्न विद्यालयों में परीक्षा तैयारी के लिए टेस्ट सीरिज का आयोजन किया गया। राज्य में स्वाइन फ्लू के बढ़ते दुष्प्रभाव को देखते हुए अनेक आयोजन कक्षा स्तर तक सीमित कर दिये गये। शाला प्रांगण के संबंध में कुछ विद्यालयों से प्राप्त रिपोर्ट संक्षेप में निम्नानुसार है-

भीलवाड़ा : राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रायला, भीलवाड़ा में श्री राजेन्द्र कुमार प्रधानाचार्य द्वारा दिनांक 18.02.15 को स्वाइन फ्लू के प्रांरभिक लक्षणों की जानकारी दी गई। विद्यार्थियों को अत्यधिक भीड़भाड़ वाले स्थानों पर जाने से बचने की सलाह दी गई। प्रधानाचार्य ने विद्यार्थियों को समय-समय पर साबुन से हाथ धोने, घर एवं आसपास के परिसर की साफ-सफाई रखने की प्रेरणा दी। उन्होंने यह भी कहा कि स्वाइन फ्लू से पीड़ित व्यक्ति द्वारा काम में लिए गये वस्त्र, रुमाल, बर्तन आदि अन्य लोग काम में न लेवें। इस अवसर पर स्वाइन फ्लू जागरूकता संबंधी पोस्टर तैयार कर विद्यालय में लगाये गये।

बीकानेर : राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुरुद्वारा, रानी बाजार, बीकानेर में कक्षा स्तर पर महाशिवरात्रि पर्व मनाया गया। छात्रा ममता चौधरी, कक्षा 06 ने बताया कि शिवजी की बारात में पिशाच, जीव जन्तु आदि सभी थे। उनके गले में विषधर है। ये इस बात का संदेश देते हैं कि सृष्टि में सभी जीवों का अपना महत्व है।

इस अवसर पर श्रीमती मीना जोशी शाला प्रभारी ने कहा कि हम सभी को महादेव का अनुसरण करते हुए नि:स्वार्थ भावना से समाज कल्याण के कार्य करने चाहिए। इसी विद्यालय में बोर्ड परीक्षा देने वाली छात्राओं की अच्छी तैयारी एवं आत्म विश्वास बढ़ाने के लिए कक्षा टेस्ट लिये गये एवं कमजोर छात्राओं के लिए अतिरिक्त कालांश की व्यवस्था की गई। डॉ. ओमप्रकाश, आयुर्वेदिक अधिकारी ने दिनांक 06.02.15 से 08.02.15 तक छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया तथा समस्त शाला परिवार को स्वाइन फ्लू के कारण एवं इसमे रखी जाने वाली सावधानियों की जानकारी दी। इस अवधि में छात्राओं को नि:शुल्क काढ़ा पिलाया गया। एन.एस.एस की छात्राओं ने अपने निवास स्थान के आस पास के क्षेत्रों में स्वाइन फ्लू से बचाव एवं रोकथाम की जानकारी दी। विद्यालय में 10 दिवसीय आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर दिनांक 19.02.15 से प्रारम्भ हुआ। श्रीमती कृष्णा शर्मा अध्यापिका द्वारा जूडो कराटे, क्रॉलिंग एवं मोटर एबिलिटीज का प्रशिक्षण दिया गया। विभिन्न प्रकार के आक्रमणों से बचाव के गुर सिखाये गये। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य छात्राओं को शारीरिक रूप से सशक्त करना उनमें आत्मविश्वास एवं त्वरित निर्णय क्षमता का विकास करना था।

झुंझुनूं : राजकीय परमवीर पीरू सिंह माध्यमिक विद्यालय, झुंझुनूं में कक्षा 06 से 08 तक के विद्यार्थियों मे जनसंख्या शिक्षा एवं जीवन कौशल के विकास हेतु 02 दिवसीय जिला स्तरीय जीवन कौशल विकास बाल मेला का आयोजन दिनांक 13.02.15 से 14.02.15 तक किया गया। मेले का उद्देश्य विद्यार्थियों में भारतीय मूल्यों, संस्कृति,कला एवं आत्म अभिव्यक्ति का विकास करना था। इस मेले में आओ चित्र बनाएं, आओ गीत गाएं, वाद-विवाद, जनसंख्या शिक्षा क्विज एवं रोल प्ले प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इनमें क्रमश: विकास कुमार कक्षा 08, सना बानो कक्षा 07,हिना बानो कक्षा 07 एवं विशाल कक्षा 08 प्रथम रहे।

कोटा : राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय, बालाजी प्रेम नगर, कोटा में श्रीमती कल्पना शर्मा, सहायक उप निरीक्षक, संस्कृत शिक्षा ने दिनांक 18.02.15 को प्रार्थना सभा में स्वाइन फ्लू के बचाव एवं उपचार हेतु संवाद किया। उन्होंने बताया कि स्वाईन फ्लू एच(एन) वायरस के कारण होने वाला संक्रामक रोग है। यह किसी भी आयु वर्ग के व्यक्ति को हो सकता है। श्रीमती शर्मा ने विद्यार्थियों में जागरूकता के लिए इसके लक्षण एवं बचाव के कुछ उपाय बताए तथा तेज बुखार, कंपकपी, गले में खराश, छींक आना जैसे लक्षण दिखने पर निकट के स्वास्थ्य केन्द्र जाकर चिकित्सीय सलाह लेने की बात कही। उन्होंने ने बताया कि समय पर इलाज कराने से स्थिति को नियंत्रित किया जा सकता है। उन्होंने आग्रह किया कि स्कूली बच्चों को स्वच्छता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। जब भी खांसी, छींक आये तो नाक एवं मुँह पर रूमाल रखे। रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए तुलसी पत्र, काली मिर्च को पानी में उबाल, छान कर पीने तथा सामान्य जल की जगह तुलसी युक्त गुनगुना जल सेवन करने की राय भी दी।

इसी प्रकार राजकीय उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय, विनोबा भावे एवं आर.के. पुरम कोटा में भी दिनांक 16.02.15 को संस्था प्रधानों द्वारा स्वाइन फ्लू के कारण, बचाव एवं निवारण की जानकारी दी गई।

श्रीगंगानगर : राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, मटका चौक, श्रीगगांनगर में दिनांक स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती 14.02.15 को कक्षा स्तर पर मनाई गई। छात्रा ललिता छींपा, शीनू कक्षा 12 ने बताया कि स्वामी जी समाज सुधारक, विचारक एवं संस्कृत के विद्वान थे। उन्होंने समाज में व्याप्त विभिन्न रुढ़ियों एवं मूर्ति पूजा का विरोध किया। आर्य संस्कृति के उन्नयन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

श्रीमती अर्चना आर्य प्रधानाचार्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी जी की कथनी एवं करनी में अन्तर नहीं था। उनका मानना था कि मानव का उत्थान सदाचरण एवं शुभ कार्यो से होता है। श्रीमती आर्य ने सभी को अपने जीवन में स्वामी जी के आदर्शो को अपना कर अच्छा इंसान बनने के लिए प्रेरित किया। इसी विद्यालय में महाशिवरात्रि पर्व मनाया गया। छात्रा ममता, कक्षा 11 ने भगवान शिव के विभिन्न अवतारों के बारे में बताया। श्रीमती सविता व्याख्याता ने छात्राओं को कठिन परिश्रम, भारतीय संस्कृति एवं सद् संस्कारों को जीवन में आत्मसात कर के अपने अन्दर शिवत्व जगाने का आग्रह किया।

-सुनीता चावला
सहायक निदेशक
माध्यमिक शिक्षा राज. बीकानेर
मो. 9414426063

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

मत्स्यांचल की काशी अलवर

❒ नरेश शर्मा

अरावली पर्वत माला की सुरम्य तलहटी में बसा अलवर न केवल नैसर्गिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है बल्कि यहाँ की मिट्टी तपोभूमि के रूप में देश भर में प्रख्यात रही है इसीलिए इसे 'मत्स्यांचल की काशी' कहा जाता है। पूर्वी राजस्थान के इस जिले की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगालिक पृष्ठभूमि विशिष्ट स्थान रखती है। दिल्ली और जयपुर दो राजधानियों के मध्य स्थित होने के कारण अलवर जिला एन.सी.आर (राष्ट्रीय राजधानी परिक्षेत्र) का प्रमुख जिला है। यहाँ के पर्यटक स्थल एवं आर्थिक विकास के नवीनतम मॉडल देश भर में आकर्षण का केन्द्र बिन्दु हैं। अलवर में विभिन्न ऋषि-मुनियों, सन्तों ने कठोर तपस्या कर आध्यात्मिक क्षेत्र में अलवर को विशिष्ट पहचान प्रदान की है। अलवर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पाषाण काल से शुरू होकर ऋग्वैदिक काल, रामायण महाभारत काल तक पहुंचती है इसलिए अलवर का परिचय पाठको के लिए बहुत समीचीन हो जाता है।

भौगोलिक स्थिति : राजस्थान के उत्तर पूर्व में स्थित अलवर जिला 27.04 से 28.04 उत्तरी अक्षांश तथा 76.07 से 77.13 पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इसकी उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम की लंबाई-चौड़ाई क्रमश: 137 तथा 110 किलोमीटर है। इसका क्षेत्रफल 8380 वर्ग किलोमीटर है। इसकी उत्तरी सीमा भरतपुर जबकि पश्चिमी सीमा जयपुर-दौसा एवं सवाईमाधोपुर जिलों से स्पर्श करती है। अलवर को भौगोलिक संरचना की दृष्टि से मुख्यत: 3 भागों यथा मध्य पर्वतीय, पूर्वी पठार और पश्चिमी रेतीले भाग में विभाजित किया जाता है। यहाँ की जलावायु शुष्क और स्वास्थ्यप्रद है। यहाँ की भीषण गर्मी और सर्दी दोनों ही बहुत प्रसिद्ध हैं। गर्मियों में उच्चतम तापमान 50 डिग्री सेल्सियस को स्पर्श करने लगता है तो शीत ऋतु में 0 डिग्री सेल्सियस तक लुढ़क जाता है। यहाँ की औसत वर्षा 61 से.मी. है।

अलवर जिले की प्रमुख नदियां साबी,

सोता, रूपारेल प्रसिद्ध है किन्तु यहां बारहमासी नदियों का पूर्ण अभाव है। यहाँ अनेक बांध और झीलें भी स्थित हैं जिनमें जयसमंद, सीलीसेढ, मंगलसर, मानसरोवर, आगर जैतपुर, हंस सरोवर, देवती बांध, रामपुर जयसागर, हरसोरा, विजय सागर और प्रताप बांध मुख्य हैं। कृषि की मुख्य पैदावार सरसों, गेहूं, जो-चना, बाजरा है। खनिजों की दृष्टि से अलवर को खनिजों का 'अजायबघर' की संज्ञा भी दी जाती है। मुख्य खनिजों में संगमरमर, डोलोमाइट, सोप स्टोन, कॉपर की गिनती की जाती है। यह जिला एन.सी.आर में आता है अत: यहाँ के औद्योगिक क्षेत्र एम.आई.ए (मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र), भिवाड़ी, नीमराणा, बहरोड और राजगढ़ बहुत प्रसिद्ध है। यहाँ देश-विदेश की नामचीन कंपनियों के कल-कारखाने स्थापित हैं।

अलवर-इतिहास के झरोखों से : अलवर का अतीत-इतिहास बहुत प्राचीन है। यहाँ की पुरातात्विक सम्पदा अपने आगोश में यहाँ की गौरवशाली-अनूठी ऐतिहासिक दास्तानों को समेटे हुए हैं। ज्ञातव्य है कि अलवर में पाषाण कालीन ऐतिहासिक पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए है लेकिन पौराणिक साहित्य पर दृष्टिपात करें तो अलवर का उल्लेख अनेकानेक पुराणों में भी प्राप्त होता है। स्पष्ट है कि ईसा पूर्व की सदियों में अलवर परिक्षेत्र विभिन्न नामों से विख्यात था। इसका प्रथम पौराणिक उल्लेख महर्षि कश्यप और उनकी पत्नी दिति से उत्पन्न पुत्र वीर पराक्रमी हिरण्याक्ष-हिरण्यकशिपु के अलवर क्षेत्र पर प्रमुत्व की स्थापना के संदर्भ में प्राप्त होता है। हरिवंश पुराण से ज्ञात होता है कि कालांतर में यह क्षेत्र अयोध्या के सूर्यवंशी महाराजा वृहदश्व और उनके पुत्र कुवलयाश्व के अधिकार में आ गया। उनकी 18वीं पीढ़ी के पश्चात् अलवर प्रदेश मग्ध साम्राज्य का अंग बन गया। इस तथ्य की पुष्टि मौर्य सम्राट अशोक महान के भाब्रू लघु शिलालेख से होती है जो अलवर संग्रहालय में प्रदर्शित है।

'मत्स्य' क्षेत्र-नामकरण : भागवत पुराण के अनुसार उपरिचर के चौथे पुत्र 'मत्सिल' (मत्स) के अधिकार में आने के बाद अलवर को मत्स्य क्षेत्र के नाम से पुकारा जाने लगा। इस तथ्य की पुष्टि महाभारत के आदि पर्व 64 अध्याय से भी होती है। महाराजा मत्सिल ने 'मत्स्यपुरी' (आधुनिक माचाड़ी तहसील राजगढ़) नामक नगर बसा कर अपनी राजधानी बनाया। ज्ञातव्य है कि माचाड़ी के ही राव राजा प्रताप सिंह ने ही 25 नवम्बर 1775 को स्वतंत्र अलवर राज्य की स्थापना की थी।

ईसा पूर्व छठी सदी जब महावीर स्वामी और महात्मा बुद्ध का प्रादुर्भाव हुआ तब अलवर मत्स्य देश का अभिन्न अंग था। इस समय के सोलह महाजनपदों में यह विख्यात जनपद था। महाभारत के युद्ध के समय यहाँ राजा मत्स्य के पौत्र विराट इस क्षेत्र का अधिपति था। उसने मत्स्यपुरी (माचाड़ी) से 35 मील दूर विराटनगर (बैराठ) की स्थापना की। इसी राजधानी और अलवर क्षेत्र में पाण्डवों ने अपना अज्ञातवास बिताया था। इसी कालखण्ड के कालान्तर में त्रिगर्त गणराज्य (तिजारा) अस्तित्व में आया। ईसा की तीसरी सदी में अलवर प्रदेश पर राजा व्याघ्रराज का अधिकार स्थापित हुआ। उसने आधुनिक राजगढ़ बसाया। पांचवी सदी में यह क्षेत्र चौहानों के अधिकार में आ गया। छठी सदी में उत्तरी अलवर में भाटी क्षत्रिय राजा शालीवान ने कोट और बहरोड़ बसाया। कालान्तर में आठवीं सदी तक यह क्षेत्र मथुरा जनपद का अंग बना रहा। राजोरगढ़ (राजगढ़ तहसील का ग्राम) से प्राप्त शिलालेख से पता चलता है कि सन् 922 से 1217 ई तक अलवर के दक्षिणी क्षेत्रों पर गुर्जर प्रतिहारों का कब्जा रहा। उस युग के

पुरातात्विक अवशेष शिव मन्दिर, जैन मूर्ति नौ गजा, बावड़ी, तालाब भी प्राप्त हुए हैं। कन्नोज के प्रभुत्व की समाप्ति के पश्चात् अलवर क्षेत्र पर बड़गुर्जर, प्रतिहार, यादव, निकुम्भ, चौहानों के छोटे-छोटे प्रभाव क्षेत्र स्थापित होते चले गए। मुगल सम्राट के एकीकरण के समय यहाँ यही स्थिति बनी रही।

इस ऐतिहासिक कालक्रम में आमेर के कछवाह शासक अलघराय ने अलवर को निकुम्भों से छीन लिया। उसके वंशजो ने सन् 1049 में अलापुर (अलवर) की स्थापना की कुछ समय पश्चात् निकुम्भो ने अलवर पुन: जीत लिया और अलवर के प्रसिद्व दुर्ग बाला किले की तामीर करवाई। हसन खाँ मेवाती जो अलवर इतिहास का अमर नायक है के पिता अलावल खां खानजादा ने निकुम्भों से अलवर दुर्ग छीन कर उसके परकोटे का निर्माण कराया। पृथ्वीराज चौहान के वंशजो ने नीमराणा, मांढण के क्षेत्रों पर कब्जा कर दुर्ग का निर्माण कर अपना पृथक राज्य स्थापित किया।

दिल्ली सल्तनत (1206 से 1526 ई) काल में अलवर : महमूद गजनवी के समय 1001 से 1027 ई. तक अलवर भी आक्रान्ता का शिकार बना। कुतुबुद्वीन ऐबक, इल्तुतमिश, रजिया, बलबन, गयासुद्दीन तुगलक, फिरोज तुगलक के समय अलवर मेवात क्षेत्र पर दिल्ली सुल्तानों के प्रभुत्व की लड़ाई में उलझा रहा।

मुगलकाल में अलवर : रोचक तथ्य है कि सामरिक महत्ता के कारण अलवर क्षेत्र दिल्ली के सुल्तानों और मुगल सम्राटों के लिए हमेशा संघर्ष का कारण बना रहा मुगल सम्राट बाबर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुक-ए-बाबरी' में अलवर के बाला दुर्ग में अपने रात्रि प्रवास का विवरण लिखा है। बाबर ने इस क्षेत्र को हिन्दाल को सौंपा। हुमायुं, अकबर, जहांगीर, शाहजहां और औरंगजेब ने अलवर दुर्ग को सीधे मुगल नियंत्रण में रखा। औरंगजेब ने अलवर के कांकवाडी किले में अपने बड़े भाई दारा शिकोह को बंदी बना कर भी रखा था।

हसन खां मेवाती : अलवर इतिहास के महान यौद्वा अपने राष्ट्रवादी विचारों और बलिदान के लिए प्रख्यात हैं। सन् 1526 ई. में मुगल सम्राट बाबर के खिलाफ पानीपत के युद्ध में दिल्ली के सुल्तान इब्राहीन लोदी का साथ दिया और 1527 में खानवा की लड़ाई में राणा सांगा की ओर से लड़ते हुए वीरगति पाई थी। साम्प्रदायिक सोच से इतर राष्ट्रीय स्वतंत्रता का यह नायाब उदाहरण भारतीय इतिहास की महत्पूर्ण घटना है। बाबर ने अलवर दुर्ग हसन खां मेवाती के पुत्र नाहर खां को सौंप दिया था भारतीय इतिहास में यहां महत्वपूर्ण विवाह का भी जिक्र है, हसन खां मेवाती के भतीजे जमाल खां की बड़ी शहजादी से मुगल सम्राट हुमायुं और छोटी पुत्री से उसके संरक्षक बैरम खां का निकाह हुआ ज्ञातत्य है कि छोटी पुत्री से अकबर के नौ रत्नों में शामिल अब्दुर रहीम खानेखाना का जन्म हुआ जिसे हिन्दी भाषा का महान् विद्वान माना जाता है।

स्वतंत्र अलवर राज्य की स्थापना : 18 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में जब मुगल साम्राज्य तेजी से पतन की ओर अग्रसर था। अंग्रेज, भारत को कब्जाने की फिराक में थे और मराठों ने पूरे भारत पर अपना प्रभुत्व जमा लिया था। तब ऐसी विस्फोटक स्थिति का लाभ उठाते हुए महान् कूटनीतिज्ञ, यौद्धा माचाड़ी के राव राजा प्रताप सिंह ने जो मूलत: ढाई गांव-माचाड़ी, राजगढ़ और आधा राजपुर के जागीरदार थे, ने अलवर बाला किले पर अधिकार कर सन् 25 नवम्बर 1775 को स्वंतत्र अलवर राज्य की स्थापना की उनकी यह उपलब्धि इतिहास की अनोखे स्वतंत्र शासकों के क्रम में प्रताप सिंह के पश्चात् महाराजा बख्तावर सिंह, विनय सिंह, शिवदान सिंह, मंगल सिंह, महाराजा जयसिंह और अन्तिम शासक तेजसिंह हुए। राजस्थान के एकीकरण के प्रथम चरण में मार्च 1948 में अलवर राज्य को महाराजा तेज सिंह से लेकर मत्स्य संघ का निर्माण किया गया।

हिन्दी बनी राज भाषा : जयसिंह की ख्याति राष्ट्रीय अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर मान्य रही। उनकी दूरदृष्टि का उदाहरण था कि सन् 1908 में उन्होंने अलवर राज्य में उर्दू-फारसी- अंग्रेजी के स्थान पर देव नागरी हिन्दी को राज भाषा का दर्जा प्रदान किया। भारत के इतिहास में अलवर और बड़ौदा केवल दो राज्य है जिन्होंने राष्ट्र भाषा हिन्दी के विकास में ऐतिहासिक पहल पेश की थी।

उलवर से अलवर नामकरण : अलवर को पहले उलवर के नाम से भी जाना जाता था लेकिन महाराजा जयसिंह ने जो चैम्बर और प्रिंसेज के सचिव-सदस्य रहे, ने मीटिंगों में अलवर को बैठक क्रम में अन्तिम स्थान मिलने के दर्द को अपनी बुद्धिमता से दूर करने के लिए उलवर नाम को परिवर्तित कर अलवर कर दिया। इस कारण वर्ण क्रम में अब अलवर राज्य की सीट सबसे पहले आने लगी।

स्वामी विवेकानंद का अलवर प्रवास: अलवर इतिहास की एक अन्य महत्पूर्ण घटना स्वामी विवेकानंद का अलवर प्रवास था। सन् 1891 में महाराजा मंगल सिंह के समय स्वामी विवेकानंद का अलवर प्रवास और दबार हॉल में महाराजा के साथ हुए मूर्ति पूजा पर उनका शास्त्रार्थ इतिहास की महत्पूर्ण घटना बनी।

अलवर के प्रमुख पर्यटक स्थल : अलवर पर्यटन की दृष्टि से सैलानियों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है। यहाँ के प्रमुख पर्यटक स्थल निम्न प्रकार हैं-

बालाकिला : अलवर का जगत प्रसिद्ध 'कुंवारा किला' अलवर की आन, बान, शान का प्रतीक है जो अरावली पर्वत चोटी बना है अलवर की 52 गढ़ों में यह सर्वश्रेष्ठ है इसमें 15 गोल और 52 अर्द्धचंद्राकार भुर्ज बनी हैं।

सरिस्का : अलवर जयपुर मार्ग पर अलवर शहर से 37 किलोमीटर दूर अरावली पर्वतमाला के सुरम्य क्षेत्र में सरिस्का वन्य जीवों विशेषकर बाघ संरक्षण हेतु टाईगर प्रोजेक्ट, अभ्यारण्य के रूप में विश्वभर में विख्यात है। यहां वन्य जीवों के साथ दुर्लभ वनस्पति संरक्षित हैं।

नीलकण्ठ (राजोरगढ़) : टहला के समीप स्थित यह स्थल पुरावशेषों के लिए विख्यात है। गुर्जर प्रतिहार शासक युगीन कला-संस्कृति के बेजोड़ नमूने यहां प्रचुरता में प्राप्त हैं।

सीलीसेढ़ : शहर से 13 किलोमीटर दूर रूपा रेल नदी के पानी को रोक कर बनाई मीठे पानी की कृत्रिम झील है जिसे महाराजा विनयसिंह ने अपनी पत्नी शिला के निर्मित कराया था। यहाँ के महल का नैसर्गिक सौन्दर्य देखने लायक है।

पाण्डुपोल : सरिस्का (अभ्यारण्य) क्षेत्र में स्थित यह महाभारत कालीन ऐतिहासिक स्थल है जहाँ पाण्डवों ने अज्ञातवास बिताया था। यहाँ हनुमान जी की शयन मुद्रा में मूर्ति स्थापित है जो पूरे देश में अनोखी है। यहाँ की प्राकृतिक

गुफाओं में आज भी अनेक साधु तपस्यारत दिखलाई पड़ते हैं।

यह हनुमान मंदिर पूरी दुनिया में एकमात्र और निराला है। यहाँ सप्ताह में दो दिन मंगलवार व शनिवार को मुफ्त प्रवेश की सुविधा है। सरिस्का अभ्यारण में स्थित होने के कारण यहाँ वैविध्यपूर्ण औषधीय वनस्पति एवम् वन्यजीवों की प्रचुरता के साथ काली चट्टानों का अद्भुत सौन्दर्य नजर आता है।

भानगढ़ : विश्व की 'टॉप टेन हाउण्टेड' (भूतहा स्थल) में भानगढ़ की गिनती की जाती है। आमेर के शासक माधोसिंह के द्वारा 16 वीं सदी में बसाया था। यह नगर एक तांत्रिक के अभिशाप से रातों-रात उजड़ गया था। किवदंती है कि रानी रत्नावती के रूप सौन्दर्य पर तांत्रिक मोहित हुआ और रानी के साथ हुए तंत्र विद्या में तांत्रिक मारा गया किन्तु मरने से पहले वह शाप दे गया और रातों रात उजड़ गया। आज भी यहाँ महल, मन्दिर, तालाब, भवन, दुकानों के खण्डहर वास्तुशिल्प के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

भर्तृहरि : अलवर जयपुर मार्ग पर अलवर शहर से लगभग 40 किमी दूर भर्तृहरि धाम स्थित है। यह नाथ सम्प्रदाय का प्रमुख स्थल है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि उज्जैन के महाराजा भर्तृहरि ने इसी पावन भूमि पर तपस्या की और यह स्थान भृर्तहरि की समाधि के रूप में विख्यात हुआ। भर्तृहरि तलवार और लेखनी दोनों के यौद्धा थे। नीति शतक, श्रृंगार शतक और वैराग्य शतक उनकी अनुपम कृतियां है जो उनकी जीवन गाथा का भी प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। महाराजा भर्तृहरि ने गुरू गोरक्षनाथ व मत्स्येन्द्रनाथ से दीक्षा ली और लोक मान्यता है कि वो अमर हैं और उनके दिव्य तपोबल का प्रभाव यहां कण-कण में रचा बसा है। लोकदेवता के रूप में उत्तर भारत में भर्तृहरि का प्रभाव 'भर्तृहरि बाबा की जय' के उद्घोष के रूप में परिलक्षित होता है। यही कारण है कि यहां प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु शीश नवाने पहुंचते है। भर्तृहरि धाम में वर्ष में दो बार भाद्र पद और वैशाख मास में लक्खी मेला भरता हैं जिसमें लाखों भक्त बड़ी श्रद्धा के साथ एकत्रित होते हैं। भर्तृहरि धाम कनफड़े साधुओं के लिए भी विख्यात है। इस स्थल का पर्यटन की दृष्टि से भी बड़ा महत्व है।

तालवृक्ष : अलवर नारायणपुर मार्ग पर लगभग 40 किमी दूर पवित्र धार्मिक स्थल तालवृक्ष स्थित है। यह अत्यन्त सुरम्य और ऐतिहासिक स्थान है। अरावली की सघन हरियाली व ताल के वृक्षों से आच्छादित होने के कारण इस स्थल का नाम तालवृक्ष पड़ा। यह महान् ऋषि मांडव्य की तपोस्थली के रूप में भी सुविख्यात है। यहाँ गंगा माता का प्राचीन मंदिर हैं और गर्म व ठण्डे पानी के दो कुण्ड भी स्थित हैं। यहॉ प्रतिदिन बड़ी मात्रा के श्रद्धालु आते हैं। तालवृक्ष लाल मुंह के बंदरों के लिए भी जाना जाता है जो गंगा मंदिर में लगी घंटियों को बजाते रहते है जिससे दिव्य और सम्मोहक नजारा पेश होता है। आमजन यहां के तप्त कुण्ड को चमत्कार के रूप में देखते हैं किन्तु वैज्ञानिक व्याख्या करें तो यहां गंधक की खान होने की प्रबल संभावना है।

नीलकण्ठ : अलवर के धार्मिक स्थलों की श्रृंखला में नीलकण्ठ एक सुरम्य, दर्शनीय स्थान है, जो अलवर शहर से लगभग 61 कि.मी. दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। कनिंघम के अनुसार कछवाहा राज्य की स्थापना से पूर्व नीलकण्ठ बढ़गुर्जर शासकों की राजधानी था। अत: यह पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक महत्व का स्थान है। यहां का नैसर्गिक सौन्दर्य दर्शनीय है। यहां नीलकण्ठेश्वर का प्रसिद्ध मंदिर है जिसमें लगे शिलालेख के अनुसार बढ़गुर्जर शासक अजय पाल ने विक्रम संवत 1010 अर्थात् 953 ई. में इस मन्दिर का निर्माण करवाया। इस मन्दिर में स्थापित शिवलिंग की बड़ी मान्यता है। इसलिए यहां श्रद्धालु एवं सैलानियों का आना जाना लगा रहता है। यहाँ विशेष पूजा-अर्चना भी की जाती है। नीलकण्ठ मन्दिर के निकट ही एक जैन मन्दिर के खण्डहर भी हैं जिसमें 16x4 फुट की एक दिगम्बर जैन तीर्थंकर की मूर्ति है। स्थानीय लोग इसे नौगजा के नाम से पुकारते हैं।

नलदेश्वर : अलवर के सुरम्य और महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में नलदेश्वर की ख्याति निराली है। यह अलवर-थानागाजी के मध्य अरावली पर्वत की पहाड़ियों के बीच स्थित है। यहां की पहाड़ियां जयपुर के हवामहल की तरह नजर आती हैं। यहां महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर स्थित है जो अपनी नैसर्गिक पहाड़ी, चट्टानों से निर्मित है। दुर्गम स्थल होने के कारण इस मन्दिर तक पहुंचने के लिए सैकड़ों सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। यहां का एक निराला आकर्षण मन्दिर के ऊपर की चट्टान से निरन्तर प्रवाहित होने वाली जलधारा है। सघन वन, पर्वतीय नाला और प्राकृतिक जलकुण्ड यहां की शोभा में चार चांद लगाते हैं।

नारायणी धाम : अलवर जिले की राजगढ़ तहसील के बरवा डूंगरी की तलहटी में प्रसिद्ध नारायणी धाम स्थित है जो कि सैन समाज की कुलदेवी नारायणी माता से सम्बन्धित है। नारायणी माता के प्रति यहां के हर समाज में बड़ी श्रद्धा है। भव्य मन्दिर के अलावा एक जलकुण्ड बना हुआ है। यह एक अत्यन्त रमणीक स्थल के रूप में जाना जाता है। साथ ही धार्मिक दृष्टि से इस धाम की मान्यता अलवर के जन मानस में कूट-कूट कर रची-बसी है।

करणीमाता : अलवर के बाला किले में प्रसिद्ध करणीमाता का भव्य मन्दिर स्थित है। करणीमाता के प्रति जन मानस की श्रद्धा गहराई से जुड़ी हुई है। करणीमाता अलवर के शासकों की कुलदेवी भी रही है। अत: इस मन्दिर का ऐतिहासिक महत्व बढ़ जाता है। यहां वर्ष में दो बार चैत्र और आश्विन मास में नवरात्रों के समय मेलों का आयोजन होता है। माता करणी के चमत्कारों के अनेक किस्से अलवर की जनता में प्रचलित हैं। जनश्रुति है कि एक बार अलवर के शासक को अपनी पत्नी के रोग निवारण हेतु करणीमाता से प्रार्थना करनी पड़ी और तत्काल चमत्कार मिला तभी से यह अलवर राज परिवार की कुलदेवी के रूप में मान्य हुई।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र डेहरा तिजारा : अलवर में वैसे तो अनेक जैन मन्दिर प्रसिद्ध हैं किन्तु राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रख्यात जैन मन्दिर अतिशय क्षेत्र डेहरा है। यह अलवर से लगभग 60 कि.मी. दूर अलवर-दिल्ली मार्ग पर तिजारा में स्थित है। यह आठवें जैन तीर्थंकर चन्द्रप्रभु से सम्बन्धित है। इस स्थल को ना केवल जैन धर्मावलम्बी बल्कि अन्य धर्मों के लोग भी बड़ा पवित्र मानते हैं। यही कारण है कि यहां सभी धर्मो के अनुयायी बड़ी संख्या में दर्शन के लिए आते हैं। इस अतिशय क्षेत्र में वास्तु सौन्दर्य की दृष्टि से अनेक जैन मन्दिर एवं स्मारक बने हैं। सन् 1956 में यहां भूगर्भ से जैन

तीर्थंकर चन्द्रप्रभु की प्रतिमा प्रकट हुई। इस क्षेत्र की मान्यता का अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि अलवर दिल्ली राजमार्ग पर स्थित होने के कारण यहां से गुजरने वाले सभी जैन मुनि इस स्थान पर दर्शन हेतु अवश्य पधारते हैं। यहां प्रतिवर्ष चातुर्मास का आयोजन होता है। दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा से हजारों श्रद्धालु यहां प्रत्येक रविवार को दर्शन हेतु आते हैं। महीने के अंतिम रविवार को तो श्रद्धालुओं की हजारों की भीड़ मेले जैसा दृश्य उत्पन्न करती है। मान्यता है कि यहां मत्था टेकने से सबकी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इस मन्दिर की धार्मिक महत्ता से इस क्षेत्र का व्यापार वाणिज्य भी खूब फल फूल रहा है। दिल्ली-उत्तर प्रदेश के श्रद्धालु यहां से बाजारों से खरीददारी कर सामान ले जाते हैं।

जगन्नाथ मन्दिर व रूपबास : अलवर शहर में पुराना कटला स्थित जगन्नाथ जी का मंदिर बड़ा प्रसिद्ध है। उड़ीसा के जगन्नाथपुरी के पावन धाम के प्रति अलवर के शासकों की असीम श्रद्धा थी इसलिए अलवर में जगन्नाथ मंदिर का निर्माण करवाया गया। इस मंदिर का बड़ा ऐतिहासिक महत्व है। यहां लकड़ी से निर्मित कृष्णवर्णी भगवान जगन्नाथ (जगदीश जी) एवं माता जानकी की प्रतिमाएं स्थित हैं। भगवान जगन्नाथ विष्णु के स्वरूप हैं। जानकी मैया जय जगदीश के उद्घोष से यहां का आध्यात्मिक और दिव्य वातावरण गूंजता रहता है।

यहां भाद्रपद मास में भगवान जगन्नाथ का रथ महोत्सव, जगन्नाथ मेले का आयोजन विश्व प्रसिद्ध है। इन्द्र विमान से जगन्नाथ जी की सवारी बड़ी धूमधाम से निकाली जाती है। अलवर से चार किमी. दूर रूपबास जाती है तथा वहां भगवान जगन्नाथ व जानकी मैया का विवाह व वरमाला की रस्म सम्पन्न होती है। जगन्नाथ मेला लक्खी मेला कहलाता है। इस मेले में हजारों श्रद्धालु दण्डवत परिक्रमा करते हैं।

कैलाश पर्वत : कैलाश पर्वत को लोग होप सर्कस के नाम से ज्यादा जानते हैं। कमल पुष्प की सुन्दर आकृति का यह स्मारक अलवर के हृदयस्थल में स्थित है। यहां भगवान शिव और सीताराम जी के प्रसिद्ध मन्दिर हैं जो अलवर शहर के लोगों के लिए धार्मिक श्रद्धा का महत्वपूर्ण केन्द्र हैं।

शेरपुर-लालदास जी : अलवर जिले की रामगढ़ तहसील के नौगांवा कस्बे के पास शेरपुर नामक स्थान पर लालदास जी महाराज का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। यह हिन्दू मुस्लिम समरसता का प्रतीक है। हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही सम्प्रदाय के लोग लालदास जी के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते हैं। इस सम्प्रदाय में रामनाम के जाप पर बल दिया जाता है। अलवर का यह एक महान धार्मिक आस्था का केन्द्र है।

डहरा संत चरणदास जी : अलवर-बहरोड़ मार्ग पर अलवर शहर के निकट ग्राम डहरा में सन्त चरणदास जी का पावन स्थान है। संत चरणदास जी दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों को पर्चे देने के लिए प्रख्यात थे। इतिहास में अनेक किस्से प्रचलित हैं जो सन्त चरणदास जी के महत्व को प्रकट करते हैं। इस स्थल पर विशेष धार्मिक आयोजन होते हैं जिसमें लोग बड़ी श्रद्धा से भागीदारी निभाते हैं।

विजय मन्दिर पैलेस : अलवर के छठे शासक सवाई जयसिंह ने 1917-18 में 105 कक्षों का सुन्दर महल बनवाया। यह महल अलवर शहर से 10 किमी. की दूरी पर स्थित है। महल में विभिन्न प्रकार की सुविधाएं, राजस्थान की शाही युग की भव्यता को दर्शाती हैं। इसी महल के आगे शान्त झील एवं आस-पास शानदार बगीचा है। विजय मन्दिर पैलेस वैसे तो राज परिवार का निवास स्थल है, जिसमें अलवर के सातवें और अन्तिम शासक महाराजा तेज सिंह रहा करते थे किन्तु विजय मन्दिर में सीताराम जी का एक ऐतिहासिक मन्दिर स्थित है। राजा जय सिंह की भगवान श्रीराम में बड़ी श्रद्धा थी। अत: महल में भगवान श्रीराम के दर्शन हेतु एक अत्यन्त उच्च कोटि की सीताराम जी की मूर्ति स्थापित करवाई गई। राम नवमी के अवसर पर उस समय यहां विशेष धार्मिक आयोजन होता था।

गंगाबाग राजगढ़ दादू सम्प्रदाय : अलवर जिले के राजगढ़ कस्बे के गंगा बाग में दादू सम्प्रदाय का पावन स्थल है। यह निर्गुण पंथी दादू के अनुयायियों से संबंधित है। दादू सम्प्रदाय समाज की बुराईयों, कुरूतियों को दूर कर सादगीपूर्ण जीवन पर बल देता है। यहां अनेक दादू संतों की कलात्मक छतरियां भी बनी हैं जो गंगा बाग के आसपास एवं बावड़ी के निकट निर्मित हैं। इस स्थल से महंत गोविन्ददास, शिवरामदास, मलूकदास का गहरा संबंध रहा है। वर्तमान में यहां श्री प्रकाश दास महाराज महन्त हैं। इस स्थल से अलवर के महाराजा बख्तावर सिंह एवं सवाई जयसिंह जी की बड़ी गहरी श्रद्धा रही है।

मंसा माता : सागर के पास पहाड़ी के ऊपर मंसा माता का प्रसिद्ध मंदिर स्थित है। इस की मान्यता भी अलवर के निवासियों में गहराई से जुड़ी है। यहां भी वर्ष मे दो बार नवरात्र मेलों का आयोजन होता है।

सिटी पैलेस : यह अकबर राज परिवार का महल है जो संगमरमर की तक्षण कला के लिए जाना जाता है। यहाँ का दरबार हॉल विख्यात है। भित्ति चित्रों के प्राकृतिक रंग पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। सिटी पैलेस विनय विलास महल के रूप में भी जाना जाता है यह पैलेस अलवर शहर के हृदय में स्थित एक अद्भुत संरचना है। 17वीं सदी के अन्त में निर्मित, सिटी पैलेस राजपूत-इस्लामी वास्तुकला का एक अच्छा उदाहरण है। इस राजसी महल की शानदार डिजाइन प्रवेश द्वार का बखान करती है। पैलेस में प्रवेश लक्ष्मण पोल, सूरजपोल, चाँदपोल जो किशन पोल और अन्धेरी गेट के रूप में जाने जाते है, इन विभिन्न फाटकों के माध्यम से किया जा सकता है। यह पैलेस अपनी विरासत और पुरातत्त्व के लिए जाना जाता है। इसमें पैलेस के समृद्ध इतिहास को यहां स्थित संग्रहलाय में सुरक्षित रखा गया है।

संग्रहालय के अलावा अलवर सिटी पैलेस में एक सुनहरा दरबार हॉल है, जो इसकी हाईलाइटिंग सुविधाओं में से एक है। सिटी पैलेस के पश्चिम में सागर पैलेस स्थित है जिसका निर्माण बख्तावर सिंह ने 1815 में किमन कुण्ड से आने वाले जल के भराव हेतु करवाया था। यह बलुआ पत्थरों की नायाब पच्चीकारी छतरियों के लिए जाना जाता है।

मुसी महारानी की छतरी : सागर जलाशय के पास स्थित यह छतरी अकबर के शासक बख्तावर सिंह की पत्नि की स्मृति में बनी है। इसकी लाल बलुआ पत्थर और सफेद संगमरमर की वास्तुकला बड़ी अनोखी है। इसके भित्ति चित्रों से तत्कालीन चित्रकला के अजीब नमूने भी दृष्टिगोचर होते हैं।

-प्राध्यापक, रा.उ.मा.विद्यालय. रामगढ़ (अलवर)
मो. 9829730611

रचना का पहला चरण

लेखक : हरीश भादाणी **प्रकाशक :** हिन्दी सेवा सदन, बीकानेर **संस्करण :** 2012 **पृष्ठ सं. :** 144 **मूल्य :** ₹ 200.00

समीक्षाधीन काव्य संग्रह पूर्व में 'सयुजा सखाया' नाम से कलकत्ता के शाह परिवार की ओर से प्रकाशित किया गया। लम्बे अन्तराल के उपरान्त कवि को सरलीकृत नामकरण 'रचना का पहला चरण' अधिक मन भाया। यह नामकरण प्रथम दृष्टया प्रथम काव्य संग्रह की प्रतीती कराता है। वास्तव में वैदिक साहित्य के आधुनिक विमर्श का यह काव्य संग्रह स्पष्ट करता है कि वैदिक साहित्य के अतिरिक्त रचना का पहला चरण और कुछ हो ही नहीं सकता। आद्योपांत अनेक बार पठनोपरांत कलम उठाने का साहस मेरे द्वारा किया गया है। वैदिक वाङमय विश्व के प्रथम साहित्य के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वेद भारत की आत्मा हैं इनसे ही भारतीय संस्कृति और अध्यात्म की प्राणवायु समूचे विश्व में संचरित होती है। वेदों की अनेक व्याख्याएं हुई गहन विश्लेषण भी हुआ। विद्वजन ने इन्हें धर्मग्रंथ, ज्ञान-विज्ञान का स्रोत, ईश्वरीय वाणी, साहित्य आदि के नाम से जाना, पहचाना। आधुनिक कवि पीढ़ी के अग्रणी, संवेदनशील हरीश जी ने वेदों में अपनी कविता का उत्स खोजा, ताकि आगत पीढ़ियों को वैदिक वाङमय की भावना से परिचित करा सकें। वेदों को जीवन का महाकाव्य मानते हुए हरीश जी ने अन्तरिक्ष, धरती, प्रकृति, चैतन्य मनुष्य, निखिल ब्रह्माण्ड, ब्रह्माण्ड को चलाने वाली परम-सत्ता मानवीय उल्लास, जिज्ञासा, और समरसता को अपनी रचना का केन्द्रीय भाव बिन्दु बनाया है। कवि ने इन्हीं में अपनी मौलिकता खोजी है। संग्रह की रचनाओं का नामकरण आदि, आखर, आज तीन खण्डों में संयोजित किया गया है। इन्हें ऋग्वेद की कविता, अथर्ववेद के गद्य-पद्य, तथा उपनिषदों के हृदय से प्राप्त कर मौलिक रचना रूप में अभिव्यक्ति दी है। हरीश जी ने अपनी 'तीसरी आँख' से इनमें समाई कविता, विचार और सम्प्रेषण को कैद कर 'रचना का पहला चरण' रूप में जन्म दिया। पूर्ववर्ती कवियों द्वारा प्रगाढ़ रंगों में रंगे वैदिक दर्शन को भादाणी जी ने आधुनिक स्वर, शब्द भाव में पिरोया और हिन्दी साहित्य को यह निराला पुष्पहार पहना दिया।

कवि ने वैदिक ऋचाओं व सूक्तों को आत्मसात करते हुए नए भाव बोध की आत्मा को शब्दों के वस्त्र इस प्रकार पहनाएं हैं। वनदेवी की कथा अनूठी/ जब-जब भी कोई ललचाया/ जैसे तैसे लगे लूटने/ इस ऐश्वर्यवती को/मानवती यह/ बोले, बिन बोले ही/सजा सुनादे उसको/उससे सदा रहे यह रूठी/प्रकृति संरक्षण का यह संदेश सदा ही चिर नूतन है। कवि ने वेदों की पारलौकिकता को लौकिकता के द्वारा स्वानुभूत जीवन सत्यों को पुनः सर्जित कर पाठक के लिए बोधगम्य बना दिया है। अपने मन के/ बंद किवाड़ आ खोले हम/ आ फिर साथ चले हम/ संसार में व्याप्त भेद-भाव मिटाने का रास्ता कवि बड़ी आसानी से सबके लिए खोलता है। वर्तमान युगीन भौतिकतावादी संस्कृति ने विज्ञान के चमत्कारों और करिश्मों से संसार को वैश्विक ग्राम तो बना दिया लेकिन अनेक खतरों का उपहार भी दे दिया है। भौतिकता में आकंठ डूबे मनुष्य को अपनी शुभभावना, शुभकामना देते हुए कहता है- ''यह जीवन रसमय हो/मधुवती हो, मधरी मधरी बहे हवाएँ/ सबकी सांस,सांस मीठी हो/ कलकलती सरिताओं में भी/ बहे सदा मिसरी का पानी/ पी पी कर भी रहे अधापे।''

वेदों की सार्वदेशिक, सार्वकालिक, सर्वव्यापी समरसता के भावों का कवि गान करते हुए कहता है- 'सबका पहला नाम आदमी/ पहला धर्म सभी का जीना/अनकूते धन वाली धरती/ हम सबकी है धाम/ वेदों के सूक्त और उपनिषदों की ऋचाएं अपने आप में ऐसी रससिक्त सम्पूर्ण कविताएं हैं जिनका स्वरुचि, स्वदृष्टि द्वारा विद्वजन करते रहे हैं। भादाणी जी ने वेदों के अनुपम ईख माधुर्य का जो रसास्वादन किया उसकी अभिव्यक्ति सर्वोनुपम है। 'अक्षर' में अक्षरणीय सत्ता जो अशरीरी है, अकाय है, सर्वज्ञ है, स्वयंभू-और सर्वव्यापी है तथा निरन्तर संसरणशील है। इस भाव को कवि ने इस प्रकार शब्दों में उतारा है-'सब में व्यापे/ वह विष्णु है/सबमें चेतन/महत्व ईश-वह एक महेश्वर/ इस विराट का मूल ब्रह्म-यह ओम'। वह तीनों लोकों के अमर महलोक में बैठा सबको देखता है। वह परम सत्ता कुछ ऐसी है-'जो प्राचेतंस सबको देखे/जो विज्ञानी सबमें व्यापे/आओ हम सब उसको करें प्रणाम।' यहां कवि की आस्तिक दृष्टि रहस्यमयी सत्ता का सफल प्रकटीकरण करने में सक्षम हुई है। वह परम सत्ता सर्वोच्च है, गुरुओं की भी वह गुरु है। उससे कवि सीखना व सिखाना चाहता है-'मैं तू दोनों ही समभाषी/रमे-रमाएँ ऐसे ही हम/जिएं एक ही राग/ मानवता की यह रागात्मक अनुभूति व अभिव्यक्ति कितनी बेजोड़ है।

काव्य के तीसरे खण्ड को 'आज' शीर्षक दिया गया है जिसमें कवि ने नौ छोटी पर अपने आप में पूर्ण मुक्तकों को अनेक उपनामों से संबोधित किया है। उसे परम पुरुष, विराट पुरुष, काल पुरुष, इतिहास पुरुष अनेक परम्परागत नामों से संबोधित कर कवि कहता है-'काल पुरुष। अनवरत चलारू/चल-चलता बदले चोले/ 'आज' शीर्षक में ही कबीर की वाणी कबीरा खड़ा बाजार में' को आधार बनाकर भारत के महान कवियों का उनके सुप्रसिद्ध गीतांशों के साथ स्मरण किया है।

काव्य संग्रह में गीत है, भाव है, प्रवाह है, संगीत है। जन भाषा के नवेले शब्दों ने काव्य को सोलह शृंगारों से शृंगारित कर दिया है। ''उधर सरर सरका वह किरड़ा/ जा खोले पिछवाड़ा/रुनझुन पांवो, पीली हल्दी/छाप-छापती/ आ जाएं आंगन/रतनारी संध्या/ चित्रात्मक भाषा द्वारा संध्या सुन्दरी के आगमन का चित्रण मानवीकरण द्वारा हृदय-द्वारी होने के साथ कवि की गहन भावानुभूति को पुष्ट करता है। कवि के पास ऐसा भाषायी ताना बाना है कि देशज शब्दावली सीधे कथ्य की गहरी अनुभूति कराती है।

प्राचीन वैदिक सूक्तों व उपनिषदीय ऋचाओं का कवि ने गीतों के माध्यम से ऐसा सरलीकरण किया है कि पाठक अनथक रुचि के साथ एक बैठक में जब पढ़ने बैठेगा तो वह उसे दीर्घकालिक नहीं लगेगी। इसकी रसानुभूति करने के लिए पाठक को एकाग्रता व धैर्य को साथी बनाना पड़ेगा। यही कवि की सफलता है। संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी, उर्दू भाषा के समन्वयात्मक प्रयोग में काव्य को गीतिकाव्य बना दिया है। वास्तव में हिन्दी कविता का इस काव्य में अनूठा परिधि विस्तार स्तुत्य है। काव्य

में लोक, लोकोत्तर, एकमेक हो कर उपस्थित हुआ है। लोक से परलोक, परलोक से लोक विस्तार की व्याख्या व यात्रा निरन्तर चली है। इन अनेकानेक प्रश्नों से टकराती, बढ़ती इन कविताओं का स्वर वैदिकता के उत्स से दार्शनिकता की सीमाओं को स्पर्श करता है। सरल कलेवर में वेदों की गूढ़ दार्शनिकता की अभिव्यक्ति है यह काव्य। इसमें निहित साधारणता का उन्मेष सर्वोपरि है। नई पीढ़ी को समृद्ध वैदिक, दर्शन, परम्परा, भाव व विचारों की अवगति देने में जनकवि का यह प्रयास सार्थक हुआ है। बहुरंगी आवरण प्रतीकात्मकता के प्रागट्य में सफल हुआ है, हो भी क्यों? न प्रकाशक ने अति आत्मीयता के साथ इसे प्रकाशित जो किया है।

–सुमन सिंह
से.नि. उप निदेशक शिक्षा, बीकानेर
मो. 9413725779

प्रणय गाथा

लेखक : डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर **प्रकाशक** : अनन्य प्रकाशक, ई-17 पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा, दिल्ली-10032 **संस्करण** : 2014 **पृष्ठ सं.** : 256 **मूल्य** : ₹ 425.00

भक्तिकाल में अनेक ऐसे सन्त हुए जिन्होंने तत्कालीन परिस्थितियों में धर्म के क्षेत्र में तथाकथित धर्माचार्यों के दुश्चरण, धार्मिक क्षेत्रों में बढ़ते पापाचार, अछूतों पर हो रहे अत्याचार, निष्प्रभाव हो रहे शासक वर्ग व उनकी मनमानी, विदेशी आक्रान्ताओं से त्रस्त जनता तथा उनके भय से हो रहे धर्म परिवर्तन आदि पर भक्ति आन्दोलन के माध्यम से समाज में जागृति पैदा की। यह इसलिए भी आवश्यक हो गया था चूंकि उस समय अशिक्षा के कारण समाज में अज्ञान का अधिकाधिक फैलाव था। उसी काल में भक्त शिरोमणी 'मीराँ बाई' ने भी समाज में व्याप्त सामाजिक अवसाद को दूर करने हेतु, धर्म-आधारित भक्ति मार्ग का अनुसरण करते हुए स्वयं के भौतिक सुखों का परित्याग करके समाज को कुप्रथाओं के कुचक्र से मुक्त करवाने हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष किया। समीक्ष्य उपन्यास 'प्रणय गाथा' मीरा की प्रेमाभक्ति एवं सामाजिक उत्थान हेतु किए गए आन्दोलन पर लिखी गई डॉ. राजेन्द्र मोहन भटनागर की श्रेष्ठ कृति है।

'प्रणय गाथा' कुल 21 अध्यायों में विभक्त है। डॉ. भटनागर ने इस उपन्यास को कथा की विधा में प्रस्तुत किया है, जो साहित्य के क्षेत्र में विशिष्टता लिए कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। अध्याय एक से पाँच तक कथावाचक पं. राधेश्याम नामक पात्र हैं तत्पश्चात् अध्याय छः से निरन्तर कथावाचक संस्कृत भाषा एवं व्याकरण के विद्वान् माधवाचार्य हैं। अतः डॉ. भटनागर ने इस ओर बखूबी से ध्यान रखते हुए संस्कृत भाषा के शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग किया है यथा- प्रभविष्णुता, इयत्त, आयास, तितीर्षा, अवगुण्ठन और मेचक आदि। सामान्य रूप से इनका प्रयोग कम होता है, परन्तु पाठकों के हितार्थ उनका यह प्रयास साधुवाद योग्य है।

मीराँ के समाज-सुधार के योगदान को डॉ. भटनागर ने 'प्रणय गाथा' के अध्यायों में बहुत ही उपयुक्त ढंग से प्रस्तुत किया है जो उनके श्रेष्ठ साहित्यकार होने का परिचय भी देता है।

इस उपन्यास में 'नारी' को उसकी स्वतन्त्रता का बोध करवाया है तथा समाज में उसके महत्व को दर्शाया गया है। इस सम्बन्ध में तत्कालीन धर्माचार्यों में नारी के प्रति क्या सोच रही उसको वर्णित करते हुए अध्याय-13 में आचार्य जीव गोस्वामी और मीरां के संवाद को बहुत ही तर्क संगत एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय 18 व 19 में अछूतों पर हुए अत्याचारों एवं उनकी तत्कालीन स्थिति का वर्णन करते हुए मीरां बाई का उनके प्रति क्या दृष्टिकोण रहा, उसे स्पष्ट किया गया है।

डॉ. भटनागर ने आध्यात्मिक ज्ञान के आधार पर वेदान्तिक सिद्धान्त को परिलक्षित करते हुए अध्याय 13 में पगला बाबा और मीराँ के संवाद को मूर्ति पूजा के द्वारा उस 'परम तेज' को आत्मसात करने का विवरण उल्लेखित किया है, जो यथार्थ है।

प्रस्तुत उपन्यास में डॉ. भटनागर ने प्रासंगिक तौर पर मीरां बाई के भजनों का उल्लेख करके 'प्रणय गाथा' को अधिक माधुर्य पूर्ण किया है।

डॉ. भटनागर ने इस कृति को पिताश्री बृजमोहन भटनागर, श्रीमती ब्रजरानी भटनागर एवं सुश्री मुन्नी देवी भटनागर के श्री चरणों में समर्पित किया है। यह लेखक के मनोभावों में निहित श्रद्धा-अध्यात्मज्ञान के भावों को परिलक्षित करता है। 'प्रणय गाथा' भी इन्हीं भावों का प्रतिफल है।

उक्त उपन्यास पठनीय एवं संग्रहणीय है। आवरण सुन्दर व आकर्षक है। मुद्रण सुन्दर व स्पष्ट है। मूल्य उचित है।

–सतीश चन्द्र श्रीमाली
जस्सुसर गेट रोड, धर्म कांटे के पास, बीकानेर
मो. 9414144456

थारी-म्हारी अर उणां री बातां

लेखक : पुष्पलता कश्यप **प्रकाशक** : श्वेता बुक एजेन्सी, 83, शिव कॉलोनी, राजगढ़ रोड, पिलानी **संस्करण** : 2014 **पृष्ठ सं.** : 128 **मूल्य** : ₹ 150.00

पुष्पलता कश्यप का नाम हिन्दी लघुकथा में एक 'Pioneer' के रूप में स्थापित है। उनके हिन्दी लघुकथा संग्रह 'अहसासों के बीच' (1984) को प्रदेश का प्रथम एकल संग्रह होने का ऐतिहासिक गौरव हासिल है। इधर, हाल ही में प्रकाशित उनका बहुप्रतीक्षित राजस्थानी लघुकथा संग्रह 'थारी-म्हारी अर उणां री बातां' (2014) को भी राजस्थानी महिला लेखन के क्षेत्र में पहला एकल संग्रह होने का सम्मान मिल चुका है।

संग्रह में छियत्तर लघुकथाएं संग्रहीत हैं। सभी कथ्य एवं शैलीगत विविधता लिए हैं। आज की समसामयिक समस्याओं और ज्वलंत विषयों पर लेखिका ने कलम चलाई है और खूब चलाई है। 'आरक्षण', 'जुलूस', 'जनता दरबार', 'आतंक रौ घिनौनों उणियारों', 'हीणभाव', 'शिक्षा अर संस्कार', 'कसौटी', 'मुखौटा', 'पइसौ अर प्रेम', 'विकलांगता रौ मोल', 'जातवाद', 'प्रेम प्रसंग अर तेजाब', 'आतमघात रौ मारग', 'भगदड़ अेक हादसौ' आदि अनेक लघुकथाओं को ऐसी ही लघुकथाओं के तौर पर प्रस्तुत की जा सकती हैं।

लेखिका के पास कहने को बहुत कुछ है, विषयों की कमी नहीं है। कोई भी विषय लेखिका की कलम से 'अछूता-अनछुआ' बचा नहीं रह गया है।

संग्रह का नाम ही इतना सार्थक है कि इसे पढ़ते हुए लगता है, आज मनुष्य 'थारी-म्हारी अर उणां री बातां' में ही उलझ कर रह गया है।

यहां यह लोकोक्ति सटीक बैठती है उसे 'पगा बळती नीं दीखै, डूंगर बळती दीखै।' आज के मानव समाज, शासन व समूचे प्रशासनिक तंत्र को सचेत करते कथा-शिल्पी श्रीमती कश्यप ने अपनी लोह-लेखनी का जमकर और बाकमाल इस्तेमाल किया है। नारी-जीवन के विविध एवं बहुआयामी पहलुओं में गहरे झांकने की कोशिश में लेखिका की पैनी नजर और धारदार कलम की नोंक से कोई भी पक्ष अनावृत्त होने से बच नहीं पाया है। निष्कर्षतः उन्होंने इस मर्म पर अंगुली रखी है कि 'नारी ही नारी की दुश्मन है।' संग्रहीत लघुकथाओं की विषय वस्तु इतनी वास्तविक जीवन और समाज की रोजमर्रा की समस्याओं व उलझनों से इतनी बावस्ता है कि इनको पढ़ने से लगता है मानो वे किसी चलचित्र की तरह हमारे रुबरु हो रही है।

लघुकथा 'प्रणय' पुरुष प्रधान परिवार और समाज की ढांचागत व्यवस्था में सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों को संरक्षित रखने की भूमिका के बावजूद, बदलते समय व परिवेश में भी नारी का अबला होने का रूप ही सामने आता है। नारी सशक्तिकरण के तमाम नारे खोखले-थोथे लगते हैं। 'खिमता' में इन्टरव्यू देने जाने वाली युवती की योग्यता जांचने-परखने के स्थान पर नियोक्ता की निगाहें उसके रूप और यौवन पर ज्यादा केन्द्रित दिखती हैं। नौकरी पाने के लिए उसे परिस्थितियों से समझौते पर बाध्य किया जाता है। 'आज रौ अरजुन' समकालीन राजनीति पर कटाक्ष करते करारी चोट करती है। सबको कुर्सी की भूख है, सेवा का भाव किसी में नहीं। 'पटाक्षेप' व्यवस्था के राजनीतिकरण को उद्घाटित करती है। 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' उक्ति आज भी चरित्रार्थ हो रही है। 'कागद री नाव' महंगाई की मार झेलते आम आदमी की दशा का कारुणिक चित्रण है। 'बहू-बेटी' में दोनों को लेकर परिवार में समदृष्टि के अभाव के अक्स खींचती है। 'मजहब' बयान करती है कि भूख-प्यास और खून का मजहब महज इंसानियत है। 'दहशत' में अपराधजन्य भय अपराधी का बराबर पीछा करता है। 'चौपड़ माथै' और 'अकल रौ दुस्मण', 'आ बैल मुझे मार' उक्ति को उजागर करती लघुकथाएं हैं। 'संतुलन' जीवन में संबंधों के बीच संतुलन बनाने के महत्व को रेखांकित करती है। 'कुत्ता फजीती' और 'पाकौ प्रेम' अपने में सार्थक है। 'बात रौ तोड़', 'नेक सलाह' और 'दूरियां' जैसी रचनाएं आज के समय में अपने बच्चों से अपेक्षाएं रखना, अपना मान स्वयं घटाने जैसा है, अपनी माखी खुद उड़ानी पड़ती है। गरीबी में खुद्दारी, ईमानदारी, संघर्षशीलता, प्यार-प्रीत, रिश्तों की अहमियत जैसे उदात्त भाव पनपते हैं, वहीं अमीरी, अहंभाव, संकीर्णता, स्वार्थ इत्यादि दुर्गुणों को भी साथ लाती है। इन विकृतियों से उबरना ही सच्चा 'मालामाल' होना है।

प्रत्येक लघुकथा में एक महती संदेश निहित है। इन लघुकथाओं को पढ़ कर पाठक सुखद एहसास से भर जाता है। उसमें सकारात्मक ऊर्जा, उदात्त भावों-विचारों का उत्सर्जन होता है, उसके सोच को विस्तार मिलता है और अंतस स्फूर्त ताजगी से सराबोर हो रहता है। यही लेखिका के सृजन की विशेषता, उसकी सफलता, उसके लेखन की ताकत या कहें कि उपलब्धि है।

-डॉ. चांदकौर जोशी
15, डालडा बिल्डिंग के सामने,
चौपासनी रोड-6, जोधपुर

आखर री रूह

लेखक : श्रीलाल जोशी **प्रकाशक** : मरुनायक कलासन, बीकानेर **संस्करण** : 2013 **पृ.सं.** : 92 **मूल्य** : ₹ 150.00

'आखर री रूह' कविता-संग्रह श्री लाल जोशी रौ पैलौ कविता-संग्रह है। इण सूं पैली जोशी जी कहानियां लिखता रैया है। कवि-चिंतक नंदकिशोर जी आचार्य श्री लालजी रै लेखन माथै टिप्पणी करतां लिखियौ है कै-''लेखक री रचनावां माथै प्रादेसिकता रौ प्रभाव इण बात रो प्रमाण है कै लेखक कन्नै परिवेश री चोखी समझ है। श्रीलाल जोशी इणी समझ रै बूतै अपणै समै री विसंगतियां सूं वैचारिक-संघर्ष करै, आईज रचनावां री खूबी है।'' जठै (लेखक) परम्परा रौ एक स्तर माथै सम्मान ई करै तो उणरी विसंगतियां माथै वैचारिक आलोचना करण सूं ई नीं चूकै।''

आकृति 'बगत री बात', 'अहिंसा रै आंगणै' अर पाठाफोर रै नांव सूं तीन रूपां में पाठक सामां आवै। 'बगत री बात' में 11 कवितावां, अहिंसा रै आंगणे' 30 कवितावां अर छेकड़ले 'पाठाफोर' खण्ड में दो कवितावां सामिल है।

'बगत री बातं' कवितावां में कवि मानखै री जीयाजूण अर उणरी अबखायां रा चितराम मांडै। इण चितरामां में पड़ावा री संवेदना, मंजिला रा दुखड़ा, तिरसा किसानां री पीड़ावां, आछै बुरै फरक, दुनिया रा दरसाव, समै री मार में फेंटिज्या रूप, भाग अर करम रौ फरक, लौकिक संघर्षां री बातां, कैवतां रौ मरम, जड़ता सांमी संघर्ष री घणी बातां आपरी लोक-भाषा में रची है-आषाढ़ री पड़वा/नागोरण ले उड़ी/ सावणिया लोर/गया बरस/लारली गळी/ भादवो बूढ़ो/हिचका खावतो/दूजै डग झड़ जावै।'' (पृष्ठ-17)

इणी गत चूक कविता में परम्परा अर पौराणिकता माथै ई आंगळी उठावै-

'चूक/मिनख सूं तौ हुवै/देवां सूंनी हुवै/ सावळ देख-/राम आरोपित/कृष्ण शापित/ इन्द्र कलंकित/भीष्म भ्रमित/बता फड़दी/ कितरी करूं लाम्बी/किण सूं नी हुवै/चूक- (पृष्ठ-28)

'अहिंसा रै आंगणै' में ई दुनियावी दरसावां माथै दीठ दिरीजी है। 'बळत' कवि कै वै कै-बके/भुगतणे सूं ठा लागै/फालां रो स्वाद/ सूं/पाणी नीं/बकत फूटै। (पृष्ठ-36) दर्शन अर देसजता। री जड़ां सूं उठी आ विचारणा मिनख जमारै री भुगतियोड़ी यथार्थ री परतां खोलै।

पौराणिक चरित्रां रै आसरै कवि जठै आडंबरां माथै चोट करै, तो इतियासू चरित्रां रै नांव माथै आंगळी ई उठावै।

कवि श्री लाल जोशी री भाषा-शैली दो रूपां में म्हारै सांमी आवै-एक संक्षिप्ती अर दूजी वैचारिक प्रसार शैली कविता संग्रै रा पैला दौन्यू भाग संक्षिप्ती रा रूप सांमी राखै, तो छेकड़लौ 'पाठाफोर' वैचारिक प्रसारणा री कला रौ द्योतक। 'बिटूड़ी 'अर' भावी नीं बगसे अर उणां रै आचरणां माथै आपरी काव्यमय टीप सांमी राखै।

श्री लाल जोशी री भाषा बीकानेरी आंचलिकता रै अैड़ै-गैड़ै आगै बधै। राजस्थानी रै इण आंचलिक अर देसज रूपा री रूपास नै वां सांमी राखी है, जिकी पाठकां रै मन अर हेत हिंवळास नै मिनखपणै रौ भरम बतावै। देसजता री जड़ां माथै अभी अै कवितावां इतिहास, पुराण अर लौकिकता रा रूपक अर बिम्ब विचारणां साथै मानखै तक पूगावै।

-डॉ. आईदान सिंह भाटी
82-बी/47, तिरुपति नगर,
नांदड़ी, जोधपुर-342015

समाचार पत्रों में कतिपय रोचक समाचार/दृष्टांत समय-समय पर छपते रहते हैं। इन्हें पढ़कर हमें विस्मय तो होता ही है, साथ ही हमारा ज्ञानवर्धन भी होता है। ऐसे समाचार/दृष्टांत चतुर्दिक स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित किया जाता है। आप भी ऐसे समाचारों का पुनर्लेखन कर संदर्भ एवं पेपर कटिंग के साथ शिविरा में प्रकाशन हेतु हमें भिजवा सकते हैं।

-वरिष्ठ सम्पादक

चतुर्दिक समाचार

सिगरेट की लत छुड़ाने में खून की जांच मददगार

लंदन। धूम्रपान की आदत से छुटकारा पाने में ब्लड टेस्ट लोगों के लिए मददगार साबित हो सकता है। लांसेट जर्नल में प्रकाशित शोध में कहा गया है कि खून की जांच से यह पता चल सकता है कि इस आदत को छोड़ने के लिए कौन सा तरीका अख्तियार किया जाए। दूसरी ओर दी स्क्रीप रिसर्च इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा टीका बनाया है जो निकोटिन की लत को छुड़ाने में कारगर होगा।

अध्ययनों से पता चलता है कि धूम्रपान छोड़ने वालों में 60 प्रतिशत लोग एक सप्ताह के अंदर ही दोबारा धूम्रपान शुरू कर देते हैं। लेकिन शोधकर्ताओं का कहना है कि एक व्यक्ति निकोटिन के सामने कितनी जल्दी हथियार डाल देता है, मगर इसका पता लग जाए तो सफलता का प्रतिशत बढ़ सकता है।

यूनिवर्सिटी ऑफ पेन्सिल्वेनिया में शोधकर्ताओं ने 1,240 लोगों पर एक शोध किया। उन्होंने हर व्यक्ति के खून की जांच कर ये पता लगाया कि उनके खून में निकोटिन कितनी तेजी से टूटता है। इन लोगों को वारेनिक्लिन नामक गैर निकोटिन युक्त दवा दी गई। शोधकर्ताओं ने पाया कि जिन लोगों के खून में निकोटिन के टूटने की दर सामान्य होती है, उनमें वैरेनिक्लिन दवा के साथ इस लत को छुड़ाने की संभावना ज्यादा होती है।

दवा पहुँचाने के लिए शरीर में गई मशीन

वांशिगटन। अमेरिका में हुए एक प्रयोग के दौरान अतिसूक्ष्म मशीनें चूहे के शरीर के अंदर पहुंची। ऐसा पहली बार हुआ है, जब मशीन किसी जीव के भीतर पहुंची है। यह प्रयोग पूरी तरह सफल रहा और चूहे के शरीर पर इसका कोई दुष्प्रभाव भी नहीं हुआ है। इससे पहले लैब में मौजूद कोशिकाओं पर इस मशीन की जांच की गई थी। शोधकर्ताओं का दावा है कि इस सफल प्रयोग के बाद भविष्य में मानव शरीर के अंदरूनी हिस्सों तक दवाएं पहुंचाई जा सकेंगी। अल्सर और ट्यूमर जैसी बीमारियों के इलाज में यह तकनीक कारगर होगी क्योंकि वहां प्रभावित कोशिका और उत्तक तक दवा पहुंचाने से इलाज बेहतर होता है।

यूं हुआ प्रयोग: पॉलीमर ट्यूब और जिंक से बनी यह मोटर शरीर के भीतर पहुंची। जब ये पेट में मौजूद एसिड के संपर्क में आई तो जिंक ने हाइड्रोजन के बुलबुले छोड़े। इन बुलबुलों ने ही इस मोटर को पेट की सतह तक पहुँचाया। वहां पहुंचकर मोटल घुल जाता है और अपने भीतर के पदार्थ यानी दवा को लक्ष्य तक पहुंचा देता है। सैन डियागो स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के शोधकर्ता लिआंगफैंग जांग और जोसेफ वांग ने यह अध्ययन किया है। जर्नल एसीएस नैनो में यह रिपोर्ट प्रकाशित हुई है।

अपने पैरों पर खड़े होंगे लकवे के मरीज

बर्न। स्विटजरलैंड के शोधकर्ताओं ने बेहद लचीला उपकरण बनाया है, जिसके प्रत्यारोपण के बाद लकवे के शिकार मरीज अपने पैरों पर चल सकेंगे। चूहों पर इस उपकरण का प्रयोग सफल रहा है। शोधकर्ताओं का दावा है कि यह उपकरण मानव पर भी कारगर साबित होगा। कोले पॉलीटेक्निक फेडरल डी लाउसे ने यानी ईपीएफएल के शोधकर्ताओं ने यह खोज की है। शोधकर्ताओं के मुताबिक रीढ़ की चोट में प्रत्यारोपण कई साल से वैज्ञानिकों की खोज का आधार रहा है, लेकिन उपकरणों के कठोर डिजाइन के कारण ये आस पास के उत्तको को चोटिल कर देते थे। इससे ये प्रयोग कामयाब नहीं हो पाए। लेकिन, नया उपकरण काफी छोटा और लचीला है। इससे इसकी कामयाबी की संभावना बढ़ जाती है।

खारी जमीन पर उग सकेगा आलू

एम्सटर्डम। नीदरलैंड के शोधकर्ताओं ने आलू की ऐसी किस्म विकसित की है, जिसे नमक युक्त खारी जमीन पर भी उगाया जा सकेगा। देश के टेक्सवेल इलाके में आलू उगाने का यह प्रयोग किया गया। शोधकर्तो अर्जेन डी वोस के मुताबिक कई देश खेती की जमीन को नमक रहित बनाने में लाखों डॉलर खर्च करते हैं, ताकि इसे फसल पैदा करने के लायक बनाया जा सके। अब प्रयोग से बेकार पड़ी जमीनों में फसल उगाने में मदद मिलेगी। पृथ्वी का 70% हिस्सा समुद्र से घिरा हुआ है। दुनिया में 25 करोड़ लोग नमक प्रभावित जमीन वाले क्षेत्र में रहते हैं। ये जमीन खेती के लिए उपयोगी नहीं मानी जाती। अब शोधकर्ता अन्य फलों और सब्जियों की पैदावार का परीक्षण करने जा रहे हैं।

कैंसर का जादुई इलाज

लंदन। ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने कैंसर की जादुई दवा बनाने का शोध शुरू कर दिया है। ब्रिटेन के स्वास्थ्य विभाग एनएचएस ने इस महत्वाकांक्षी शोध की शुरूआत की घोषणा की है। दावा है कि इस शोध के बाद इस घातक बीमारी का इलाज भी बेहद आसान हो जाएगा।

इस अध्ययन में हजारों स्वयंसेवकों के डीएनए की डीकोडिंग के बाद कैंसर की जांच और इलाज को आसान बनाने वाली कई तकनीकें विकसित होगीं। मुख्य शोधकर्ता मार्क काउलफील्ड के मुताबिक इस शोध में हजारों लोगों के डीएनए को पढ़कर इस बीमारी का इलाज खोजा जाएगा। इसमें महिलाओं, बच्चों और पुरुषों सभी के डीएनए का विश्लेषण किया जायेगा। इसके अलावा स्तन, फेफड़े, ब्लड कैंसर के मरीजों और उनके रिश्तेदारों के नमूने लिए जाएंगे। वहीं कैंसर के मरीजों के दो सैंपल लिए जाएंगे, एक उनके ट्यूमर का दूसरा सेहतमंद उत्तक का। इस तरह नमूनों की संख्या एक लाख हो जाएंगी।

सारे डीएनए की डीकोडिंग के बाद सभी स्वयंसेवकों के स्वास्थ्य रिकॉर्ड से उसकी तुलना की जाएगी। इसके बाद पता चल जाएगा कि कैंसर किन-किन जीन के कारण होता है। इस तरह एक सटीक दवा की खोज आसान हो जाएगी। एनएचएस के निदेशक ब्रूस के ओग के मुताबिक इस खोज से पूरी मानव जाति को फायदा होगा।

बून्दी

रा.उ.मा.वि., तीरथ को ग्रामवासी तीरथ पंचायत समिति तालेडा से विद्यालय को 80 सैट स्टूल व टेबल लोहे के जिसकी लागत 1,00,000 रुपये। **रा.उ.मा.वि., लाखेरी** को श्री अब्दुल वहीद (से.नि.व.अ.) से एक छत पंखा, विद्यालय परिवार से एक माईक सेट, श्री अब्दूल सलाम से 500 रुपये नकद, श्री ओम प्रकाश स्वर्णकार से एक छत पंखा विद्यालय को प्राप्त हुआ।

भरतपुर

रा.उ.मा.वि. समोगर को श्री विनोद राजौरिया (व.अ. अंग्रेजी) से 5 छत पंखे (मय फिटींग) विद्यालय को सप्रेम भेंट। **रा.मा.वि. भवनपुरा तह. रूपवास** में भामाशाह श्री द्वारिकाधीश शर्मा द्वारा 1,11,000 रुपये की लागत माँ सरस्वती की प्रतिमा की स्थापना सफेद पत्थर के मन्दिर का निर्माण करवाया गया। श्री बाबूलाल मीणा द्वारा विद्यालय परिसर में सबमर्सिवल पम्प व पानी पीने के लिए टंकी मय नल फिटिंग का निर्माण करवाया गया जिसकी लागत 31,000 रुपये। **रा.मा.वि., तालफरा (कुम्हेर)** को श्री गजेन्द्र सिंह नेताजी से 12 विद्यालय पोशाक, श्री शेरसिंह आर्य से 15 पोशाक, श्री शिवराम सिंह चाहर से 18 पोशाक, जन सहयोग से 18 पोशाक, श्री वृजपाल सरपंच से 6 स्काउट पोशाक, श्री हरदेव सिंह (आयुर्वेदिक चिकित्सक) से 5, अंग्रेजी शब्द कोष व 5 ड्राइंग बॉक्स, श्री सत्यवीर सिंह द्वारा कक्षा-X व श्री पीतम सिंह द्वारा कक्षा-IX के प्रथम-द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त छात्र छात्राओं को क्रमशः बाल्टी, जग व लोटा प्रदान किये गये। **रा.मा.वि., बझेरा (नौंह-बछामदी) सेवर** पंजाब नेशनल बैंक भरतपुर के सौजन्य से 30 लोहे के स्टूल व मेज सप्रेम भेंट विद्यालय को तथा लागत 30,000 रुपये।

भीलवाड़ा

रा.उ.मा.वि., सोनियाणा (सहाड़ा) को श्री शंकर लाल, राजेश त्रिपाठी द्वारा 14 पंखें एवं 5 अलमारियां लागत 50,000 रुपये, श्री लादूलाल बापना (व.अ.) से नकद 21,000 रुपये, श्री श्रवण कुमार शर्मा से नकद 10,101 रुपये, श्री प्रभुगिरि गोस्वामी से 20 टेबल व 20 स्टूल लागत 22,000 रुपये। **रा.मा.वि. पनोतिया (रायपुर)** को श्री साँवर मल शर्मा द्वारा विद्यालय में छात्रों को शुद्ध एवं ठण्डा पानी पीने के लिए आर.ओ. भेंट लागत मूल्य 30,000 रुपये। **रा.मा.वि., खाखरमाला (रायपुर)** में स्पेक्स इण्डस्ट्रीज केमालिक री सत्यनारायण छीपा निवासी आसीन्द (भीलवाड़ा) द्वारा 380 डम्पर मिट्टी भरवाकर उसे जे.सी.बी. द्वारा समतल कर कार्य पूर्ण कर दिया जिसका खर्चा 3,32,180 रुपये एवं श्री सत्यनारायण छीपा द्वारा विद्यालय में स्काउट हेतु 8,000 रुपये नकद दिये। शिवराज एनटरप्राईजेज के मालिक श्री शिवराज पालीवाल निवासी माल का गुड़ा (नाथद्वारा) द्वारा विद्यालय मैदान का लेवलिंग कार्य ग्रेडर मशीन व रोलर द्वारा लगभग 10 घण्टे मशीने चलाकर लेवलिंग का कार्य पूरा किया खर्चा 21,000 रुपये। **रा.उ.प्रा.वि., दूदला (बनेड़ा)** को श्री नारायण लाल गुर्जर द्वारा एयरकन्डीशनर लागत 31,500 रुपये, श्री किशन सिंह चारण से 03 एयरकूलर लागत 10,500 रुपये।

विद्यालयों में उदारमना दानदाताओं के द्वारा लाखों रूपयों का सहयोग कर निर्माण एवं संसाधन जुटाने के महान कार्य किये जाते रहते हैं। भामाशाह जयन्ती के अवसर पर विभाग भी इन विभूतियों को सम्मानित करता है। इस कॉलम में प्रति माह आदरजोग भामाशाहों के अवदान का वर्णन कर पाठकों तक पहुँचाने का विनम्र प्रयास किया जाता है। आइये, आप भी इसमें सहभागी बनें।

-वरिष्ठ संपादक

हमारे भामाशाह

सवाई माधोपुर

रा.बा.मा.वि., गंगापुर सिटी में हेमेन्द्र गोयल, पार्षद बलवीर सोनी, सुरेन्द्र विजय वर्गीय, भरोसी ठेकेदार, विवेक मीणा एडवोकेट, शिवरतन गुप्ता, मुकेश राजाराम मीना, डॉ. अरविन्द मीणा, रामबाबू शर्मा, सीताराम, सतीश गुप्ता, राजेन्द्र नरूका, सौरभ बरडिया, मुकेश राजाराम मीणा के सहयोग से स्थानीय विद्यालय में रंग रोगन कराया गया साथ ही शौचालय की मरम्मत कराई गई जिसकी लागत 18,000 रुपये, श्री मुकेश राजाराम मीणा व सौरभ वरदिया द्वारा लागत 3000-3000 रुपये की पाठ्य सामग्री बांटी गई। श्रीमती तारा गुप्ता व प्रेम शर्मा द्वारा लगभग 6000 रुपये की गरम जर्शिया छात्राओं को बांटी गई। **रा.उ.प्रा.वि., सीनोली** को श्री अशोक राजमीना ने 2 लकड़ी की टेबिल लागत मूल्य 2,000 रुपये, श्री लखन लाल मीना से एक लकड़ी की टेबिल लागत मूल्य 1,000 रुपये, श्री लखन लाल राम सहाय मीना से एक टेबिल लकड़ी की लागत मूल्य 1000 रुपये, श्री जगदीश प्रसाद प्रजापत से 3 तस्वीर बड़ी लागत 1000 रुपये, श्री हनुमान बैरवा द्वारा फर्श का निर्माण में सहयोग लागत 2,150 रुपये।

सिरोही

रा.उ.मा.वि., आदर्श डूँगरी में लक्ष्मी सीमेन्ट संस्थान जे.के. पुरम द्वारा 2,00,000 रुपये की लागत से चार दिवारी पर काटेदार तार लगवाया गया तथा प्रतियोगिता संचालन में ईनाम व्यवस्था 10,000 रुपये, श्री राम लाल प्रजापत कोजरा, प्रताप सिंह देवडा, जगदीश कुमार शवल द्वारा खेलकूद प्रतियोगिता संचालन हेतु मैदान में अन्य व्यवस्था करवाना लागत 10,000 रुपये, श्री चुन्नीलाल पुरोहित से वाचनालय अलमारी एक लागत 8,000 रुपये, सर्व श्री बाबुराम पुरोहित, वरदी शंकर पुरोहित से बरामदों में जाली लगवाकर बंद करवाना लागत प्रत्येक से 7,000 रुपये, श्रीमती पदमा डाबी से 11,000 रुपये व श्री बाबूभाई बंसल से 14,000 रुपये द्वारा बरामदा में जाली लगवाकर बंद करवाना, जन सहयोग से तीन कक्षा-कक्ष में लोहे के दरवाजा लगवाना लागत 18,000 रुपये, विद्यालय का नामकरण बोर्ड बनाकर नाम लिखवाना लागत-5,000 रुपये, विज्ञान विषय शिक्षण व्यवस्था में जन सहयोग 36,000 रुपये लक्ष्मी सीमेन्ट जे.के. पुरम द्वारा अँग्रेजी विषय शिक्षण व्यवस्था हेतु 36,000 रुपये प्राप्त हुए, श्री प्रताप सिंह देवड़ा से टैबल स्टूल 10 सेट लागत 8500, श्री अचलाराम पुरोहित से विद्यालय रंगरोगन एवं कोटेशन लिखवाना लागत 20,000 रुपये, ग्राम पंचायत आदर्श डूँगरी द्वारा पोषाहार कक्ष का मानदण्डानुसार व्यवस्थित करवाना लागत 190000 रुपये।

-रमेश व्यास

प्रकाशन सहायक (शिविरा)

प्रतिध्वनि

हीरा जनम अमोल है, कौड़ी बदले जाए

मनुष्य जीवन दिव्य सत्ता की एक बहुमूल्य धरोहर है जिसे सौंपते समय उसकी सत्पात्रता पर विश्वास किया जाता है। मनुष्य जन्म लेता है और जन्म लेने के पश्चात सांसारिक मोह माया के जाल में फँसकर, मनुष्य जीवन की गरिमा को बिना समझे, संसार में भौतिक आवश्कताओं, एवं जीवन निर्वाह की जरूरतें पूरी करते हुए इस मिथ्या संसार से चला जाता है। मनुष्य जीवन में उसका एक सीमित दायरा रहता है जिसमें उसका घर-परिवार, नाते-रिश्तेदार, उसका व्यावसायिक कार्य एवं अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर लेना ही वह अपने जीवन का परम ध्येय मानने लगता है। वह यह भूल जाता है कि 'मैं' इस संसार में क्यों आया हूँ। अनेक योनियों में भटक कर कष्ट पाने पर मालिक ने अन्त में मुझे यह अनमोल जीवन प्रदान कर धन्य किया है।

इसका हमें आत्मचिन्तन करना चाहिए। हमें यह सोचना चाहिए कि संसार की सभी चीजें क्षण भंगुर हैं। धन-दौलत, ज्ञान सब परमात्मा की देन है। यह धन, दौलत, अच्छाई, ज्ञान, बड़े पद मिलना एवं अन्य शक्तियाँ एवं योग्यता जो आपको मिली है वह सब लोगों की भलाई के लिए है, ऐसे भाव से अहंकार आपको स्पर्श नहीं कर सकता। मनुष्य का जीवन एक कर्म क्षेत्र है और सच्चाई, ईमानदारी, सहिष्णुता प्रेम व सद्भावना जीवन में फूल की तरह हैं। इन गुणों के धारण करने पर ज्ञान एवं ख्याति में इजाफा हो जाता है तथा उससे दूसरों को भी कुछ न कुछ मिलता रहता है।

कहते हैं कि मनुष्य को गर्भावस्था में अपने जन्म-जन्मान्तरों की स्मृति रहती है। गर्भावस्था की पीड़ा से निजात पाने के लिए वह बार-बार मालिक से प्रार्थना एवं अनुग्रह करता है कि उसे इस नर्क से जल्दी बाहर निकाले। वह संसार में जन्म लेने पर शुभ कार्य करेगा। सत्कर्मो का दायित्व निर्वहन करेगा। वह मालिक का भजन कर मोक्ष की प्राप्ति करेगा ताकि पुन: संसार के आवागमन के चक्र से उसे मुक्ति मिल जाये। जैसे ही वह पैदा होता है, वह रोने लगता है तथा संसार के लोग हँसते एवं खुशियाँ मनाते हुए थालियाँ बजाकर उसका स्वागत करते हैं, परन्तु संसार में पदार्पण करने वाला मनुष्य बार-बार रोता है। वह गर्भावस्था के दौरान मालिक को मन ही मन किए गए सभी वायदे भूल जाता है उसके पूर्व जन्मों एवं स्मृति का तो बाहर आते ही ताला बन्द हो जाता है तथा प्रारब्ध एवं पूर्व जन्मों में किये कर्मो के अनुसार फल के रूप में भुगतान करने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। सन्त कबीर ने इसे कितने मार्मिक ढंग से मानव के लिए सन्देश दिया है।

कबीरा जब हम पैदा हुए जग हँसे हम रोए।
ऐसी करनी कर चलो हम हँसे जग रोए।।

मनुष्य सांसारिक कार्यों की पूर्ति करने को ही अपना उद्देश्य समझ बैठता है। अन्त में ''जैसी करनी वैसी भरनी'' के चक्र में वापिस फँस जाता है तथा मनुष्य जीवन के वास्तविक उद्देश्य की इतिश्री हो जाती है।

मनुष्य का धर्म क्या है, उसे क्या करना चाहिए बस जीवन का सत्य यही है जीवन की अन्तिम गति यहाँ आकर समाप्त हो जाती है।

आया है सो जायेगा राजा, रंक, फकीर।
एक सिंहासन चढ़ चले एक बन्धे जंजीर।।

किसी व्यक्ति की शव यात्रा में जाते समय श्मशान में उसे कुछ समय के लिए ''श्मशानियाँ वैराग्य'' होता है, परन्तु आज के कलयुगी समय में तो यह वैराग्य और दुख मात्र संसार से विदा होने वाले मनुष्य के परिवार के कुछ सदस्यों को ही होता है। वह भी कुछ समय सीमा तक बाकी तो शवयात्रा में शरीक होने वाले व्यक्ति भी अपने सामाजिक कर्तव्य को निभाने के रूप में ही श्मशान में शवयात्रा के साथ जाते हैं और वहाँ भी वे लोग अपने व्यवसाय, राजनीति और आम सांसारिक बातें करने से परहेज नहीं करते ऐसा देखने में आया है।

मित्रों ! मनुष्य जीवन को यदि महान बनाना है तो इस जीवन के समय का श्रेष्ठतम उपयोग करो। वह मनुष्य अपने जीवन के श्रेष्ठ कर्मो से कभी च्युत नहीं होता है, जिसे यह ध्यान रहता है कि उसे एक दिन इस संसार से विदा होना है तथा श्मशान में होने वाला वैराग्य हर पल उसके चिन्तन मनन में रहे तो ''Miles to go before I sleep'' की उक्ति चरितार्थ हो जायेगी। वह अपनी अपूर्णता पूरी करके संसारिक उद्यान को कुशल माली की तरह सींचते-सजाते यह सिद्ध कर देगा कि जीवन का सही ज्ञान क्या है? जीवन रूपी परीक्षा में कैसे उत्तीर्ण हुआ जा सकता है। ऐसे कर्म प्रधान व्यक्ति को ही तृप्ति, तुष्टि, शान्ति के आनन्द प्राप्त होते हैं। ऐसे कर्म को प्रधानता देने वाला मनुष्य हमें बनना होगा तभी हम असंख्यों को अपनी नाव में बैठाकर पार कर सकेंगे तथा ऐसा ही कर्म प्रधान मनुष्य अभिनन्दनीय एवं अनुकरणीय तथा श्रेष्ठ मानव कहलाने योग्य है।

साथियों, मैंने अपनी बात इस ज्ञान-वाणी के सहारे उन लोगों तक पहुँचानी चाही है जो अपने जीवन के उद्देश्य से चाहे वह किसी प्रकार का ही भटक रहे हैं। हमें उस कार्य को सद्भावना, ईमानदारी, भलाई एवं लगन के साथ करना होगा। अकर्मण्यता चाहे वह किसी भी क्षेत्र की क्यों न हो, वह उद्देश्यपरक नहीं हो सकती।

अध्ययन-अध्यापन व्यवसाय एक पवित्र व्यवसाय है जिसमें हमें अपने आत्मचिन्तन, आत्म स्वरूप को पहिचानने का सहजता से अवसर प्राप्त हो सकता है। यदि हम सही तरीके से इस व्यवसाय का निर्वहन करें। शिक्षा के मन्दिर कहलाए जाने वाले विद्यालय में उसी पुरानी गुरु-शिष्य परम्परा का प्रादुर्भाव कर इस पवित्रता की धरोहर को हमें सम्भाल कर रखना पड़ेगा तभी शिक्षा एवं शिक्षण के वास्तविक उद्देश्य को हम प्राप्त कर सकेंगे। मेरा मानना है कि शिक्षक वही बनता है ''जिसने पूर्व जन्मों में अच्छे कर्म किये हों''। अत: हमें तन, मन एवं पूर्ण निष्ठा के साथ विद्यालय में जहाँ कहीं भी हम कार्य कर रहे हैं, अपने कार्य क्षेत्र की प्रामाणिकता सिद्ध करनी होगी। यहाँ मैथिलीशरण गुप्त की ये पंक्तियाँ अनुकरणीय हैं :

नर हो न निराश करो मन को
कुछ काम करो-कुछ काम करो।
जग में रहकर निज नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो न निराश करो मन को

अध्ययन और अध्यापन शब्द धर्म से जुड़े शब्द हैं धर्म के मार्ग में अध्यापन भी होता है और अध्ययन भी होता है अत: यह व्यवसाय इस मायने में धर्म की श्रेणी में भी आ जाता है।

यह धर्म अध्ययन-अध्यापन का धर्म है और इस धर्म रूपी गंगा में मालिक को साक्षी मानकर हमें स्नान करना होगा तभी हमारे व्यावसायिक कार्य की उपयोगिता सिद्ध होगी। अन्त में मैं कहूँगा कि हम जीवनपर्यन्त जीवन के सभी कार्य क्षेत्रों में, ''हमें मालिक देख रहा है।'' यह सोचते हुए कार्य करें तभी इहलोक एवं परलोक में कुचक्र रचती एवं पतन पराभव के गर्त में जाने से बच पायेंगे और हमें मनुष्य जीवन का श्रेष्ठ सौभाग्य प्राप्त हो सकेगा। प्रयत्न रहे कि ऐसी विरासत छोड़कर संसार से विदा होवे ताकि आने वाली पीढ़ियां इसका रसास्वादन करती रहे।

-सन्तोष कुमार, व.सं.
principalsk55@gmail.com

शिविरा पत्रिका (मासिक) : मार्च 2015 / निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान बीकानेर द्वारा प्रकाशित एवं प्रसारित तथा हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302 004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित। © वरिष्ठ सम्पादक : सन्तोष कुमार, प्रकाशन हेतु सामग्री चयन के लिए उत्तरदायी।

शिविरा

चित्र समाचार

निदेशालय परिसर में गणतन्त्र दिवस समारोह-2015

बीकानेर

श्री सुवालाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान द्वारा ध्वजारोहण।

श्री सुवालाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान द्वारा उद्बोधन।

श्री बी. एल. मीणा, निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान द्वारा उद्बोधन।

गणतन्त्र दिवस समारोह में उपस्थित कर्मचारी एवं अधिकारीगण।

गणतन्त्र दिवस समारोह में सम्मानित कर्मचारियों के साथ अधिकारीगण।

हमारी सांस्कृतिक धरोहर

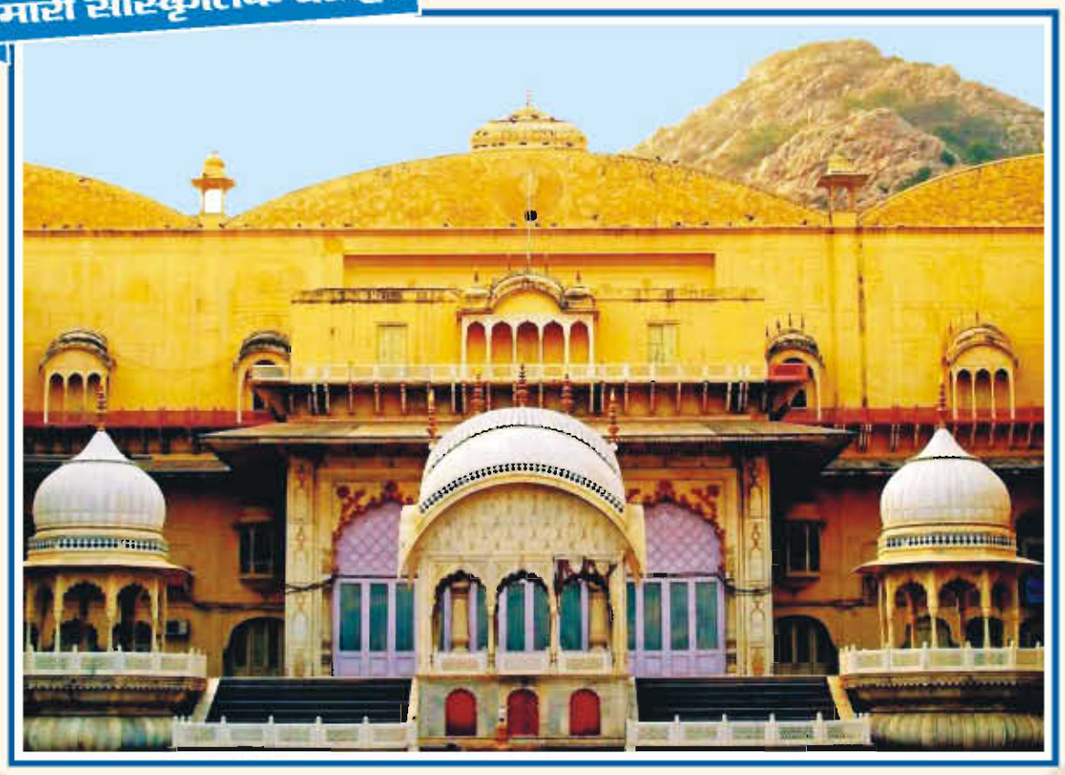

सिटी पैलेस, अलवर

सिटी पैलेस अकबर राज-परिवार का महल है जो संगमरमर की तक्षण कला के लिए जाना जाता है। भित्ति चित्रों के प्राकृतिक रंग पर्यटकों का मन मोह लेते है। सिटी पैलेस विनय विलास महल के रूप में भी जाना जाता है यह पैलेस अलवर शहर के हृदय में स्थित एक अद्भुत संरचना है। 17वीं सदी के अन्त में निर्मित, सिटी पैलेस राजपूत-इस्लामी वास्तुकला का एक अच्छा उदाहरण है। सिटी पैलेस अपनी विरासत और पुरातत्त्व के लिए जाना जाता है। पैलेस स्थित संग्रहलाय में पैलेस के समृद्ध इतिहास को सुरक्षित रखा गया है।

संग्रहालय के अलावा इसमें एक सुनहरा दरबार हॉल है, जो इसकी हाईलाइटिंग सुविधाओं हेतु विख्यात है। सिटी पैलेस के पश्चिम में सागर पैलेस स्थित है जिसका निर्माण बख्तावर सिंह ने 1815 में किमन कुण्ड से आने वाले जल के भराव हेतु करवाया था। यह बलुआ पत्थरों की नायाब पच्चीकारी छतरियों के लिए जाना जाता है।

सौजन्य : निशा सिंह, टावर वाली गली, सादुलशहर, श्रीगंगानगर